सुबह सवेरे

A Daily News Magazine
भोपाल
शुक्रवार, 29 मई, 2026

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 266, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

04 - युद्ध से असुरक्षित आधी आबादी की चिंता

05 - वीआईपी सुरक्षाः मंत्री को लोगों की फटकार

06 - देश के हित में है शरद पवार का सुझाव

07 - सूख गए थे गांव के हैंडपंप, पानी के लिए भटके ग्रामीण, अब...

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

क्वाड विदेशी मंत्रियों की बैठक के व्यापक कूटनीतिक मायने

कमलेश पांडे

भारत-अमेरिका संबंधों में नई ऊर्जा हाल के समय में टैरिफ और रणनीतिक मतभेदों के बावजूद बैठक ने दिखाया कि क्वाड ढांचा अभी भी मजबूत है। इससे संकेत मिलता है कि भारत और अमेरिका दोनों चीन को लेकर दीर्घकालिक सहयोग चाहते हैं। Quad (क्वाड) व्यक्तिगत नेताओं से ऊपर उठकर संस्थागत रूप ले रहा है।

भारत की राजधानी नई दिल्ली में हुई क्वाड विदेश मंत्रियों की बैठक सिर्फ एक कूटनीतिक औपचारिकता नहीं, बल्कि बदलती वैश्विक शक्ति-संतुलन की दिशा तय करने वाला महत्वपूर्ण मंच बनकर उभरी है। इसमें भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया ने इंडो-पैसिफिक, समुद्री सुरक्षा, सप्लाई चेन, ऊर्जा और चीन की बढ़ती आक्रामकता जैसे मुद्दों पर साझा रणनीति बनाई।

देखा जाए तो नई दिल्ली की यह बहुप्रतीक्षित क्वाड (Quad) बैठक यह बताती है कि आने वाले दशक में वैश्विक राजनीति का केंद्र यूरोप से हटकर इंडो-पैसिफिक बनने जा रहा है, और इस नई भू-राजनीतिक व्यवस्था में भारत केवल सहभागी नहीं, बल्कि निर्णायक शक्ति के रूप में उभर रहा है। इसका सारा श्रेय मोदी प्रशासन और आरएसएस के प्रति समर्पित बुद्धिजीवियों को जाता है, जिन्होंने अपनी सधी हुई रणनीति का वैश्विक कमाल दिखा दिया।

आइए सबसे पहले समझते हैं कि क्वाड क्या है? तो यह जान लीजिए कि Quadrilateral Security Dialogue यानी Quad चार लोकतांत्रिक देशों- भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया- का रणनीतिक समूह है, जिसका मुख्य उद्देश्य 'फ्री एंड ओपन इंडो-पैसिफिक' को सुरक्षित रखना है।

क्वाड देशों के विदेशमंत्रियों की नई दिल्ली बैठक से निकले राष्ट्रीय मायने हैं:-पहला, भारत की वैश्विक भूमिका मजबूतः दिल्ली में बैठक आयोजित होना यह दिखाता है कि India अब इंडो-पैसिफिक राजनीति का केंद्रीय खिलाड़ी बन चुका है। भारत, अमेरिका और पश्चिम के लिए संतुलित साझेदार है। वैश्विक दक्षिण (Global South) और पश्चिमी शक्तियों के बीच 'सेतु' की भूमिका निभा रहा है। चीन के मुकाबले लोकतांत्रिक विकल्प के रूप में उभर रहा है।

दूसरा, रक्षा और समुद्री सुरक्षा को लाभः Quad की समुद्री निगरानी पहल भारत के लिए महत्वपूर्ण है। इससे हिंद महासागर में भारतीय निगरानी क्षमता बढ़ेगी। चीन की नौसैनिक गतिविधियों पर बेहतर नजर रखी जा सकेगी। भारतीय नौसेना को तकनीकी सहयोग मिलेगा।

तीसरा, आर्थिक और तकनीकी अवसरः क्रिटिकल मिनरल्स, सेमीकंडक्टर और ऊर्जा सहयोग से भारत कोः नई निवेश संभावनाएँ, सप्लाई चेन हब बनने का मौका, मैन्युफैक्चरिंग विस्तार, और हाई-टेक उद्योगों में बढ़त मिल सकती है।

चौथा, आतंकवाद पर भारत की चिंता को समर्थनः बैठक में आतंकवाद और सीमा पार आतंकवाद की निंदा की गई, जिसमें पहलगाम हमले का भी उल्लेख हुआ। यह भारत के लिए महत्वपूर्ण कूटनीतिक समर्थन है, विशेषकर पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद के मुद्दे पर, और वैश्विक मंचों पर भारत की सुरक्षा चिंताओं को वैधता देने में।

पांचवां, भारत-अमेरिका संबंधों में नई ऊर्जाः हाल के समय में टैरिफ और रणनीतिक मतभेदों के बावजूद बैठक ने दिखाया कि Quad ढांचा अभी भी मजबूत है। इससे संकेत मिलता है कि भारत और अमेरिका दोनों चीन को लेकर दीर्घकालिक सहयोग चाहते हैं। Quad व्यक्तिगत नेताओं से ऊपर उठकर संस्थागत रूप ले रहा है।

वहीं, क्वाड देशों के विदेशमंत्रियों की हालिया हुई बैठक के अंतरराष्ट्रीय मायने हैं- पहला, चीन को सामरिक संदेशः बैठक का सबसे बड़ा संकेत चीन के लिए था। संयुक्त बयान में दक्षिण चीन सागर और पूर्वी चीन सागर में 'बलपूर्वक यथास्थिति बदलने' पर चिंता जताई गई। इसका अर्थ हुआ कि चीन की समुद्री सैन्य गतिविधियों पर निगरानी बढ़ेगी। इंडो-पैसिफिक में शक्ति संतुलन बनाने की कोशिश तेज होगी। Quad अब केवल 'संवाद मंच' नहीं बल्कि 'रणनीतिक समन्वय मंच' बनता दिख रहा है।

दूसरा, इंडो-पैसिफिक में नई भू-राजनीतिक धुरीः Quad देशों ने समुद्री निगरानी, पोर्ट इंफ्रास्ट्रक्चर और ऊर्जा सुरक्षा पर नई पहलें शुरू कीं। फिजी में संयुक्त पोर्ट परियोजना इसकी मिसाल है। इससे प्रशांत द्वीपीय देशों में चीन का प्रभाव संतुलित करने की कोशिश होगी। हिंद महासागर से प्रशांत महासागर तक नई रणनीतिक कनेक्टिविटी बनेगी। छोटे देशों को 'चीनी कर्ज कूटनीति' का विकल्प मिलेगा।

तीसरा, सप्लाई चेन और क्रिटिकल मिनरल्स की राजनीति Quad ने क्रिटिकल मिनरल्स और ऊर्जा सुरक्षा पर नया फ्रेमवर्क बनाया। यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकिः चीन रेयर अर्थ मिनरल्स में वैश्विक प्रभुत्व रखता है। सेमीकंडक्टर, रक्षा और AI उद्योग इन खनिजों पर निर्भर हैं। भारत, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका मिलकर चीन-निर्भरता कम करना चाहते हैं।

चौथा, पश्चिम एशिया संकट और समुद्री व्यापारः बैठक में स्ट्रेट ऑफ होर्मुज और रेड सी की सुरक्षा पर विशेष चर्चा हुई। इसके मायने ये हुए कि ईरान-इजरायल तनाव का असर वैश्विक व्यापार पर पड़ रहा है। क्वाड (Quad) वैश्विक समुद्री व्यापार मार्गों की सुरक्षा में बड़ी भूमिका निभाना चाहता है। ऊर्जा आपूर्ति और तेल कीमतों को स्थिर रखने की कोशिश है।

पांचवां, 'एशियाई नैटो' की बहस तेजः चीन लगातार क्वाड (Quad) को 'ब्लॉक राजनीति' कहता रहा है। हालांकि क्वाड (Quad) खुद को नैटो (NATO) नहीं मानता, लेकिन सैन्य सहयोग बढ़ रहा है। समुद्री निगरानी और तकनीकी साझेदारी गहरी हो रही है। साझा सुरक्षा सोच विकसित हो रही है।

सच कहूं तो नई दिल्ली की यह क्वाड (Quad) बैठक बताती है कि आने वाले दशक में वैश्विक राजनीति का केंद्र यूरोप से हटकर इंडो-पैसिफिक बनने जा रहा है। और इस नई भू-राजनीतिक व्यवस्था में भारत केवल सहभागी नहीं, बल्कि निर्णायक शक्ति के रूप में उभर रहा है।

उर्दू अदब की दुनिया के मशहूर और मारुफ शायर

बशीर बद्र का 91 साल की उम्र में इंतकाल

● उनकी शायरी हमेशा दिलों में ज़िंदा रहेगी

भोपाल (नप्र)।

उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो,
न जाने किस गली में ज़िंदगी की शाम हो जाए।

उर्दू ग़ज़ल के शहंशाह डॉ. बशीर बद्र (91) नहीं रहे। उन्होंने गुरुवार दोपहर 12.15 बजे भोपाल में फानी दुनिया को अलविदा कहा। उर्दू अदब की रूह में समाए बशीर बद्र तक़रीबन 14 बरस डिमेंशिया की गिरफ़्त में रहे, जिससे उनकी याददाश्त कमजोर होती चली गई, मगर उनके शेर आज भी दिलों में धड़कते हैं। उनको आज शाम 7.30 बजे भोपाल टॉकीज के पास कब्रिस्तान में सुपुर्दे खाक किया जाएगा। उनकी पत्नी, डॉ. राहत बद्र, जब उनके शेर गुनगुनातीं, तो बशीर साहब के चेहरे पर शादाबी की हल्की सी झलक उभर आती थी। कभी-कभी वे खुद भी मिसरा पूरा करने लगते। एक वक्त था, जब उनके बिना मुशायरे अधूरे माने जाते थे। उनकी मौजूदगी महफ़िल की कामयाबी की ज़मानत हुआ करती थी। जब भी उन्हें मुशायरे की याद आती थी तो इरशाद, इरशाद कहने लगते थे।

शायरी में दर्द, मोहब्बत और ज़िंदगी की सच्चाई

डॉ. बद्र की शायरी में मोहब्बत का ख़ुलूस, ज़िंदगी की तल्ख़ी, शहरी भाग-दौड़ की बेचैनी और हिंदुस्तानी मिट्टी की ख़ुशबू मिलती है। उनके शेर सड़क से लेकर संसद तक गूंजते रहे हैं। उनकी ग़ज़लों ने देश-दुनिया में लोगों के दिलों को छुआ और ज़ुबानों पर चस्पा हो गए।

कुछ तो मजबूरियाँ रही होंगी
यूँ कोई बेवफ़ा नहीं होता।

यह महज़ एक शेर नहीं, बल्कि एक एहसास है जो हर धोखा खाए दिल की आवाज़ बन गया।

मेरी हंसी से उदासी के फूल खिलते हैं
मैं सबके साथ हूँ, लेकिन जुदा सा लगता हूँ।

यही फ़न उन्हें सबसे अलग बनाता है। उन्होंने उर्दू ग़ज़ल को आम आदमी की ज़ुबान बख़्शी, उसे नए लहजे से नवाज़ा और नए अहसास दिए।

डॉ. बशीर ने 500 से ज्यादा मुशायरे किए थे। उन्होंने भारत के अलावा अमेरिका, पाकिस्तान और ब्रिटेन में भी मुशायरों में शिरकत की।

वो शेर जिसने बशीर बद्र को मक़बूल कर दिया

उत्तरप्रदेश के कानपुर में 15 फरवरी 1935 को पैदा हुए बशीर बद्र ने कम उम्र में ही शायरी शुरू कर दी थी। मगर मक़बूलियत मिली इस शेर से-

उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो
न जाने किस गली में ज़िंदगी की शाम हो जाए।

1960 के दशक में इस शेर को मशहूर अदाकारा मीना कुमारी ने अपने हाथों से लिखकर एक मैगज़ीन को दिया। बस, फिर क्या था! बशीर बद्र की शोहरत का सफ़र तेज़ हो गया।

'तंदूर' की तरह तप रहा देश

● पारा 47 डिग्री के पार, घर से निकलना हुआ मुश्किल

● मौसम विभाग ने 'भीषण लू' का रेड अलर्ट जारी किया

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत एक बार फिर भीषण लू की चपेट में है और अत्यधिक तापमान के कारण गर्मी से जुड़ी बीमारियों और मौतों का खतरा तेजी से बढ़ गया है। मध्य और उत्तर-पश्चिम भारत के बड़े हिस्सों में इस समय लू से लेकर भीषण लू जैसी स्थितियां बनी हुई हैं। कई इलाकों में तापमान 47 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच चुका है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग ने चेतावनी दी है कि अगले कुछ दिनों तक यही स्थिति बनी रह सकती है, जिससे हीटस्ट्रोक और गर्मी से जुड़ी दूसरी गंभीर बीमारियों का खतरा और बढ़ जाएगा। यह चेतावनी ऐसे समय में आई है, जब देश में लू लगने से होने वाली मौतों में भारी बढ़ोतरी दर्ज की गई है।

साल 2024 में लू से 1,832 लोगों की मौत हुई थी

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों के मुताबिक, भारत में साल 2024 के दौरान लू लगने से 1,832 लोगों की मौत हुई। यह पिछले दो दशकों में दर्ज सबसे ज्यादा वार्षिक मौतों में से एक है। इससे पहले 2015 में अत्यधिक गर्मी के कारण 1,908 लोगों की जान गई थी।

30 मई के बाद तापमान में आएगी धीरे-धीरे गिरावट

वहीं, इन दोनों आयु वर्गों में महिलाओं की मौतें काफी कम दर्ज की गईं। विशेषज्ञ इसकी सबसे बड़ी वजह बाहरी संपर्क और कामकाजी परिस्थितियों को मानते हैं। इन आयु वर्गों के पुरुषों के बाहर काम करने, धूप में ज्यादा समय बिताने और शारीरिक मेहनत वाले कामों में लगे होने की संभावना अधिक होती है। यही कारण है कि भीषण गर्मी के दौरान उनके प्रभावित होने का खतरा भी ज्यादा रहता है। यह अंतर कम उम्र के युवाओं में भी साफ दिखाई देता है। 18 से 29 साल के आयु वर्ग में 152 पुरुषों की मौत दर्ज की गई, जबकि महिलाओं की मौतों का आंकड़ा केवल 23 रहा। इससे साफ संकेत मिलता है कि बाहर के वातावरण में लंबे समय तक रहना और शारीरिक सक्रियता का स्तर, गर्मी से होने वाले खतरों में बड़ी भूमिका निभा रहे हैं।

नायक स्टाइल में दिखे सीएम, काफिला छोड़ कॉमन मैन की तरह बस का सफर, मंत्री-सांसद को पीछे बैठाकर पहुंचे उज्जैन

भोपाल (नप्र)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सादगी, मितव्ययिता और सुशासन के मंत्र को आत्मसात करते हुए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव प्रदेश में एक नई कार्य संस्कृति स्थापित कर रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव द्वारा प्रशासनिक खर्चों में संयम और संसाधनों के संतुलित उपयोग को लगातार प्राथमिकता दी जा रही है।
इसी क्रम में मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने आज एक प्रेरणादायी उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने काफिले में वाहनों की संख्या सीमित रखते हुए जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों के साथ एक ही बस में सवार होकर इंदौर से उज्जैन तक की यात्रा की। इस दौरान सुरक्षा और आवश्यक व्यवस्था के लिये केवल तीन अन्य वाहन ही साथ रहे।
मुख्यमंत्री डॉ. यादव की यह पहल सादगीपूर्ण प्रशासन, ईंधन बचत और अनावश्यक खर्चों में कमी की दिशा में एक सकारात्मक संदेश है। यात्रा के दौरान मुख्यमंत्री डॉ यादव ने जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों से जल गंगा संवर्धन अभियान सहित विभिन्न विकास कार्यों एवं जनहित योजनाओं पर चर्चा भी की।

गज़ल

अलविदा बशीर बद्र साहब

आँखों में रहा दिल में उतर कर नहीं देखा
कश्ती के मुसाफ़िर ने समुंदर नहीं देखा।

बे-वक़्त अगर जाऊँगा सब चौंक पड़ेंगे
इक उम्र हुई दिन में कभी घर नहीं देखा।

जिस दिन से चला हूँ मिरी मंज़िल पे नज़र है
आँखों ने कभी मील का पत्थर नहीं देखा।

ये फूल मुझे कोई विरासत में मिले हैं
तुम ने मिरा काँटों भरा बिस्तर नहीं देखा।

यारों की मोहब्बत का यक़ीं कर लिया मैं ने
फूलों में छुपाया हुआ ख़ंजर नहीं देखा।

महबूब का घर हो कि बुज़ुर्गों की ज़मीनें
जो छोड़ दिया फिर उसे मुड़ कर नहीं देखा।

पत्थर मुझे कहता है मिरा चाहने वाला
मैं मोम हूँ उस ने मुझे छू कर नहीं देखा।

... इस गली में जिंदगी की शाम हो गई!

पूर्ण विराम : बशीर बद्र

डॉ. अभय बेडेकर

(लेखक प्रशासनिक अधिकारी हैं)

उर्दू अदब की अज़ीम शख्सियत डॉ. बशीर बद्र समकालीन उर्दू-हिंदी शायरी का सबसे बड़ा नाम है और आज 28 मई की ये ईद उल जुहा मुझे ताजिंदगी याद रहेगी। क्योंकि, आज बशीर साहब ने इस फ़ानी दुनिया से रुखसत ले ली। बशीर साहब मेरे साथ सभी के पसंदीदा शायर रहे हैं। मैं अपने आप को इसलिए खुशनसीब मानता हूँ कि उनकी तरह मैं भी भोपाल में रहता हूँ। 15 फ़रवरी को कानपुर में जन्मे बशीर साहब ने उर्दू शायरी में डॉक्टरेट की और मूलतः वे मुहब्बत के शायर रहे।

'उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो,
न जाने किस गली में ज़िंदगी की शाम हो जाए।'

ये वो शेर है जो बशीर साहब ने अपनी शायरी के शुरुआती दौर में कहा था। हुआ यूं कि बशीर बद्र एक मुशायरे में गए थे। बद्र उस समय जवां थे और मुशायरे में पुराने जमे हुए और कई बड़े शायर भी थे। सो बद्र को दूसरे या तीसरे नंबर पर ग़ज़ल पढ़ने बुलाया गया। नौसिखिये (जैसा मुशायरे वालों ने समझा था) बद्र ने जाकर जैसे ही 'उजाले अपनी यादों के ..' शेर पढ़ा मुशायरे में सन्नाटा खिंच गया। सभी शायर अवाक रह गए और मुशायरा ख़त्म हो गया। इस शेर के बाद किसी शायर की हिम्मत ही नहीं हुई की शेर पढ़े। बताते हैं कि इंदिरा गांधी ने भी ये शेर अपनी दोस्त को चिट्ठी में लिखा था।

बशीर मतलब आम आदमी का शायर। उर्दू अदब की पूरी दुनिया और हिंदुस्तान का आम आदमी भी बशीर साहब के शेर पढ़ता है और क़ायल है। संसद से लेकर मुशायरों तक और यूनिवर्सिटी के कोर्सेज़ से लेकर ट्रकों के पीछे लगी प्लेट पर भी बशीर साहब को पढ़ा जा सकता है। बशीर साहब का ये शेर किताबों से ज़्यादा ट्रक के पीछे पढ़ा जा सकता है - 'मुझसे बिछड़ के खुश रहते हो, मेरी तरह तुम भी झूठे हो।' माना जाता है कि जिस शायर के शेर लोग आम बातचीत में बोलने लगे, वो शेर ट्रकों के पीछे लिखे मिलने लगें तो समझो वो शायर अमर हो गया। किसी कॉलेज का कोई विदाई समारोह ऐसा नहीं हो सकता जिसमें ये शेर ना पढ़ा जाए।

चरागों को आँखों में महफूज रखना, बड़ी दूर तक रात ही रात होगी, मुसाफिर हैं हम भी मुसाफ़िर हो तुम भी, फिर किसी मोड़ पर मुलाक़ात होगी।

ग़ालिब और मीर के भी वो ही शेर आज तक पढ़े और सुने जाते हैं जो आम बोल चाल की भाषा में हैं और लोगों को समझ आते हैं। इसीलिए अहमद फ़राज़, फ़ैज़ अहमद फ़ैज़, राहत इंदौरी, गुलजार और बशीर बद्र साहब बहुत ज़्यादा पढ़े जाने वाले शायर हैं। पद्मश्री से सम्मानित बद्र साहब ने आम आदमी पर और मुहब्बत पर शेर लिखे हैं, पर उनके शेर ज़ुल्फ़िक़ार अली भुट्टो से लेकर इंदिरा गांधी और अन्य बड़े बड़े लीडरान में भी मक़बूल रहे हैं। शिमला समझौते (1972) के समय पाकिस्तान के प्रधानमंत्री ज़ुल्फिकार अली भुट्टो ने इंदिरा जी से कहा था - 'दुश्मनी जमकर करो मगर ये गुंजाइश रहे, जब कभी हम दोस्त हो जाएँ तो शर्मिंदा न हों!' पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जब लाहौर बस ले के गए, उस बस के पीछे एक शेर लिखा था-

दुश्मनी का सफ़र एक कदम दो कदम,
तुम भी थक जाओगे हम भी थक जाएंगे!

ये शेर भी बशीर बद्र साहब ने ही कहा था, जो खुद इस बस के मुसाफिर थे। इस बस यात्रा के बाद कारगिल हुआ और इसके बाद जब मुशर्रफ़ दिल्ली आए तो वाजपेयी साहब से उन्होंने सिर्फ हाथ मिलाया, गले नहीं मिले। उसी शाम एक मुशायरा भी रखा गया था और मुशर्रफ़ को ये शेर सुनाने वाले बशीर साहब ही थे - 'मुहब्बतों में दिखावे की दोस्ती न मिला, अगर गले नहीं मिलता तो हाथ भी न मिला!' फिर आगरा में जब दोनों मुल्कों के प्रधान एक बार फिर सुलह की कोशिश करने को मिले तो वहां मुशायरे में दोनों को आगाह करते हुए बशीर साहब ने कहा था - 'ये सोच लो अब आखिरी साया है मोहब्बत, इस दर से उठोगे तो कोई दर न मिलेगा!'

बशीर साहब ने दंगों पर भी और आवाम की तकलीफों पर भी शेर पढ़े - 'लोग टूट जाते हैं एक घर बनाने में, तुम तरस नही खाते बस्तियाँ जलाने में।' जिसे हम आज 'कीप डिस्टेंस' कहते हैं उसे बद्र साहब ने कितनी खूबसूरती से कहा है - 'कोई हाथ भी न मिलाएगा, जो गले मिलोगे तपाक से, ये नए मिज़ाज का शहर है, ज़रा फ़ासले से मिला करो।'

जितने शेर और ग़ज़लें बशीर साहब की हम पढ़ते जाते हैं, उनके दीवाने होते जाते हैं। बशीर बद्र साहब ने कहा है कि 'ग़ज़ल चाँदनी की उँगलियों से फूल की पत्तियों पर शबनम की कहानियाँ लिखने का फ़न है!' बद्र साहब ने आख़िरत में तबीयत खराब होने के कारण लिखना बहुत कम कर दिया था, पर उनके लाखों कद्रदान चाहते थे कि वो शेर लिखते रहें। बद्र साहब के लिखे दो सबसे ज्यादा पसंदीदा शेर हैं -

मुझे ख़ुदा ने ग़ज़ल का दयार बक्शा है,
ये सल्तनत मैं मोहब्बत के नाम करता हूँ।
सर झुकाओगे तो पत्थर देवता हो जाएगा
इतना मत चाहो उसे वो बेवफ़ा हो जाएगा!

15 फ़रवरी को असदुल्लाह खाँ ग़ालिब का निधन हुआ था और उसी दिन बशीर साहब दुनिया में आए थे और आज जब बशीर साहब नहीं रहे तो ईद का दिन है, कुर्बानी का दिन है। वो बड़े शायर थे जिन्होंने बहुत छोटे अल्फ़ाज़ में अपनी बड़ी बातें कहीं। उनको चाहने वाले से प्रार्थना करेंगे कि आप जहाँ भी रहें शायरी करते रहें। क्योंकि, बशीर साहब भले से दुनिया से रुखसत हो गए, पर अपने शेरों में वे हमेशा जिंदा रहेंगे!

बशीर बद्र के बारे में कहा जाता है कि वे आम आदमी के शायर थे। इसका सबसे बड़ा सुबूत है कि उनके अधिकांश शेर ट्रकों के पीछे लिखे मिलते हैं। किसी कॉलेज का कोई कार्यक्रम बशीर साहब के किसी शेर के बिना पूरा नहीं होता! अटल बिहारी वाजपेयी के कार्यकाल में बस से जो शख्सियतें पाकिस्तान गई थी, उनमें बशीर बद्र भी थे। लेकिन, वे सारे प्रसंग सिर्फ यादों में ही बसे रह गए। उनका एक लोकप्रिय शेर है 'उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो, न जाने किस गली में ज़िंदगी की शाम हो जाए।' ... तो अब बशीर साहब की शाम इस गली में हो गई!

भोपाल का तापमान

अधिकतम 20 °c | न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शुक्रवार, 29 मई 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

भोपाल में 7,871 पेड़ों को श्रद्धांजलि देने जुटेंगे लोग

अयोध्या बायपास को 10 लेन बनाने के लिए उजड़ेगी हरियाली, एनजीटी दे चुका है परमिशन

भोपाल (नप्र)। भोपाल के 10 लेन अयोध्या बायपास प्रोजेक्ट में कटने जा रहे कुल 7,871 पेड़ों को श्रद्धांजलि लोग जुटेंगे। इस दौरान वे फूल अर्पित करके पेड़ों को कटने का मौन रूप से विरोध जताएंगे। बता दें कि पिछले सप्ताह नेशनल ग्रीन ट्रब्नल ने अयोध्या बायपास प्रोजेक्ट को हरी झंडी दे दी थी। आदेश मिलते ही हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एनएचएआई) के जरिए ठेकेदार ने पेड़ काटने शुरू कर दिए। अब तक सैकड़ों पेड़ काटे जा चुके हैं।

इसके चलते अब पर्यावरणविद् बड़े स्तर पर आंदोलन करने की रणनीति बना रहे हैं। शुरुआत गुरुवार से होगी। पर्यावरणविद् उमाशंकर तिवारी ने बताया कि हरियाली बचाने के लिए कई दिन तक आंदोलन किया था। अनुमति मिलने के बाद फिर से पेड़ काटे जाने लगे हैं। इसे लेकर फिर से अपना पक्ष रखेंगे। ताकि, सालों पुराने पेड़ बचाए जा सके।

मशीनों से हुई पेड़ों की कटाई- बता दें कि रत्नागिरि तिराहे से आसाराम तिराहे तक सड़क किनारे कई जगहों पर मशीनों से पेड़ काटे जा रहे हैं। अधिकांश पेड़ काटे जा चुके हैं। कुल 836 करोड़ रुपए के इस प्रोजेक्ट के तहत अयोध्या बायपास को सर्विस रोड सहित 10 लेन बनाया जाना है। इसके लिए कुल 7,871 पेड़ों की कटाई प्रस्तावित है। हालांकि, पर्यावरणविद् का मानना है कि कागजों में पेड़ों की संख्या कम बताई गई है, लेकिन हकीकत में यह 10 हजार से अधिक है।

एनजीटी ने इन शर्तों के साथ दी है अनुमति- एनजीटी ने दो दिन पहले पर्यावरणीय शर्तों के साथ प्रोजेक्ट को आगे बढ़ाने की अनुमति दी थी। जिसके बाद अब जमीनी स्तर पर कार्रवाई तेज हो गई है। पेड़ों की कटाई के साथ ही पूरे बायपास पर निर्माण गतिविधियां भी बढ़ गई हैं। सड़क के कई हिस्सों में बैरिकेड लगाकर लेन संकरी कर दी गई है। रत्नागिरि तिराहे से आसाराम तिराहे तक लगभग हर 100 से 200 मीटर पर डायवर्जन बनाए गए हैं। इससे इस मार्ग से रोज गुजरने वाले हजारों वाहन चालकों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

भोपाल से ऐसे दिल्ली पहुंचा मामला

एनएचएआई भोपाल के अयोध्या बायपास को आसाराम चौराहा से रत्नागिरि तिराहे तक 836.91 करोड़ रुपए से 10 लेन में बदल रहा है। यह 16 किलोमीटर लंबा है। इस प्रोजेक्ट में कुल 7871 पेड़ काटे जाने हैं, जो 40 से 80 साल तक के हैं। पिछले साल दिसंबर में तीन दिन में करीब आधे पेड़ काट दिए गए थे। इसका जमकर विरोध हुआ। इसके बाद मामला एनजीटी में पहुंचा और 8 जनवरी तक पेड़ों की कटाई पर रोक लगा दी गई थी। इस पर दो-तीन सुनवाई भोपाल बेंच ने की।इसके बाद मामला दिल्ली बेंच में पहुंच गया। इसी मामले में सुनवाई पूरी की गई है। याचिकाकर्ता सक्सेना ने बताया कि पेड़ों की कटाई के मामले में 22 दिसंबर को दिया गया स्थगन फिलहाल बरकरार रहेगा। इस निर्णय से याचिकाकर्ता को फौरी तौर पर बड़ी राहत मिली है, क्योंकि हजारों की संख्या में पेड़ कटाई पर लगी रोक अभी जारी रहेगी।

संक्षिप्त समाचार

कर्नाटक के सीएम सिद्धारमैया का इस्तीफा

● बोले-आलाकमान ने जो कहा, मैंने वही किया ● मंत्री बोले-डीके शिवकुमार अगले मुख्यमंत्री होंगे

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने गुरुवार को इस्तीफा दे दिया। उन्होंने बेंगलुरु में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर कहा- मैंने पहले ही कहा था कि हाईकमान जब कहेगा, मैं इस्तीफा दे दूंगा। कल हाईकमान ने कहा और आज मैंने इस्तीफा दे दिया। उन्होंने बताया कि

राज्यपाल थावरचंद गहलोत के सचिव को इस्तीफा सौंपा है। गहलोत फिलहाल पारिवारिक कारणों से बेंगलुरु से बाहर हैं। प्रेस कॉन्फ्रेंस में डिप्टी सीएम डीके शिवकुमार भी मौजूद थे। हालांकि प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान यह नहीं बताया कि गया कि अगला सीएम कौन होगा। इससे पहले सिद्धारमैया ने अपने घर पर मंत्रियों के साथ बैठक की और फैसले की जानकारी दी। बैठक के दौरान डीके शिवकुमार ने सिद्धारमैया के पैर छुए, जिसके बाद दोनों गले मिले। वहीं, राज्य सरकार में मंत्री एचके पाटिल ने बताया कि डीके शिवकुमार ही सीएम होंगे।

ईरान के बाद अब ओमान को ट्रम्प की धमकी

● कहा-होर्मुज पर किसी का कंट्रोल बर्दाश्त नहीं, उड़ा देंगे, मुझे चुनाव की परवाह नहीं

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने ईरान के बाद अब ओमान की धमकी दी है। उन्होंने कहा कि होर्मुज स्ट्रेट अंतरराष्ट्रीय समुद्री रास्ता है और यहां किसी एक देश का कब्जा नहीं हो सकता। दुनिया के सभी जहाजों को यहां से गुजरने की आजादी होगी। दरअसल ईरान होर्मुज से गुजरने वाले जहाजों से फीस वसूलने के लिए ओमान के साथ मिलकर एक सिस्टम तैयार करने पर

बातचीत कर रहा है। ट्रम्प ने कहा कि हम होर्मुज पर नजर रखेंगे, लेकिन इसे कोई कंट्रोल नहीं करेगा। ईरान इसे कंट्रोल करना चाहता है, लेकिन ऐसा नहीं होगा। यह अंतरराष्ट्रीय जलक्षेत्र है। ओमान को भी बाकी देशों की तरह व्यवहार करना होगा, नहीं तो उसे उड़ा देंगे। इससे पहले ट्रम्प ने कहा था कि ईरान को लगा था कि वह बातचीत से पीछे हट जाएंगे, लेकिन अब तेहरान के पास समझौता करने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा है।

हिन्दी पत्रकारिता द्विशताब्दी राष्ट्रीय सम्मेलन

दिल्ली में 30-31 मई को सप्रे संग्रहालय और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का आयोजन

भोपाल। हिन्दी पत्रकारिता के 200 वर्ष पूरे होने पर 30-31 मई को दिल्ली में राष्ट्रीय महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली एवं मा स्मृति समाचारपत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल के संयुक्त आयोजन में 'स्मारक डाक प्रथम दिवस आवरण' का लोकार्पण होगा। 'हिन्दी पत्रकारिताः 200 साल की महागाथा' स्मान विमोचन किया जाएगा। हिन्दी पत्रकारिता की दो शताब्दी की गौरवशाली यात्रा के अग्रगण्य स और पत्रिकाओं तथा युग निर्माता संपादकों के चित्रों की प्रदर्शनी लगाई जाएगी। यह प्रदर्शनी सचल स्वरूप में रहेगी, जो बाद में सप्रे संग्रहालय का स्थायी अंग बनेगी। हिंदी पत्रकारिता द्विशताब्दी राष्ट्रीय महोत्सव के मुख्य अतिथि भारत के संचा ज्योतिरादित्य सिंधिया स्मारक डाक टिकट तथा प्रथम दिवस आवरण का लोकार्पण करेंगे। प्रसारण मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव स्मारक ग्रंथ का विमोचन करेंगे। स्मारक ग्रंथ का सम्पादन श्री श्रीधर एवं डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने किया है। डॉ. श्रीकांत सिंह की पुस्तक 'हिन्दी पत्रकारिता के उन्नायक का भी विमोचन होगा। महोत्सव के अध्यक्ष मूर्धन्य संपादक श्री रामबहादुर राय हिंदी के भूत-वर्तमान-भविष्य की व्याख्या अपने बीज वक्तव्य में करेंगे। शुभारंभ राष्ट्रीय कला केन्द्र बिल्डिंग स्थित सभागार में 30 मई को अपरान्ह 4.00 बजे होगा।

खंभात की खाड़ी में बनेगा भारत का सबसे लंबा पुल

भावनगर से भरूच की दूरी अब 45 मिनट में होगी पूरी

गुजरात के व्यापार, उद्योग और पर्यटन को मिलेगा बढ़ावा

नई दिल्ली (एजेंसी)। गुजरात के इंफ्रास्ट्रक्चर इतिहास में एक सुनहरा अध्याय जुड़ने जा रहा है। केंद्र सरकार ने सौराष्ट्र और दक्षिण गुजरात के करोड़ों लोगों को सालों की परेशानी से आजादी

दिलाने के लिए एक बहुत ही महत्वाकांक्षी योजना पर अपनी मुहर लगा दी है। केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय ने खंभात की खाड़ी पर एक शानदार और अत्याधुनिक सी ब्रिज बनाने की दिशा में अहम कदम उठाए हैं।

सिर्फ45 मिनट में पूरा होगा 6 घंटे का सफर

अभी, भावनगर से भरूच या सूरत जाने के लिए बगोदरा या वडोदरा होते हुए लंबा रास्ता लेना पड़ता है, जिसमें लगभग 7 से 8 घंटे लगते हैं। लेकिन इस नए एक्सप्रेसवे और पीएम गति शक्ति प्रोजेक्ट के तहत प्रस्तावित लगभग 30 किलोमीटर लंबे सी-ब्रिज के बनने के बाद यह दूरी सिर्फ 45 मिनट से 1 घंटे में तय की जा सकेगी। इस हाईवे प्रोजेक्ट की वजह से भावनगर और सूरत के बीच की दूरी लगभग 240 किलोमीटर कम हो जाएगी, जिससे फ्यूल बचेगा।

● राजस्थान के 5 सीमावर्ती जिलों में बढ़ेगी सुरक्षा

नया प्लान तैयार, 15 किमी दायरे के 26 हजार पुराने निर्माण हटेंगे

जयपुर (एजेंसी)। भारत-पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय सीमा से सटे जिलों में सुरक्षा बढ़ाने, घुसपैठ रोकने, मादक पदार्थों एवं अवैध हथियारों की तस्करी रोकने के साथ ही जनसांख्यिकी घनत्व को बनाए रखने के लिए विस्तृत कार्य योजना तय की गई है। अब अंतरराष्ट्रीय सीमा से सटे 50 किलोमीटर क्षेत्र में कोई भी निर्माण कार्य संबंधित जिलों के कलक्टर एवं पुलिस अधीक्षकों की अनुमति से हो सकेगा। अंतरराष्ट्रीय सीमा के 15 किलोमीटर के दायरे में आने वाले सभी तरह के निर्माण कार्य अगले दो माह में ध्वस्त किए जाएंगे। सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ), पुलिस और जिला प्रशासन की ओर से पिछले दिनों रिपोर्ट तैयार हुई है।

दो दिन पहले तय की गई थी गाइडलाइन

वहीं, दो दिन पहले केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह की बीकानेर में सीमा सुरक्षा को लेकर बीएसएफ, गृह मंत्रालय, राज्य पुलिस महानिदेशक, मुख्य सचिव, पांच जिलों के कलक्टरों एवं पुलिस अधीक्षकों की बैठक में तय की गई गाइडलाइन की पालना शुरू कर दी गई है। सूत्रों के अनुसार जिला प्रशासन ने उपखंड अधिकारियों एवं थाना अधिकारियों से सीमावर्ती क्षेत्र में हुए संदिग्ध निर्माणों की सूची मांगी है। थाना अधिकारियों एवं तहसीलदारों से उनके प्रभार वाले क्षेत्रों में किसी भी नए व्यक्ति अथवा परिवार के रहने की सूचना की जानकारी उच्च स्तर पर देने के लिए कहा गया है।

मुझ पर हमले से आपके अपराध कम नहीं होंगे

● नीट विवाद को लेकर धर्मेंद्र प्रधान पर बरसे राहुल गांधी

नई दिल्ली (एजेंसी)। नीट परीक्षा परिणाम और कॉन्ट्रैक्ट को लेकर शुरू हुआ विवाद अब सियासी टकराव में बदलता जा रहा है। कांग्रेस नेता और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान पर सीधा हमला बोलते हुए सरकार से कई सवाल पूछे हैं।

राहुल गांधी ने आरोप लगाया कि 18.5 लाख छात्रों के भविष्य से खिलवाड़ किया गया और सरकार जवाब देने से बच रही है। राहुल गांधी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि धर्मेंद्र प्रधान जी, आप मुझ पर जितने चाहे हमले कर लें, लेकिन इससे आपके अपराध कम नहीं होंगे।

न ही इससे 18.5 लाख बच्चों के लिए जवाब मांगना बंद होगा। उन्होंने पूछा कि आखिर नीट का कॉन्ट्रैक्ट कंपनी को क्यों दिया गया, जबकि यह कंपनी अपने पुराने नाम के तहत पहले भी विवादों में रह चुकी है। राहुल गांधी ने यह भी सवाल उठाया कि क्या कंपनी की बैकग्राउंड जांच हुई थी और अगर हुई थी तो फिर कॉन्ट्रैक्ट क्यों दिया गया। इस पूरे विवाद पर केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने भी जवाब दिया। उन्होंने कहा कि एनटीए पहले ही इस मामले पर अपना पक्ष रख चुका है।

खाने-पीने की चीजें और पर्सनल केयर प्रोडक्ट्स होंगे महंगे

● कंपनियों पर कच्चे माल की लागत का दबाव, पैकेजिंग मटीरियल 56 फीसदी तक महंगा हुआ

नई दिल्ली (एजेंसी)। आने वाले दिनों में रोजमर्रा के इस्तेमाल वाले जरूरी कंज्यूमर प्रोडक्ट्स महंगे हो सकते हैं। सिस्टेमैटिक्स रिसर्च की रिपोर्ट के मुताबिक, कच्चे माल की बढ़ती कीमतों के कारण कंपनियां लगातार महंगाई के दबाव में हैं, जिससे वे अपने प्रोडक्ट्स के दाम बढ़ा सकती हैं। रिपोर्ट में बताया गया है कि अलग-अलग कैटेगरी की कंपनियों ने पिछले एक से दो महीनों में ही अपने प्रोडक्ट्स की कीमतों में औसतन 3 से 7 फीसदी तक की बढ़ोतरी कर दी है। इसकी मुख्य वजह यह है कि कंपनियों को रॉ मटीरियल बास्केट की लागत में औसतन करीब 10 फीसदी बढ़ी है।

● रिटेल महंगाई बढ़कर 3.48 फीसदी पर पहुंची- अप्रैल की रिटेल महंगाई बढ़कर 3.48 फीसदी पर पहुंच गई है। इससे पहले मार्च में यह 3.40 फीसदी थी। महंगाई बढ़ने की सबसे बड़ी वजह खाने-पीने की चीजों के दामों का बढ़ना है। फूड इन्फ्लेशन अप्रैल में बढ़कर 4.20 फीसदी पर पहुंच गई। मार्च में यह आंकड़ा 3.87 फीसदी था। इनपुट कॉस्ट में हुई इस बढ़ोतरी की भरपाई करने के लिए कंपनियां कीमते बढ़ाने के साथ-साथ ग्रामेज कट यानी पैकेट का वजन घटाने का तरीका भी अपना सकती हैं।

● पाम ऑयल, क्रूड और पैकेजिंग कॉस्ट बढ़ी- रिपोर्ट के मुताबिक, कुछ खास कैटेगरीज में लागत बहुत तेजी से बढ़ी है। पैकेजिंग मटीरियल-शैम्पू की बोतलें, डिटर्जेंट कंटेनर और फ्लेक्सिबल पैकेजिंग में इस्तेमाल होने वाले प्लास्टिक की कीमतें 56 फीसदी तक बढ़ गई हैं। क्रूड और पाम ऑयल- पश्चिम एशिया में चल रहे तनाव के बीच ब्रेंट क्रूड ऑयल की कीमतें 32 फीसदी तक उछल गई हैं। वहीं पाम ऑयल के दाम में भी 11 फीसदी की तेजी आई है।

कंपनियों के मुनाफे और मार्जिन पर असर दिखेगा

कच्चे माल की इस महंगाई का असर मार्च तिमाही में ही दिखने लगा था, जब बड़ी कंपनियों का ग्रॉस मार्जिन घटा था। सालाना आधार पर ये 0.50 फीसदी घटा है। इस मौजूदा महंगाई का सबसे बड़ा असर वित्त वर्ष 2027 की पहली छमाही में दिखाई देगा। मौजूदा लागत बढ़ोतरी की भरपाई के लिए कंपनियों ने अपने सामान के दाम तो बढ़ा रही हैं, जिससे वे घाटे से बच जाएं। लेकिन महंगाई इतनी ज्यादा है कि साल 2026-27 में कंपनियों का कुल मुनाफा प्रतिशत (मार्जिन) कम रहने की आशंका बनी हुई है। रिपोर्ट में यह चेतावनी भी दी गई है कि बढ़ती रिटेल महंगाई के कारण आने वाले महीनों में बुरा असर पड़ सकता है।

दूरस्थ क्षेत्रों में विशेषज्ञ चिकित्सकों की भर्ती को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाय:उप मुख्यमंत्री शुक्ल

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने मंत्रालय में लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग की विभिन्न योजनाओं, अधोसंरचना विकास एवं मानव संसाधन संबंधी विषयों की विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने स्वास्थ्य सेवाओं को अधिक सुदृढ़, सुलभ एवं प्रभावी बनाने हेतु विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा कर आवश्यक निर्देश दिए। बैठक में चिकित्सकों एवं विशेषज्ञ चिकित्सकों की भर्ती, नर्सिंग कॉलेजों के निर्माण कार्यों की प्रगति, चिकित्सालयों के संधारण एवं रख-रखाव, सागर स्थित कैंसर हॉस्पिटल हेतु पदों की स्वीकृति, प्रयोगशालाओं के सुदृढ़ीकरण (लैब स्ट्रेंदनिंग) और स्वास्थ्य संस्थाओं में आवश्यक मानव संसाधन उपलब्ध कराने संबंधी विषयों की समीक्षा की गई।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने निर्देश दिए कि अंडर सर्व्ड एवं दूरस्थ क्षेत्रों में चिकित्सकों एवं विशेषज्ञ चिकित्सकों की भर्ती को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए, ताकि अंतिम पंक्ति तक गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएँ सुनिश्चित हो सकें। उन्होंने कहा कि केवल चिकित्सकों की उपलब्धता ही नहीं, बल्कि नर्सिंग एवं पैरामेडिकल स्टाफ की पर्याप्त उपलब्धता भी सशक्त स्वास्थ्य सेवा प्रदायगी के लिए अत्यंत आवश्यक है। इस दिशा में प्रभावी एवं ठोस प्रयास किए जाएँ।

सीएम केयर्स के अंतर्गत अंग प्रत्यारोपण (ऑर्गन ट्रांसप्लांट) से जुड़े प्रकरणों में अतिरिक्त व्यय की प्रतिपूर्ति संबंधी विषय पर भी चर्चा की गई। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने निर्देश दिए कि जरूरतमंद मरीजों को समयबद्ध सहायता उपलब्ध कराने हेतु आवश्यक प्रावधान किए जाएँ।उन्होंने आयुष्मान भारत योजना के अंतर्गत कैंसर उपचार पैकेज को शामिल किए जाने हेतु आवश्यक प्रस्ताव शीघ्र तैयार करने के निर्देश दिए, जिससे कैंसर रोगियों को उपचार में अधिक आर्थिक सहायता मिल सके और गुणवत्तापूर्ण उपचार तक उनकी पहुँच आसान हो।

स्थानांतरण प्रक्रिया को पारदर्शी, सहज एवं संवेदनशील बनाएं

उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने विभागीय स्थानांतरण प्रक्रिया को पारदर्शी, सहज एवं संवेदनशील बनाए जाने पर विशेष बल दिया। उन्होंने निर्देश दिए कि जनजातीय एवं दूरस्थ क्षेत्रों में चिकित्सकों की पर्याप्त उपलब्धता बनी रहे, यह सुनिश्चित किया जाए। साथ ही गंभीर बीमारी, पति-पत्नी की एक ही स्थान पर पदस्थापना, दिव्यांग आश्रित, विधवा एवं परित्यक्ता जैसे संवेदनशील प्रकरणों को स्थानांतरण प्रक्रिया में प्राथमिकता प्रदान की जाए। बैठक में अपर मुख्य सचिव लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा श्री अशोक बर्णवाल, आयुक्त धनराजू एस सहित विभाग के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

पेज 1 का शेष

उर्दू अदब की दुनिया के मशहूर और मारुफ शायर

सियासी हलकों और मुशायरों में गूंजते रहे उनके शेर

उनकी शायरी महज़ हुस्न और इश्क़ तक महदूद नहीं रही। समाजी मुद्दों पर भी उन्होंने बेबाकी से लिखा। मुल्क के बँटवारे के दर्द को उन्होंने इस तरह बयान किया

दुश्मनी जम कर करो लेकिन ये गुंजाइश रहे

जब कभी हम दोस्त हो जाएँ तो शर्मिंदा न हों।

ये शेर उन्होंने शिमला समझौते के मौक़े पर पढ़ा था। फिर जब उन्हें पाकिस्तान से मुशायरे का बुलावा मिला, तो वहां भी यही शेर पढ़ा और महफ़िल में सन्नाटा छा गया।

मेरठ के दंगों ने बदला उनकी ज़िंदगी का रुख़ 1987 के मेरठ दंगों में उनका घर जला दिया गया। यह हादसा उनके लिए बेहद तकलीफ़देह था। इस दर्द को उन्होंने अपने अशआर में समेटा-

लोग टूट जाते हैं एक घर बनाने में

तुम तरस नहीं खाते बस्तियाँ जलाने में।

इस हादसे के बाद उन्होंने भोपाल को अपना ठिकाना बना लिया और यहीं के होकर रह गए।

शायरी का नया अंदाज़ और नए लफ़्ज़ों का इस्तेमाल

डॉ. बद्र की शायरी का सबसे ख़ास पहलू यह है कि उन्होंने ग़ज़ल को आसान लफ़्ज़ों में ढाला। उनकी शायरी न तो अरबी-फारसी के भारी-भरकम लफ़्ज़ों में जकड़ी हुई है और न ही रवायतों की ग़ुलाम। उन्होंने नए लफ़्ज़ों को ग़ज़ल में जगह दी, नए तजुर्बे किए और ग़ज़ल को एक नया आयाम दिया।

जिस दिन से चला हूँ मिरी मंज़िल पे नज़र है

आंखों ने कभी मील का पत्थर नहीं देखा।

डॉ. बद्र ने अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी से पढ़ाई की थी। एमए कोर्स में उनके शेर भी शामिल थे।

तालीम में भी अव्वल

डॉ. बद्र का अक़ली सफ़र भी लाजवाब रहा। वे अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के गोल्ड मेडलिस्ट हैं। दिलचस्प बात यह रही कि जब वे वहां पढ़ने गए तो एमए के कोर्स में उनके ख़ुद के अशआर शामिल थे।

शायरी से पहले पुलिस की नौकरी

क़रीब 15-16 साल की उम्र में उनके वालिद का इंतक़ाल हो गया था। मजबूरन उन्होंने पुलिस की नौकरी ज्वॉइन कर ली। मगर शायरी से इश्क़ बरक़रार रहा। इस दौरान उन्हें तरक़्क़ी की पेशकश हुई, लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया और एक यादगार शेर कह दिया-

बड़े लोगों से मिलने में हमेशा फ़ासला रखना दरिया जहाँ समंदर से मिला, दरिया नहीं रहता।

बेटियों के लिए ख़ास शेर

बेटियों की एहमियत को उन्होंने यूँ बयाँ किया-

वो शाख़ है न फूल, अगर तितलियाँ न हों

वो घर भी कोई घर है जहाँ बच्चियाँ न हों।

बद्र की शायरी ने उर्दू अदब को एक नया रंग दिया। उनकी ग़ज़लों में अहसास की ख़ुशबू, मोहब्बत की गर्मी और दर्द की शिद्दत एक साथ मिलती है। ओहदा पाने के बाद कई लोगों में ग़ुरूर जाता है। वे भ्रम पाल लेते हैं। ऐसे बंदों को भी उन्होंने चेताते हुए लिखा था-

शोहरत की बुलंदी भी पलभर का तमाशा है

जिस डाल पर बैठे हो, वो टूट भी सकती है।

पत्नी के लिए कहा- गजलों के मुकम्मल होने में राहत का बड़ा हाथ। बशीर बेटे तैयब और पत्नी राहत के साथ भोपाल में रह रहे थे।

बशीर की पत्नी राहत बद्र अच्छी लेखिका और शिक्षिका रही हैं। उन्होंने न केवल घर को संभाला, बल्कि उनकी साहित्यिक यात्रा में सबसे बड़ी सपोर्ट सिस्टम के रूप में काम किया। बशीर अक्सर कहते कि उनकी शायरी की कई बारीकियों और गजलों के मुकम्मल होने में पत्नी का बहुत बड़ा हाथ रहा है। वह उनकी सबसे ईमानदार आलोचक रही हैं। उनकी शादी के बारे में कहा जाता है कि वे दोनों एक-दूसरे की शख्सियत को पूरा करते हैं।

बशीर ने लगातार 60 साल तक मुशायरों में हिस्सा लिया था। वे दिन में आराम करते थे और देर रात तक मुशायरों में जाते थे। डिमेंशिया के बाद भी यही उनका रूटीन सेट हो गया था, वे रात में जागते, और दिन में सोते थे। पिछले कुछ सालों के दौरान वे अपनी गजलें सुना करते थे।

मंगोलिया के लिए भगवान बुद्ध के परम शिष्यों के पवित्र अस्थि अवशेष श्रद्धापूर्वक रवाना

भगवान बुद्ध के शिष्यों के पवित्र अवशेषों के मंगोलिया में प्रदर्शन से मिलेगी वैश्विक पहचान : मंत्री पटेल

भोपाल (नप्र)। पंचायत एवं ग्रामीण विकास एवं श्रम मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने कहा कि आज का दिन भारत और मध्यप्रदेश के इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय की तरह है। यह पावन अस्थि अवशेष न केवल हमारी अमूल्य आध्यात्मिक धरोहर हैं, बल्कि वैश्विक शांति और सौहार्द्र के प्रतीक भी हैं। मंत्री श्री पटेल राजा भोज एयरपोर्ट पर भगवान बुद्ध के शिष्यों श्री सारिपुत्र और श्री महामोद्गलायन के पवित्र अवशेषों को राजकीय सम्मान के साथ मंगोलिया रवाना करने के कार्यक्रम के संबोधित कर रहे थे। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि भगवान बुद्ध के शिष्यों के पवित्र अवशेषों के मंगोलिया में प्रदर्शन करने से वैश्विक पहचान मिलेगी। उन्होंने रेखांकित किया कि भगवान बुद्ध के इन महान शिष्यों की पवित्र अस्थियां संपूर्ण विश्व में केवल तीन देशों–भारत, श्रीलंका एवं म्यांमार में ही संरक्षित हैं, जो हमारे प्रदेश और देश के लिए अत्यंत गौरव की बात है। इससे मंगोलिया सहित सभी देशों के बौद्ध अनुयायी प्रदेश में आने के लिए प्रेरित होंगे।

मंत्री श्री पटेल ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की दूरदर्शी सांस्कृतिक नीतियों की सराहना करते हुए कहा कि वर्तमान सरकार जन-जन की आस्था और देश के आध्यात्मिक मूल्यों को वैश्विक पटल पर स्थापित करने के लिए निरंतर कार्य कर रही है। उन्होंने अपने पूर्व कार्यकाल का स्मरण करते हुए बताया कि जब वे भारत के संस्कृति मंत्री थे, तब एक विशेष नीति बनाई गई थी कि जिस देश से एक लाख से अधिक पर्यटक भारत आएंगे, वहां उनकी स्थानीय भाषा में साइन बोर्ड लगाए जाएंगे। इसी नीति के तहत श्रीलंका से दो लाख से अधिक पर्यटकों के आगमन पर सांची में उनकी भाषा में साइन बोर्ड लगाए गए, जिससे श्रद्धालुओं को सांची और अन्य बौद्ध स्थलों की यात्रा के दौरान सुगमता और आत्मीयता का अनुभव होता है। उन्होंने बल देकर कहा कि सांची केवल अपने पाषाण स्तूपों के कारण विश्व धरोहर स्थल नहीं है, अपितु इन चैतन्य अस्थि अवशेषों की पावन उपस्थिति के कारण वैश्विक श्रद्धा का केंद्र है, जिसके कारण विश्व भर से पर्यटक यहाँ खिंचे चले आते हैं। पूर्व में इन अवशेषों की सफल थाईलैंड यात्रा का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि विभिन्न देशों के साथ हमारे सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संबंध अत्यंत प्राचीन और प्रगाढ़ हैं, और यह यात्रा इन संबंधों को एक नई ऊंचाई प्रदान करेगी।

सांची आध्यात्मिक वैभव का अनुपम खजाना पूज्य बानगल उपतिस्स नायक थेरी

कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित बौद्ध धर्मगुरु बड़े गुरु श्री पूज्य बानगल उपतिस्स नायक थेरी ने सांची की महत्ता को बताते हुए कहा कि सांची केवल एक ऐतिहासिक स्थल नहीं, बल्कि आध्यात्मिक वैभव का एक अनमोल खजाना है। बौद्ध जगत में इस स्थान की महिमा अतुलनीय है। उन्होंने पूर्व के अनुभवों को साझा करते हुए बताया कि जब ये पवित्र अस्थि अवशेष पूर्व में थाईलैंड प्रवास पर गए थे, तब वहां लगभग 5.5 मिलियन (55 लाख) से अधिक श्रद्धालुओं ने पूर्ण श्रद्धाभाव से इनकी पूजा-अर्चना की थी। उन्होंने कहा कि बौद्ध परंपरा में इन अवशेषों (रेलिक्स) का स्थान सर्वोपरि है और उन्हें सांची जैसी पवित्र धरा का कस्टोडियन (संरक्षक) बनने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ है, जो उनके जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है।कलेक्टर श्री प्रियंक मिश्रा ने कहा कि भगवान बुद्ध की यह विरासत विश्व बंधुत्व की एक अमूल्य निधि है। उन्होंने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मूल मंत्र विकास भी, विरासत भी का उल्लेख करते हुए कहा कि प्रशासन इस संकल्प को धरातल पर उतारने के लिए पूरी निष्ठा से कार्य कर रहा है। इस प्रकार के अंतर्राष्ट्रीय और आध्यात्मिक प्रकल्प संपूर्ण विश्व को यह दिग्दर्शित करते हैं कि भारत आदि काल से विश्वगुरु रहा है और अपनी इसी सांस्कृतिक संपन्नता के कारण सदैव विश्वगुरु के पद पर सुशोभित रहेगा। कलेक्टर श्री मिश्रा ने अपनी व्यक्तिगत अनुभूतियों को साझा करते हुए कहा कि उनका जन्म उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में हुआ है, जो स्वयं भगवान बुद्ध के महापरिनिर्वाण स्थल और उनसे जुड़े अत्यंत पवित्र क्षेत्रों से घिरा हुआ है। ऐसे में भोपाल की धरती पर इस पावन विदाई समारोह का साक्षी बनना उनके लिए परम सौभाग्य की बात है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इस गरिमामयी आयोजन के माध्यम से मध्यप्रदेश की पहचान मध्य एशिया के देश मंगोलिया तक सुदृढ़ रूप से पहुंचेगी। भविष्य में भी इस प्रकार के सांस्कृतिक आदान-प्रदान के कार्यक्रम अन्य देशों के साथ आयोजित किए जाएंगे, जो हमारे प्रदेश के लिए अत्यंत गौरवपूर्ण हैं क्योंकि मध्यप्रदेश ऐतिहासिक और आध्यात्मिक विरासत से समृद्ध प्रदेश है। इस गरिमामयी प्रस्थान समारोह में छोटे गुरु श्री पूज्य बानगल विमल तिस्स थेरी, इंटरनेशनल बुद्धिस्ट कॉन्फेडरेशन (आईबीसी) के संचालक कर्नल श्री यश सक्सेना, संस्कृति विभाग के डिप्टी सेक्रेटरी श्री राजेश कुमार गुप्ता सहित अनेक प्रबुद्ध जन और वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित रहे। सभी गणमान्य नागरिकों ने मंत्रोच्चार और पूर्ण धार्मिक विधि-विधान के बीच भगवान बुद्ध के शिष्यों के पवित्र अवशेषों को मंगोलिया यात्रा के लिए भावभीनी और श्रद्धापूर्वक विदाई दी।

वीर सावरकर देशवासियों के लिए रहेंगे सदैव वंदनीय : मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रखर राष्ट्रवादी चिंतक, महान स्वतंत्रता सेनानी, 'स्वातंत्र्यवीर' विनायक दामोदर सावरकर की जयंती पर उन्हें नमन किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोशल मीडिया पर जारी संदेश में कहा कि शहीद वीर सावरकर के नाम मात्र के स्मरण से ही रोम-रोम, राष्ट्रभक्ति-साहस और आत्म गौरव के भाव से पुलकित हो उठता है। वे असह्य यातनाओं को निर्भीकता और निडरता से सह गए, लेकिन स्वतंत्रता के दीप को जलाए रखा। मां भारती की सेवा में स्वयं का होम कर देने वाले स्वातंत्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर देशवासियों के लिए सदा वंदनीय रहेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शायर डॉ. बशीर बद्र के निधन पर दुख जताया

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने 'पद्मश्री' से सम्मानित मशहूर शायर बशीर बद्र जी के निधन पर गहन दुख जताया और उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि दी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि डॉ. बद्र ने अपनी शायरी के माध्यम से मानवता के साथ जीने का संदेश दिया। उन्होंने अपनी रचनाओं से सदी के महान शायरों में स्थान बनाया और जिंदगी को आसान बनाने के सूत्र भी दिए। उनके लेखन में बेजोड़ रचनात्मकता के दर्शन होते हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बाबा महाकाल से दिवंगत पुण्यात्मा की शांति के लिए प्रार्थना की और शोकाकुल परिजन, प्रशंसकों के प्रति संवेदनाएं व्यक्त की हैं।

मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव ने गुरूवार को नई दिल्ली में केंद्रीय विधि एवं न्याय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) अर्जुन राम मेघवाल का उनके कार्यालय में पुष्प-गुच्छ भेंट कर स्वागत किया।

उज्जैन में दोस्त के बर्थडे से लौट रहे युवक की बेरहमी से हत्या

आरोपियों ने चाकू से किए हैं कई वार

उज्जैन (नप्र)। नलिया बाखल क्षेत्र में देर रात 18 वर्षीय युवक की चाकू मारकर बेरहमी से हत्या कर दी गई। वारदात के बाद रात में मृतक के आक्रोशित परिजनों और दोस्तों ने चरक अस्पताल के पोस्टमार्ट्म रूम के बाहर हंगामा कर दिया। स्थिति बिगड़ती देख तीन थानों का पुलिस बल मौके पर पहुंचा। देर रात में ही महाकाल पुलिस ने कुछ युवकों को हिरासत में ले लिया है।

बर्थडे मनाकर लौट रहा था युवक

दरअसल, रविशंकर नगर का रहने वाला मोहित पिता प्रेम नारायण बुधवार रात अपने दोस्त हर्ष का जन्मदिन मनाने गया था। तीनों दोस्त अंगारेश्वर मंदिर दर्शन कर रात में लौट रहे थे। इसी बीच रास्ते में मोहित के मोबाइल पर यतींद्र नामक युवक का कॉल आया। जिस पर मोहित अपने दोस्तों के साथ नलिया बाखल पहुंच गया। जैसे ही मोहित नलिया बाखल में पुष्कर तालाब के पास हनुमान मंदिर की गली में पहुंचा, वहां पहले से घात लगाए बैठे प्रशांत, चीनू, एकलव्य और इनके अन्य साथियों ने उसे घेर लिया।

चाकू से ताबड़तोड़ वार किए– हमलावरों ने मोहित पर ताबड़तोड़ चाकू से वार करना शुरू कर दिए। साथ आए दोनों दोस्तों ने बीच-बचाव कर उसे बचाने का काफी प्रयास किया लेकिन हमलावर हावी रहे और मोहित लहूलुहान होकर वहीं गिर गया। घटना रात करीब 11:30 बजे की बताई गई है।

मृतक फल-फूल का लगाता था दुकान– मोहित का परिवार पहले नलियाबाखल में किराए से रहता था। एक साल पहले ये रविशंकर नगर शिफ्ट हो गए। मृतक मोहित और आरोपीगण महाकाल क्षेत्र में ही फूल-प्रसाद, फल-फ्रूट आदि की दुकानें लगाते हैं। ये लोग कमीशन लेकर यात्रियों को होटल-लॉज में भी ठहराते हैं। इस कारण इनमें पहले से विवाद चला रहा आ रहा है।

मोहित को धमकाने के लिए बुलाया– बुधवार रात आरोपियों ने धमकाने की नीयत से मोहित को बुलाया, इसी दौरान चाकू कमर के नीचे नाजुक जगह लग गया जो मोहित के लिए जानलेवा साबित हो गया। थाना प्रभारी के अनुसार आरोपी प्रशांत, चीनू, एकलव्य के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज किया है। सभी 18-19 साल के हैं। पुराने विवाद में यह वारदात हुई है।

परिजनों ने किया हंगामा– मौत की खबर मिलते ही मोहित के परिजन और दर्जनों दोस्त चरक अस्पताल के पोस्टमार्टम रूम के सामने एकत्रित हो गए। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल था और उन्होंने अस्पताल परिसर में जमकर हंगामा किया। तनाव बढ़ता देख महाकाल थाना प्रभारी गगन बादल, माधवनगर थाना प्रभारी गजेंद्र पचोरिया और कोतवाली थाना प्रभारी दीनबंधु सिंह तोमर अपनी टीम के साथ मौके पर पहुंचे। अधिकारियों ने परिजनों को समझाया और स्थिति को नियंत्रित कर शव को पोस्टमार्टम रूम में रखवाया। गुरुवार सुबह पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया।

मोबाइल मिलने पर पूछताछ के बाद छात्रा ने की आत्महत्या

आईपीएस जज दंपत्ति ने 3 महीने की उम्र में गोद ली थी बेटी, सुसाइड नोट में वजह का जिक्र नहीं

भोपाल (नप्र)। भोपाल में आईपीएस संजीव कंचन और जज रेणुका कंचन की 17 वर्षीय बेटी की सुसाइड थ्योरी सुलझती नहीं दिख रही। हालांकि, पुलिस की शुरुआती जांच में यह साफ हुआ कि छात्रा पढ़ाई में बेहतर प्रदर्शन नहीं कर सकी थी। वह भोपाल के रातीबड़ के एक प्रतिष्ठित स्कूल में पढ़ती थी। छात्रा की मां रेणुका कंचन ने पुलिस को बताया कि बेटी को उन्होंने मोबाइल फोन नहीं दिलाया था। उसके पास एक मोबाइल देखने के बाद उससे पूछताछ की। उसे समझाइश दी, जिससे नाराज होकर उसने सुसाइड कर लिया। हबीबगंज थाना प्रभारी संजीव चौकसे के अनुसार, घटना के समय मां और पिता दोनों ही घर में नहीं थे। वे अपने-अपने ऑफिस में थे। छात्रा की मां भोपाल गैस राहत में जज हैं। टीआई के अनुसार, बच्ची दसवीं पास कर इस बार 11वीं में गई थी। पुलिस को परिजन से सूचना मिली। छात्रा के मोबाइल और उसके संपर्कों की जांच की जा रही है। वहीं पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया।

अभी परिजनों के डिटेल बयान दर्ज नहीं किए जा सके

आईपीएस संजीव कंचन ने बेटी को गोद लेकर पाला था। महज तीन महीने की उम्र में बेटी को विधिवत तरीके से अडॉप्ट किया गया था। इसकी पुष्टि पुलिस कमिश्नर संजय सिंह ने की है। पुलिस का कहना है कि आत्महत्या के सही कारणों का अभी खुलासा नहीं हुआ है। परिजनों के डिटेल बयान फिलहाल दर्ज नहीं किए जा सके हैं।

सुसाइड नोट में लिखा– मैं आपकी अच्छी बेटी नहीं बन सकी, आईएम सॉरी– एसीपी उमेश तिवारी ने बताया कि मृत छात्रा के पास से एक सुसाइड नोट मिला है। उसमें उसने लिखा, मम्मी-पापा, मैं आपसे बहुत प्यार करती हूं, लेकिन मैं आपकी अच्छी बेटी नहीं बन सकी। आईएम सॉरी।

सोशल मीडिया अकाउंट्स पर नजर

पुलिस सूत्रों के मुताबिक, जांच टीम अब छात्रा के दोस्तों और सहपाठियों से भी पूछताछ करेगी, ताकि उसके व्यवहार में आए किसी भी बदलाव या मानसिक तनाव के बारे में सुराग मिल सके। चूंकि छात्रा हाल ही में नई कक्षा में गई थी, इसलिए पढ़ाई के दबाव के एंगल को भी पूरी तरह नकारा नहीं जा रहा है।

इसके साथ ही साइबर सेल की मदद से उसके सोशल मीडिया अकाउंट्स और हालिया एक्टिविटी को भी ट्रैक किया जा रहा है, ताकि यह समझा जा सके कि घटना से कुछ घंटे पहले वह किन लोगों के संपर्क में थी या क्या वह किसी बात को लेकर परेशान थी।

जिपं सीईओ के आदेश को जनपद सीईओ ने पलटा!

भोपाल के अर्रावती का मामला– उप सरपंच परिजनों के साथ मंत्री के बंगले पहुंचीं

भोपाल (नप्र)। भोपाल की ग्राम पंचायत अर्रावती में सरपंच पद के प्रभार का मामला पंचायत मंत्री प्रहलाद सिंह पटेल के पास पहुंच गया है। अर्रावती की उप सरपंच सविता चौहान ने मंत्री पटेल से शिकायत की है। मामले में कलेक्टर प्रियंक मिश्रा और जिला पंचायत सीईओ इला तिवारी ने जांच के आदेश दिए हैं।

बता दें कि 4 अगस्त-25 में अर्रावती के तत्कालीन सरपंच गंगाराम अहिरवार के विरुद्ध बैरसिया थाने में अपराधिक मामला दर्ज हुआ था। इसके बाद गंगाराम को पद से हटा दिया गया था। नियमानुसार यह प्रभार उप सरपंच सविता चौहान को देना था, लेकिन बैरसिया जनपद सीईओ देवेशकुमार सराठे ने शुरुआत में प्रभार नहीं दिया। मामला सामने आने के बाद 14 अगस्त-25 को जिला पंचायत सीईओ तिवारी ने जनपद सीईओ सराठे को मप्र पंचायत राज एवं ग्राम स्वराज अधिनियम के तहत सविता चौहान को सरपंच का प्रभार सौंपने के आदेश दिए थे। यही मामला अब सुर्खियों में बना हुआ है और

शिकायत मंत्री तक पहुंची है। बताया जाता है कि जनपद सीईओ ने जिला पंचायत सीईओ का आदेश ही पलट दिया। उप सरपंच को कुछ समय बाद चार्ज जरूर दिया, लेकिन अधिकार नहीं दिए। 10 महीने से सरपंच के अधिकार नहीं मिलने पर सविता चौहान ने मंत्री, कलेक्टर और जिपं सीईओ से गुहार लगाई।

आदेश का पालन नहीं कर रहे अधिकारी– सविता चौहान के पति धनवीर सिंह ने बताया कि जनपद सीईओ आदेश का पालन नहीं कर रहे हैं। अब तक सरपंच के अधिकार ही नहीं दिए गए हैं। इसलिए मंत्री पटेल, कलेक्टर और जिपं सीईओ से अधिकार दिए जाने की मांग की है। जिपं सदस्य विनय मेहर ने कहा कि सरपंच पद का प्रभार नियमानुसार ही दिया गया है। सविता चौहान को अधिकार मिलने चाहिए। यह मामला वरिष्ठजनों के संज्ञान में लाया गया है।

इस तरह बदला गया सीईओ का आदेश– सविता चौहान ने बताया कि प्रभार देने के बावजूद जब सरपंच के अधिकार नहीं सौंपे गए तो सीएम हेल्पलाइन में शिकायत की गई। इसके बाद सरपंच-सचिव का संयुक्त खाता खोल दिया जाता है। बाद में पंचों के तीन सम्मेलन कराए गए। जिसमें सविता के सिवाय किसी ने भी सरपंच पद की दावेदारी नहीं की थी। हालांकि, सम्मेलन प्रक्रिया के बीच लाखों रुपए के बिल बिना सविता चौहान की सहमति या संज्ञान में आए पास कर दिए जाते हैं। इसी बीच जनपद सीईओ सराठे ने लेखरात अहिरवार को सरपंच घोषित कर दिया।

हमीदिया में मॉर्च्युरी के बाहर स्ट्रेचर पर शव का चीर-फाड़

भोपाल (नप्र)। भोपाल के हमीदिया अस्पताल की मॉर्च्युरी (शवगृह) के बाहर स्ट्रेचर पर शव का पोस्टमॉर्ट्म कर दिया गया। बगल के रास्ते से आजावाही जारी रही।

डॉक्टर ने छेनी-हथौड़ी से शव की खोपड़ी खोल दी। वहां मौजूद लोग और मरीजों के परिजन इस चीर-फाड़ को देखते रहे। जब बदबू फैली तो दूर भागे।

बजरिया इलाके से लाया गया था शव, नहीं हुई पहचान– दरअसल, बजरिया थाना क्षेत्र से पुलिस एक व्यक्ति का शव पोस्टमॉर्ट्म के लिए हमीदिया अस्पताल लेकर आई थी। उसकी पहचान नहीं हो पाई थी, लेकिन शव को एम्बुलेंस से उतारकर मॉर्च्युरी के अंदर ले जाने के बजाय अंदर जाने वाले रास्ते पर ही रख दिया गया।

इसके बाद दो डॉक्टरों ने बिना किसी परदे या शेड के नीचे स्ट्रेचर पर ही शव का पोस्टमॉर्ट्म (चीर-फाड़) शुरू कर दिया।

बजरिया इलाके से लाया गया था शव, नहीं हुई पहचान– दरअसल, बजरिया थाना क्षेत्र से पुलिस एक व्यक्ति का शव पोस्टमॉर्ट्म के लिए हमीदिया अस्पताल लेकर आई थी। उसकी पहचान नहीं हो पाई थी, लेकिन शव को एम्बुलेंस से उतारकर मॉर्च्युरी के अंदर ले जाने के बजाय अंदर जाने वाले रास्ते पर ही रख दिया गया।इसके बाद दो डॉक्टरों ने बिना किसी परदे या शेड के नीचे स्ट्रेचर पर ही शव का पोस्टमॉर्ट्म (चीर-फाड़) शुरू कर दिया।

फॉरेंसिक विभाग के एचओडी बोले- खुले एरिया में केवल सफाई की जाती है– मामले में गांधी मेडिकल कॉलेज के फोरेंसिक विभाग के एचओडी डॉ. आशीष जैन ने कहा- कुछ विशेष मामलों में शवों का पोस्टमॉर्टम मॉर्च्युरी के बाहर बने शेड वाले एरिया में किया जाता है, जबकि सामान्य प्रक्रिया वाले पोस्टमॉर्ट्म अंदर ही होते हैं। खुले एरिया में केवल शवों की सफाई की जाती है।

एचओडी ने दावा किया कि बाहर सिर्फ शव की सफाई या कीड़े हटाए जाते हैं, लेकिन वीडियो में साफ दिख रहा है कि डॉक्टर सीधे स्ट्रेचर पर ही पोस्टमॉर्ट्म कर रहे हैं। शव को भी मॉर्च्युरी के मुख्य रास्ते पर खुले में रखा गया था, जहां से लोगों की आवाजाही हो रही थी।

खजुराहो-नौगांव ने चुरू-जैसलमेर को पीछे छोड़ा

सबसे गर्म शहरों में एमपी के 12 शहर, प्री-मानसून का काउंटडाउन शुरू

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में नौतपा के चौथे दिन सूर्यदेव ने अपने तीखे तेवरों से पूरे प्रदेश को भट्टी की तरह तपा दिया है। आलम यह है कि एमपी के कुछ शहरों ने तपिश के मामले में राजस्थान के चूरू और जैसलमेर को भी पीछे छोड़ दिया है। छतरपुर जिले के खजुराहो और नौगांव में पारा रिकॉर्ड 46.6 डिग्री सेल्सियस तक जा पहुंचा है। हालांकि, इस भीषण तपिश के बीच मौसम विभाग ने एक बड़ी और राहत भरी खबर भी दी है।

तेज गर्मी के बीच मौसम बदला, दमोह में ओले गिरे – अबकी बार नौतपा में भीषण गर्मी के साथ आंधी और बारिश का दौर भी चल रहा है। बीते 3 दिन से कई जिलों में पानी गिरा है। चौथे दिन, गुरुवार को भी हीटवेव (लू), तेज गर्मी और आंधी-बारिश से सरोबार रहा। छतरपुर के 2 शहर खजुराहो और नौगांव 10 दिन से प्रदेश के सबसे गर्म शहर हैं। यहां तीव्र लू का रेड अलर्ट है। मौसम केंद्र भोपाल की मानें तो 18 मई से ही खजुराहो-नौगांव सबसे गर्म बने हुए हैं। इस अवधि में यहां अधिकतम तापमान रिकॉर्ड 47 डिग्री के पार पहुंच चुका है। बुधवार को दोनों ही शहरों में पारा 46.6 डिग्री

सेल्सियस पहुंच गया। इधर, दमोह में गुरुवार शाम अचानक मौसम बदल गया। शाम करीब 4:30 बजे बारिश के साथ ओलावृष्टि शुरू हो गई थी। जिले के तेंदूखेड़ा ब्लॉक में करीब आधे घंटे तक ओले गिरते रहे। इसके बाद ओलावृष्टि थम गई, लेकिन बारिश जारी रही। इससे मौसम ठंडा हो गया और लोगों को गर्मी से राहत मिली।

देश के 40 सबसे गर्म शहरों में मप्र के 12 शहर शामिल– लगातार बढ़ती गर्मी और भीषण लू के कारण देश के सबसे गर्म 40 शहरों की सूची जारी हुई है, जिसमें अकेले मध्य प्रदेश के 12 शहर शामिल हैं। प्रदेश में बुंदेलखंड का खजुराहो और नौगांव सबसे गर्म रहे। खजुराहो और नौगांव में पारा 46.6डिग्री के साथ प्रदेश में सबसे गर्म रहे। वहीं राजधानी भोपाल में भी पारा 43.6 डिग्री दर्ज किया गया, जिससे लोग दिनभर हलाकान रहे।

भट्टी सा तप रहा पूरा प्रदेश, रेड अलर्ट जारी– मौसम विभाग ने प्रदेश के भोपाल संभाग, बुंदेलखंड, विंध्य और महाकौशल के कई इलाकों में लू का अलर्ट जारी किया है। विशेष रूप से छतरपुर, निवाड़ी और टीकमगढ़ जिलों में लू का रेड अलर्ट है, जहां लोगों को दोपहर में घरों से बाहर न निकलने की सलाह दी गई है।

48 से 72 घंटों में बदलेगा मिजाज, प्री-मानसून की दस्तक!– आईएमडी ने मध्य प्रदेश में प्री-मानसून और भीषण गर्मी से राहत को लेकर बड़ा अलर्ट दिया है। मौसम के जानकारों के अनुसार भीषण गर्मी और लू के थपेड़ों से परेशान मध्य प्रदेश वासियों के लिए राहत की घंटी बजने वाली है। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार, प्रदेश में अगले 24 से 48 घंटों के दौरान मौसम का मिजाज बदलने वाला है। इस दौरान प्री-मानसून एक्टिविटी प्रारंभ होने जा रही हैं। ग्वालियर-चंबल संभाग सहित राज्य के कुछ अन्य क्षेत्रों में प्री-मानसून गतिविधियां शुरू होने की उम्मीद है।

गुरुवार शाम से ही प्री-मानसून हलचल प्रांरभ हो गई

आगामी 2 से 3 दिनों में प्रदेश के कई हिस्सों में बादल छाने, तेज हवाएं (आंधी) चलने और गरज-चमक के साथ हल्की बारिश होने की पूरी संभावना है, जिससे तापमान में भारी गिरावट दर्ज की जाएगी। मध्यप्रदेश के ऊपर एवं आसपास सक्रिय ट्रफ लाइन, ऊपरी वायु चक्रवाती परिसंचरणों तथा उत्तर भारत की ओर बढ़ रहे पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव से आगामी 3-4 दिनों में राज्य में प्री-मानसूनी गतिविधियां तेज होने की संभावना है। विशेषकर पूर्वी, उत्तर-पूर्वी एवं मध्य भागों में गरज-चमक, तेज हवाएं और कहीं-कहीं वर्षा देखने को मिल सकती है।

30 मई शनिवार को प्रदेश में मौसम बदला रहेगा

पश्चिमी विक्षोभ एवं द्रोणिका के संयुक्त प्रभाव से मध्यप्रदेश के बड़े हिस्से में मौसम बदला हुआ रहेगा। पूर्वी और दक्षिणी जिलों में कहीं-कहीं मध्यम वर्षा तथा तेज गर्जना संभव। भोपाल एवं आसपास के क्षेत्रों में शाम के आद और रात में रात में तेज हवाओं के साथ बारिश की संभावना बन सकती है। तापमान में और गिरावट होने से लू की तीव्रता कम होगी।

रविवार 31 मई तक मौसम की ऐसी स्थिति रहेगी

राज्य में प्री-मानसूनी बादलों की सक्रियता बनी रह सकती है। कई जिलों में धूलभरी आंधी, बिजली चमकने एवं हल्की से मध्यम वर्षा की घटनाएं जारी रह सकती हैं। पूर्वी मध्यप्रदेश में मौसम अपेक्षाकृत अधिक सक्रिय रहने की संभावना है, जबकि पश्चिमी हिस्सों में गर्मी और उमस का मिश्रित प्रभाव बना रह सकता है।

संपादकीय

मुद्दा टाइमिंग और नीयत का है

स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन (एसआईआर) पर सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग को क्लीन चिट देते हुए इसे वैध ठहराया है। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को दिए अपने फैसले में कहा कि यह चुनाव आयोग की ओर से स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव के संवैधानिक सिद्धांत को लागू करने के लिए किया गया वैध अभ्यास है। चीफ़ जस्टिस सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली बेंच ने याचिकाकर्ताओं की उस दलील को ख़ारिज कर दिया, जिसमें कहा गया था कि एसआईआर दरअसल 'घुसपैठियों' को हटाने के नाम पर पीछे के दरवाज़े से नागरिकता जांच करने की कोशिश है। हालांकि अदालत ने स्पष्ट किया कि यह जांच किसी व्यक्ति की नागरिकता पर अंतिम फ़ैसला नहीं मानी जाएगी। अगर चुनाव आयोग को लगे कि किसी व्यक्ति के पास ज़रूरी दस्तावेज़ नहीं हैं या वह जांच में सफल नहीं हुआ है, तो वह मामला नागरिकता क़ानून के तहत अंतिम निर्णय के लिए केंद्र सरकार की सक्षम प्राधिकरण के पास भेज सकता है। याचिका में आरोप लगाया गया था कि चुनाव आयोग मनमाने तरीक़े से नागरिकता तय करने की शक्तियां अपने हाथ में ले रहा है और संसद के बनाए गए क़ानूनों, नियमों के साथ अपने ही मैनुअल में निर्धारित सीमाओं को अनुचित तरीक़े से पार कर रहा है। खास बात यह है कि बिहार में एसआईआर की संवैधानिक वैधता को बरकरार रखने वाले इस फ़ैसले का असर आगे होने वाले अन्य एसआईआर पर भी पड़ेगा। क्योंकि सुप्रीम कोर्ट में बिहार मामले की सुनवाई जारी रहने के दौरान ही एसआईआर का दूसरा चरण शुरू हो चुका था, जिसमें पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु और असम सहित 12 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के लगभग 51 करोड़ मतदाता शामिल हैं। इस फैसले पर सत्तारूढ़ भाजपा ने खुशी जताई है तो विपक्ष में इसको लेकर मायूसी है। भाजपा सांसद सुधांशु त्रिवेदी ने कहा कि कोर्ट स्पष्ट किया है कि स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित करने के लिए यह प्रक्रिया बिल्कुल आवश्यक थी। हाल के वर्षों में शहरीकरण, पलायन, डुप्लीकेशन और नए निवासियों के आने जैसे कारणों से मतदाता सूची में बड़े पैमाने पर नाम जोड़े और हटाए गए हैं। दूसरी तरफ जाने माने वकील प्रशांत भूषण ने इसे न्यायपालिका के लिए 'काला दिन' बताया है तो इस मामले के याचिकाकर्ता योगेंद्र यादव ने कहा कि उन्हें इस फ़ैसले से अचरज नहीं हुआ है। कोर्ट ने एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स की उस दलील को भी ख़ारिज कर दिया कि एसआईआर ने नागरिकता साबित करने का बोझ मतदाताओं पर डाल दिया। हालांकि कोर्ट ने यह भी दोहराया कि एसआईआर में स्वीकार किए जाने वाले दस्तावेज़ों के चयन में संतुलन बनाए रखना ज़रूरी होगा। दरअसल एसआईआर की आवश्यकता, वैधता और उसे सम्पन्न कराने के अधिकार पर तो कोई प्रश्नचिन्ह था ही, नहीं क्योंकि यह नियमित प्रक्रिया है। लेकिन सवाल चुनाव आयोग द्वारा इस प्रक्रिया को लागू करने के टाइमिंग, तरीके और मंशा पर उठ रहे हैं। इस सवाल का चुनाव आयोग के पास कोई जवाब नहीं है कि जब बिहार में एसआईआर शुरू किया गया, उसी वक्त बंगाल में भी यह क्यों नहीं कराया जा सकता था। क्योंकि उसे इतने बवाल का मुद्दा बनने दिया गया। इससे यही संदेश गया कि परोक्ष रूप से चुनाव आयोग भाजपा की मदद करना चाहता है। जबकि उसका काम सिर्फ निष्पक्ष चुनाव कराना है। बेहतर होता कि सुप्रीम कोर्ट इस बारे में आयोग को कोई स्पष्ट निर्देश देता कि कोई भी एसआईआर राज्य अथवा राष्ट्रीय चुनाव में एक साल बाकी रहते नहीं होना चाहिए, यानी कि इसके पहले समूची प्रक्रिया पूरी कर ली जानी चाहिए। ऐसा होगा तो विवाद होंगे ही नहीं और गैर भाजपा पार्टियों को भी संशय नहीं होगा कि एसआईआर का अघोषित उद्देश्य भाजपा को चुनाव जिताना है।

युद्ध से असुरक्षित आधी आबादी की चिंता

नजरिया

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी रह चुके हैं। केंद्रीय विश्वविद्यालय पंजाब में चेयर प्रोफेसर हैं।

आज युद्ध केवल सीमाओं, सेनाओं और राजनीतिक शक्तियों के बीच संघर्ष नहीं रह गए हैं। आज के युद्ध सीधे आम नागरिकों के जीवन को तबाह कर रहे हैं, और इस विनाश का सबसे गहरा प्रभाव महिलाओं और लड़कियों पर पड़ रहा है। बम, मिसाइल और गोलियाँ भेदभाव नहीं करते। वे सीधे अपना शिकार बनाते हैं, यह सच है। लेकिन एक बड़ा सच यह भी है कि युद्ध की सामाजिक, आर्थिक और मानवीय त्रासदी महिलाओं के लिए कहीं अधिक भयावह होती है। संयुक्त राष्ट्र और विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की रिपोर्टें बताती हैं कि आज दुनिया में युद्धों और हिंसक संघर्षों की संख्या 1946 के बाद सबसे अधिक है। लाखों महिलाएँ ऐसे क्षेत्रों में रह रही हैं जहाँ हर पल हिंसा, विस्थापन और मौत का खतरा मंडरा रहा है। आधुनिक युद्धों का स्वरूप बदल चुका है। अब लड़ाइयाँ दूरस्थ सीमाओं पर नहीं बल्कि शहरों, बस्तियों और आबादी वाले इलाकों में संघर्षरत हैं। इसका परिणाम यह है कि घर, स्कूल, अस्पताल और शरणस्थल तक सुरक्षित नहीं रह गए हैं।

इतने सारे रक्तपात व अस्थिर जीवन देखकर ऐसा लगता हैं कि आज मानों युद्ध और महिलाओं की दोहरी त्रासदी को भला समझता ही कौन है? युद्ध का सबसे बड़ा प्रभाव केवल जान-माल के नुकसान तक सीमित नहीं होता। महिलाओं और लड़कियों को युद्ध के दौरान कई स्तरों पर संकटों का सामना करना पड़ता है। उन्हें घर छोड़ना पड़ता है। शिक्षा और रोजगार छूट जाते हैं। स्वास्थ्य सेवाएँ ठप हो जाती हैं। यौन हिंसा का खतरा कई गुना बढ़ जाता है। जब किसी क्षेत्र में युद्ध शुरू होता है, तो सामाजिक संरचना टूटने लगती है। ऐसे समय में परिवारों की देखभाल की जिम्मेदारी अक्सर महिलाओं के कंधों पर आ जाती है। वे बच्चों, बुजुर्गों और घायल लोगों की देखभाल करती हैं, जबकि स्वयं भी भय, भूख और असुरक्षा के बीच जी रही होती हैं। किन्तु ऐसा देखा गया है कि विपरीत परिस्थितियों में भी युद्धग्रस्त क्षेत्रों में महिलाओं की भूमिका केवल पीड़ित की नहीं होती, बल्कि वे अपने परिवार और समुदाय को जीवित रखने की सबसे बड़ी ताकत भी बनती हैं। राजनीतिक निर्णयों और शांति वार्ताओं से अक्सर बाहर रखी जानी वाली महिलाओं के जीवन पर कोई बड़ा निर्णय जो लिया जाता है वह आज भी कई सवाल लिए हुए हैं कि उनकी सुरक्षा व जीवन गुणवत्ता का भविष्य आखिर क्या है?

आबादी वाले क्षेत्रों में युद्ध का बढ़ता खतरा संयुक्त राष्ट्र में भी चिंता का विषय बना रहता है. युद्धों का सबसे खतरनाक पहलू यह है कि अब संघर्ष सीधे आबादी वाले क्षेत्रों में हो रहे हैं। गाजा, यूक्रेन, सूडान, ईरान और लेबनान जैसे क्षेत्रों में घरों, अस्पतालों और स्कूलों पर हमले आम हो गए हैं। गाजा में हजारों महिलाएँ और लड़कियाँ हवाई हमलों और ड्रोन हमलों में मारी गईं। अस्पतालों और स्वास्थ्य केंद्रों के नष्ट होने से गर्भवती महिलाओं और नवजात शिशुओं की स्थिति बेहद गंभीर हो गई। कई महिलाएँ पर्याप्त चिकित्सा सहायता के बिना बच्चों को जन्म देने को मजबूर हुईं। सूडान में जारी गृहयुद्ध ने लाखों महिलाओं और बच्चों को विस्थापित कर दिया है, हम सब जानते हैं। शरणार्थी शिविरों में जीवन बेहद कठिन है, जहाँ भोजन, पानी और स्वास्थ्य सेवाओं की भारी कमी है। विस्थापन केवल घर खोना नहीं होता, बल्कि यह सुरक्षा, सम्मान और भविष्य खोने जैसा होता है।

दुनिया के युद्ध विशेषज्ञ अब ऐसा महसूस करने लगे हैं कि सबसे खतरनाक है यौन हिंसा। इसे एक सुनियोजित हथियार के रूप में भी देखा गया दुनिया में। युद्ध के दौरान महिलाओं के खिलाफ यौन हिंसा का इस्तेमाल अक्सर रणनीतिक हथियार के रूप में किया जाता है। बलात्कार, जबरन विवाह, यौन दासता और मानव तस्करी जैसे अपराधों का उद्देश्य केवल महिलाओं को नुकसान पहुँचाना नहीं, बल्कि पूरे समुदाय को डराना और तोड़ना होता है। सूडान, काँगो, म्यांमार और अन्य संघर्षग्रस्त क्षेत्रों में यौन हिंसा के मामलों में भारी वृद्धि दर्ज की गई है, जो कि चिंताजनक है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, युद्ध-संबंधी यौन हिंसा के हजारों मामले सामने आए हैं, लेकिन वास्तविक संख्या इससे कहीं अधिक हो सकती है क्योंकि सामाजिक भय और कलंक के कारण कई महिलाएँ शिकायत दर्ज नहीं करा पातीं। युद्ध क्षेत्रों में कानून व्यवस्था कमजोर हो जाती है और अपराधियों को दंड नहीं मिलता। यही दंडमुक्ति यौन हिंसा को और बढ़ावा देती है। महिलाओं के लिए यह केवल शारीरिक हिंसा नहीं बल्कि मानसिक और सामाजिक आघात भी होता है, जिसका असर पूरी जिंदगी रहता है। साथ ही कुछ और गहरी की बातें की जाएँ तो युद्ध केवल शरीर को घायल नहीं करता, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य को भी गहराई से प्रभावित करता है। लगातार बमबारी, विस्थापन और प्रियजनों की मौत महिलाओं और बच्चों में अवसाद, चिंता और पोस्ट-ट्रॉमैटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर जैसी समस्याएँ पैदा करती हैं। गाजा और यूक्रेन जैसे क्षेत्रों में लाखों महिलाएँ मानसिक आघात से गुजर रही हैं। लेकिन मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं तक उनकी पहुँच बेहद सीमित है। युद्ध के कारण अस्पतालों के नष्ट होने और डॉक्टरों की कमी से महिलाओं को सामान्य स्वास्थ्य सुविधाएँ भी नहीं मिल पा रही हैं। मासिक धर्म स्वच्छता जैसी बुनियादी जरूरतें भी युद्धग्रस्त क्षेत्रों में संकट बन जाती हैं। कई महिलाएँ असुरक्षित परिस्थितियों में जीवन जीने को मजबूर होती हैं, जहाँ साफ पानी, सैनिटरी पैड और निजी स्थान तक उपलब्ध नहीं होते।

स्वास्थ्य पर असर है लेकिन साथ ही शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता पर असर जो हुआ है उसका आंकलन अपने-अपने तरीके से किए जा रहे हैं। विडंबना यही है कि युद्ध लड़कियों से उनका भविष्य छीन लेता है। स्कूल नष्ट हो जाते हैं या सुरक्षा कारणों से बंद हो जाते हैं, तो सबसे पहले लड़कियों की शिक्षा प्रभावित होती है। कई परिवार आर्थिक संकट के कारण लड़कियों की पढ़ाई छुड़वा देते हैं। अफगानिस्तान में तालिबान द्वारा लड़कियों की माध्यमिक शिक्षा पर प्रतिबंध इसका गंभीर उदाहरण है। वहीं यूक्रेन और गाजा में युद्ध के कारण लाखों बच्चे स्कूलों से दूर हो गए हैं। शिक्षा से वंचित लड़कियाँ भविष्य में आर्थिक और सामाजिक रूप से और अधिक कमजोर हो जाती हैं। अभी अमेरिका-इस्त्रायल-ईरान के युद्ध में बच्चियों के स्कूल को खून से लथपथ कर दिया गया। महिलाओं ने रोजगार खोया। आय खो दी। हम जानते हैं कि महिलाएँ अक्सर असंगठित और कम वेतन वाले क्षेत्रों में काम करती हैं, जो युद्ध के दौरान सबसे पहले प्रभावित होते हैं। विस्थापन के कारण वे अपनी संपत्ति, बचत और सामाजिक नेटवर्क भी खो देती हैं।

इतिहास गवाह है जब महिलाओं को शांति प्रक्रियाओं में शामिल किया जाता है, तो शांति अधिक टिकाऊ और समावेशी होती है। कोलम्बिया की शांति प्रक्रिया इसका महत्वपूर्ण उदाहरण है, जहाँ महिलाओं की सक्रिय भागीदारी से लैंगिक समानता को शांति समझौते का हिस्सा बनाया गया। इसके बावजूद दुनिया भर में औपचारिक शांति वार्ताओं में महिलाओं की भागीदारी बेहद कम है। वैश्विक स्तर पर महिलाएँ केवल कुछ प्रतिशत वार्ताकार और मध्यस्थ हैं। जो महिलाएँ युद्ध के दौरान समुदायों को बचाने का काम करती हैं, उन्हें ही युद्ध में तबाह होने की ख़बरें विचलित करती हैं। जो महिलाएँ भोजन वितरण, चिकित्सा सहायता, शिक्षा और सामुदायिक पुनर्निर्माण में अहम भूमिका निभाती हैं उन्हें यतीम होने की खबर कितनी कारुणिक हैं?

युद्धों की तरफ भागते देश यह समझ लें कि महिलाओं और लड़कियों की सुरक्षा केवल मानवीय मुद्दा नहीं बल्कि वैश्विक शांति और न्याय का प्रश्न है। युद्ध पहले से मौजूद लैंगिक असमानताओं को और गहरा कर देता है। यदि दुनिया वास्तव में स्थायी शांति चाहती है, तो महिलाओं को केवल पीड़ित के रूप में नहीं बल्कि परिवर्तन और पुनर्निर्माण की शक्ति के रूप में देखना होगा। उन्हें निर्णय प्रक्रिया, शांति वार्ताओं और पुनर्बहाली योजनाओं के केंद्र में रखना आवश्यक है। युद्ध की वास्तविक कीमत चुकाती आदि आबादी जिनकी आवाज़ सबसे कम सुनी जा रही है, आज जरूरत केवल युद्ध रोकने की नहीं, बल्कि ऐसी विश्व व्यवस्था बनाने की है जहाँ महिलाओं की सुरक्षा, सम्मान और भागीदारी को प्राथमिकता दी जाए। वरना स्थायी शांति और मानवीय भविष्य की सबसे मजबूत नींव हिल जाएगी और हम केवल महिलाओं के लिए झूठे वादे के साथ जी रहे होंगे। युद्ध से असुरक्षित आधी आबादी की चिंता इसलिए नितांत ज़रूरी हो गया है चाहे जिस भी कीमत पर उन्हें सुरक्षित करना पड़े।

रोमांच, रहस्य और मौत के बीच पर्वतारोहियों का सफर

हर साल जहां कुछ पर्वतारोही एवरेस्ट फतह करने के अपने इरादों में सफल हो जाते हैं तो कई बर्फीले पहाड़ों की रहस्यमयी कब्रगाह में ही दफन हो जाते हैं। वर्ष 2014-15 के दौरान तो तीन दर्जन से भी ज्यादा लोगों ने एवरेस्ट पर चढ़ाई करते हुए जान गंवाई थी। इतिहास पर नजर डालें तो एवरेस्ट पर चढ़ाई करने वाले हर 100 पर्वतारोहियों में से 4 की मौत हो जाती है। माउंट एवरेस्ट को फतह करना पर्वतारोहियों के लिए जहां रहस्य और रोमांच से भरपूर होता है, वहीं दीगर सच यह भी है कि यह एक ऐसा सफर है, जहां मौत हर कदम पर बांहें फैलाए खड़ी रहती है और इस सफर के लिए फौलाद जैसे कलेजे की जरूरत होती है। बस मामूली सी चूक हुई और जिंदगी खत्म। यही कारण है कि इसे धरती के ऊपर पाताल की संज्ञा भी दी जाती रही है। हिमालय पर इस सबसे ऊंचे शिखर का पता 1852 में लगा था। तब भारत में जॉर्ज एवरेस्ट गर्वनर जनरल थे और इस शिखर का नामकरण उन्हीं के नाम पर किया गया। 1921 में पहली बार माउंट एवरेस्ट का रास्ता खोजा गया और तभी से एवरेस्ट फतह करने के प्रयास निरन्तर किए जाते रहे हैं। 1922 में जॉर्ज मैलोरी, एडवर्ड नॉर्टन तथा हॉवर्ड सोमेरवेल ने पहली बार एवरेस्ट पर चढ़ाई का प्रयास किया और वे 8 हजार मीटर की ऊंचाई तक पहुंचने में सफल भी हुए। 1924 में जॉर्ज मैलोरी तथा एंड्रू इरविन ने एवरेस्ट पर चढ़ाई का प्रयास किया किन्तु दोनों ही बर्फीले पहाड़ों में कहीं रहस्यमयी तरीके से गायब हो गए। 29 मई 1953 को पहली बार जब न्यूजीलैंड के सर एडमंड हिलेरी और तेनजिंग नोर्गे ने एवरेस्ट को फतेह किया तो पूरी दुनिया में खलबली मच गई क्योंकि उससे पहले भी इसकी कोशिशें तो बहुत हुई किन्तु सफल कोई नहीं हुआ और 1953 से

अंतर्राष्ट्रीय एवरेस्ट दिवस पर विशेष

योगेश कुमार गोयल

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

एवरेस्ट दुनिया का सबसे ऊंचा पर्वत शिखर है, जिसकी ऊंचाई 8848 मीटर है। दुनिया के इस सबसे ऊंचे पर्वत शिखर को आज से 73 वर्ष पूर्व 29 मई 1953 को सर एडमंड हिलेरी और तेनजिंग नोर्गे ने फतह किया था। उनकी जीत के उपलक्ष्य में ही उनकी याद में प्रतिवर्ष 29 मई को अंतर्राष्ट्रीय माउंट एवरेस्ट दिवस मनाया जाता है, जिसे 'अंतर्राष्ट्रीय सागरमाथा दिवस' के रूप में भी जाना जाता है। पहली बार माउंट एवरेस्ट दिवस सर एडमंड हिलेरी की मृत्यु के बाद 2008 में मनाया गया था, तभी से यह दिवस भारत, नेपाल और न्यूजीलैंड में 29 मई को मनाया जाता रहा है। एवरेस्ट की चोटी नेपाल और चीन (तिब्बत) की सीमा पर स्थित है। सही मायनों में यह दिवस पर्वतारोहियों को सम्मानित करने के लिए एक वार्षिक कार्यक्रम है। यह दिवस पर्वतारोहियों को एवरेस्ट की चोटी फतह करने के लिए प्रेरित करता है। अंतर्राष्ट्रीय माउंट एवरेस्ट दिवस केवल एडमंड हिलेरी और तेनजिंग शेरपा की विजय का जश्न मनाने का ही दिन नहीं है बल्कि यह पहाड़ पर चढ़ने के खतरों को बताने और उन लोगों को श्रद्धांजलि देने का भी दिन है, जिन्होंने इस सफर के दौरान अपने प्राण गंवा दिए।

हर साल जहां कुछ पर्वतारोही एवरेस्ट फतह करने के अपने इरादों में सफल हो जाते हैं तो कई बर्फीले पहाड़ों की रहस्यमयी कब्रगाह में ही दफन हो जाते हैं। वर्ष 2014-15 के दौरान तो तीन दर्जन से भी ज्यादा लोगों ने एवरेस्ट पर चढ़ाई करते हुए जान गंवाई थी। इतिहास पर नजर डालें तो एवरेस्ट पर चढ़ाई करने वाले हर 100 पर्वतारोहियों में से 4 की मौत हो जाती है। माउंट एवरेस्ट को फतह करना पर्वतारोहियों के लिए जहां रहस्य और रोमांच से भरपूर होता है, वहीं दीगर सच यह भी है कि यह एक ऐसा सफर है, जहां मौत हर कदम पर बांहें फैलाए खड़ी रहती है और इस सफर के लिए फौलाद जैसे कलेजे की जरूरत होती है। बस मामूली सी चूक हुई और जिंदगी खत्म। यही कारण है कि इसे धरती के ऊपर पाताल की संज्ञा भी दी जाती रही है। हिमालय पर इस सबसे ऊंचे शिखर का पता 1852 में लगा था। तब भारत में जॉर्ज एवरेस्ट गर्वनर जनरल थे और इस शिखर का नामकरण उन्हीं के नाम पर किया गया। 1921 में पहली बार माउंट एवरेस्ट का रास्ता खोजा गया और तभी से एवरेस्ट फतह करने के प्रयास निरन्तर किए जाते रहे हैं। 1922 में जॉर्ज मैलोरी, एडवर्ड नॉर्टन तथा हॉवर्ड सोमेरवेल ने पहली बार एवरेस्ट पर चढ़ाई का प्रयास किया और वे 8 हजार मीटर की ऊंचाई तक पहुंचने में सफल भी हुए। 1924 में जॉर्ज मैलोरी तथा एंड्रू इरविन ने एवरेस्ट पर चढ़ाई का प्रयास किया किन्तु दोनों ही बर्फीले पहाड़ों में कहीं रहस्यमयी तरीके से गायब हो गए। 29 मई 1953 को पहली बार जब न्यूजीलैंड के सर एडमंड हिलेरी और तेनजिंग नोर्गे ने एवरेस्ट को फतेह किया तो पूरी दुनिया में खलबली मच गई क्योंकि उससे पहले भी इसकी कोशिशें तो बहुत हुई किन्तु सफल कोई नहीं हुआ और 1953 से पहले इन प्रयासों के दौरान अनगनित लोग एवरेस्ट की ऊंचाईयों पर ही बर्फ में दफन होते रहे। अभी तक एवरेस्ट के दुर्गम रास्तों से सैंकड़ों ऐसे शव बरामद हो चुके हैं, जिनकी पहचान तक नहीं हो पाई और इनमें से बहुत सारे शव तो दशकों पुराने हैं, जो भौगोलीय परिस्थितियों के चलते सुरक्षित रहे। हर साल गर्मी के मौसम में सैकड़ों पर्वतारोही हिमालय की चोटी को फतह करने की कोशिश में चढ़ाई करते हैं और एवरेस्ट की चढ़ाई के दौरान पर्वताराहियों की मौत की बढ़ती घटनाओं से चिंतित होकर कुछ ही महीनों पहले नेपाल ने माउंट एवरेस्ट सहित सभी पर्वतों की चढ़ाई के दौरान दुर्घटना कम करने और पर्वतारोहण को सुरक्षित बनाने तथा नेपाल के पर्वतों पर मौत की घटनाओं पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से एकल पर्वतारोहण पर रोक लगा दी है तथा नए नियमों के तहत विदेशी पर्वतारोहियों को अब अपने साथ एक गाइड रखना भी अनिवार्य होगा। पिछले कुछ वर्षों के दौरान कई भारतीय पर्वतारोही भी एवरेस्ट फतह अभियान के दौरान मौत की नींद सो चुके हैं। अधिकांश की मौत चढ़ाई के दौरान संतुलन बिगड़ने पर खाईयों में गिरने, हिम दरारों में समाने, हिमस्खलन या ऑक्सीजन की कमी के चलते दम घुटने से होती हैं। पृथ्वी की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट तक पहुंचने के लिए पर्वतारोहियों को अनेक तरह की बाधाओं को पार करना पड़ता है। कई बार चढ़ाई के दौरान ऐसे मुश्किल हालात पैदा हो जाते हैं कि जांबाज नेपाली शेरपाओं के भी बर्फीले पर्वतों पर पसीने छूट जाते हैं। करीब 8848 मीटर ऊंचे इस शिखर की खड़ी चढ़ाई के दौरान रास्ते में कई ऐसे दर्रे आते हैं, जिनमें से कुछ की गहराई तो करीब 300-400 फुट है और ऐसे दर्रों को प्रायः सीढ़ियां जोड़कर पार किया जाता है, जो बेहद डरावना और मुश्किलों से भरा काम है क्योंकि इन दरारों के बीच जो भी चीज गिरी, वो कभी वापस नहीं लौट सकती। वैसे भी एक बार अगर इन दर्रों को पार करके निकल भी गए तो लौटते समय पुनः इन्हीं दरारों को पार करना पड़ता है। यह चढ़ाई इतनी खतरनाक होती है कि हवा के एक तेज झोंके के साथ ही पर्वतारोही संतुलन खोकर गहरी खाई में दफन हो सकता है। 1965 में भारतीय सेना के कैप्टन अवतार सिंह चीमा माउंट एवरेस्ट को फतह करने वाले भारतीय पुरुष थे जबकि माउंट एवरेस्ट की चोटी पर पहुंचने वाली पहली भारतीय महिला बछेंद्री पाल हैं, जिन्होंने 20 वर्ष की आयु में 23 मई 1984 को यह ऐतिहासिक सफलता हासिल की थी और उसी के बाद विशेषकर उन महिला पर्वतारोहियों के लिए पहाड़ों के रास्ते खुल गए, जो पहाड़ों से दोस्ती करने का सपना तो देखती थी किन्तु एवरेस्ट की दुर्गम चढ़ाई के लिए हिम्मत नहीं जुटा पाती थी। बछेंद्री पाल को 1984 में एवरेस्ट के लिए भारत के चौथे अभियान एवरेस्ट-84 के लिए चुना गया था, जिसमें 11 पुरूषों के अलावा 6 महिलाएं भी शामिल थी और वह अकेली महिला थी, जो चोटी पर झंडा गाड़ने में सफल हुई थी। एवरेस्ट चढ़ने वाली भारत की पहली महिला पर्वतारोही के तौर पर वर्ष 1990 में बछेंद्री का नाम गिनीज बुक में शामिल किया गया।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'

लेखक व्यंग्यकार हैं।

हाँ साहब, हम बेरोजगार युवा कॉकरोच हैं

सुबह के ठीक सवा छह बजे थे। कबीर जो रात को एक अदद बेरोजगार, रील स्क्रॉलर और जिंदगी से हारा हुआ इंसान बनकर सोया था, सुबह उठते ही एक चमकीले कत्थई कॉकरोच में तब्दील हो चुका था। उसने करवट लेने की कोशिश की, मगर उसकी पीठ का वह नया कड़ा कवच जमीन से चिपक गया। यह ठीक वैसा ही था जैसे कोई मिडिल क्लास लड़का अचानक से किसी कॉरपोरेट कंपनी के एग्रीमेंट में फंस जाए, जहां से बाहर निकलने का रास्ता सीधे एचआर के केबिन की तरफ जाता है, मगर रास्ता हमेशा बंद मिलता है।

कमरे का दरवाजा खुला और मां चाय का कप लेकर अंदर आईं। उन्होंने बिस्तर पर एक बड़े से कीड़े को छटपटाते देखा तो उनकी चीख निकल गई। कबीर कहना चाहता था कि मां, डरो मत, यह मैं ही हूं, आपका अपना कबीर, जो कल रात तक सरकारी नौकरी के फॉर्म भरने की फीस मांग रहा था। मगर उसके मुंह से सिर्फ एक अजीब सी सरसराहट निकली जो किसी बिना नेटवर्क वाले फोन के स्पीकर जैसी थी। मां ने तुरंत चाय का कप साइड में रखा और हाथ में झाड़ू थाम ली।

वह लड़का जो कल तक घर का सबसे बड़ा निकम्मा माना जाता था, आज अचानक सबसे बड़ा खतरा बन चुका था। कबीर अपनी छह टांगों के सहारे तेजी से ड्रेसिंग टेबल के नीचे छुपा। वहां पड़े पुराने अखबारों और धूल के बीच उसे लगा कि समाज में उसकी हैसियत पहले भी तो यही थी। बेरोजगार युवक भी तो एक कॉकरोच ही होता है जो हर किसी की नजरों से बचकर कोने में पड़ा रहता है, जिसका होना या न होना किसी के बजट को प्रभावित नहीं करता।

दोपहर होते-होते कबीर को अपनी नई जिंदगी का पूरा गणित समझ आ गया था। कॉकरोच होना और इस दौर का युवा होना, दोनों में कोई खास अंतर नहीं है। कबीर दीवार के सहारे रेंगते हुए ऊपर चढ़ा ताकि वह अपनी मां की ममता को एक बार फिर से परख सके। मां फोन पर अपनी सहेली से कह रही थीं कि पता नहीं कबीर सुबह से कहां गायब है, उसका फोन भी यहीं पड़ा है और ऊपर से घर में इतने बड़े-बड़े कीड़े निकल आए हैं, कल ही लक्ष्मण रेखा लाकर पूरे घर में खींचनी पड़ेगी।

शाम ढली तो घर में कबीर के पिताजी की एंट्री हुई। उन्होंने जैसे ही लिविंग रूम की दीवार पर कबीर को रेंगते देखा, उनका पारा सातवें आसमान पर पहुंच गया। कबीर ने अपने एंटीना हिलाया, मानो वह अपने पिता को गुड इवनिंग कह रहा हो, मगर पिताजी को उसमें सिर्फ एक गंदगी और अनुशासनहीनता दिखाई दी। उन्होंने पैरों से अपनी भारी, चमड़े की बाटा वाली चप्पल निकाली। वह चप्पल जिसे देखकर कबीर बचपन में पढ़ाई करने बैठ जाता था, आज उसकी मौत का फरमान बनकर हवा में लहरा रही थी। कबीर ने भागने की कोशिश की। वह सोफे के नीचे गया, वह टीवी कैबिनेट के पीछे छुपा, मगर एक कॉकरोच की रफ्तार चाहे जितनी तेज हो, एक हताश और गुस्से से भरे मध्यमवर्गीय पिता के प्रहार से तेज नहीं हो सकती। कबीर को लगा कि यह चप्पल असल में वह व्यवस्था है जो हर उस सिर को कुचल देना चाहती है जो तय दायरे से बाहर निकलने की जुर्रत करता है।

मौत का वह आखिरी क्षण बेहद धीमा था। पिताजी ने पूरी ताकत से चप्पल को दीवार पर दे मारा जहां कबीर अपनी जिंदगी की आखिरी सांसें गिन रहा था। चप्पल का वह भारी तला जब उसकी पीठ के कड़े खोल से टकराया, तो एक तीखी चरचराहट की आवाज आई। कबीर का वह खोल जो उसे दुनिया की नजरों से बचाता था, एक झटके में बिखर गया। कबीर को लगा कि यह वही दर्द है जब ग्रेजुएशन की डिग्री हाथ में होने के बाद भी कोई आपको नाकारा कह देता है।

दीवार पर अब सिर्फ एक कत्थई रंग का धब्बा बाकी था। मां ने तुरंत पानी का पोछा मंगाया और उस जगह को ऐसे साफ कर दिया जैसे वहां कभी कुछ था ही नहीं। पिताजी ने राहत की सांस ली और चप्पल को वापस पैर में डालते हुए कहा कि चलो, घर की एक गंदगी साफ हुई, वरना यह बीमारी फैला देता। तभी कबीर के मोबाइल की स्क्रीन अचानक जल उठी। उस पर एक नया नोटिफिकेशन चमका। वह एक नामी कंपनी का ईमेल था जिसमें लिखा था कि प्रिय कबीर, हमें यह बताते हुए बेहद खुशी हो रही है कि आपका चयन हमारी कंपनी में सीनियर मैनेजर के पद पर हो गया है, कृपया कल सुबह ज्वाइन करें। मोबाइल की वह रोशनी उस सूनी दीवार पर पड़ रही थी जहां से कबीर का वजूद अभी-अभी पोंछा गया था। कमरा बिल्कुल शांत था, बस स्क्रीन पर वह ऑफर लेटर बार-बार ब्लिंक कर रहा था, जिसे पढ़ने वाला अब इस दुनिया के किसी भी कोने, किसी भी झाड़ू या किसी भी चप्पल की पहुंच से बहुत दूर जा चुका था।

सरोकार

विष्णु बैरागी

लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

वीआईपी सुरक्षा: मंत्री को लोगों की फटकार

दादा, मनासा विधान सभा क्षेत्र से चुन कर आए थे। सो, उनके दौरे, मनासा विधान सभा क्षेत्र में ही अधिक होते थे। वे जब भी दौरे पर आते, तब पुलिस और सरकारी अधिकारियों का अच्छा-खासा लवाजमा, पाँच-सात गाड़ियों में उनके साथ चलता था। गृह नगर में आते ही उन्हें डाक बंगले पर ले जाया जाता जहाँ उन्हें 'गार्ड ऑफ ऑनर' दिया जाता। ये दोनों ही बातें मुझे कभी अच्छी नहीं लगीं। आज भी नहीं लगतीं। सुरक्षा तथा प्रशासकीय सहायता के नाम पर साथ में बना हुआ पुलिस और प्रशासकीय अधिकारियों का अमला मुझे, जन-प्रतिनिधि और उसके मतदाताओं के बीच ऐसा अप्रिय व्यवधान लगता है जो कहीं न कहीं मतदाता और जन-प्रतिनिधि के बीच दूरी बढ़ाता है और अन्ततः संवादहीनता की स्थिति बना देता है। कल तक जो जन-प्रतिनिधि, 'अपने लोगों' से घिरा रहकर, उनके दु:ख-सुख की बातें सुनता/करता था, पता ही नहीं चलता कि कब वह उन सबसे दूर हो कर सरकारी अमले का कैदी बन गया है और उस तक वे ही बातें पहुँच रही हैं जो सरकारी अमला पहुँचा रहा है। मेरा मानना रहा है कि अपने ही मतदाताओं के बीच किसी जन-प्रतिनिधि को भला सुरक्षा की आवश्यकता क्यों कर होनी चाहिए? इसी तरह, 'गार्ड ऑफ ऑनर' को मैं अंग्रेजी साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद की घिनौनी, परम्परा मानता हूँ। दरिद्रता और विपन्नता की हमारी पारिवारिक पृष्ठभूमि में तो ये दोनों बातें मुझे कभी भी हजम नहीं हुईं।

मनुष्य क्या खोजता/चाहता है? शायद वही, जो उसके पास नहीं होता। मनुष्य की सारी चेष्टाओं और मानव मनोविज्ञान के मूल में यही अवधारणा होगी सम्भवतः। शायद इसी कारण लोग, कोई चालीस बरस पहले जिस बात की माँग किया करते थे, आज उसी से चिढ़ रहे हैं।

वीआईपी सुरक्षा को लेकर चारों ओर मचे हल्ले पर ध्यान गया तो यही बात मन में आई और उसके साथ ही साथ आ गई, कोई चालीस बरस पहले हुई घटना।

बात 1969 से 1972 के बीच की है। तब दादा बालकवि बैरागी, मध्य प्रदेश सरकार में राज्य मंत्री थे। 1968 में मैंने बी.ए. कर लिया था। मैदानी पत्रकारिता कर रहा था। लेकिन पत्रकारिता से पेट भर पाना मुमकिन नहीं था। सो, काम-काज भी तलाश रहा था। इसी दौरान बस कंडक्टरी का अस्थायी काम मिल गया था। चूँकि पत्रकारिता, नौकरी नहीं थी सो बड़े मजे से दोनों काम कर पा रहा था। लेकिन दादा जब भी मन्दसौर जिले के दौरे पर आते, मैं उनके साथ हो लेता। यह संस्मरण, दादा के राज्य मंत्री बनने के शुरुआती समय का है।

दादा, मनासा विधान सभा क्षेत्र से चुन कर आए थे। सो, उनके दौरे, मनासा विधान सभा क्षेत्र में ही अधिक होते थे। वे जब भी दौरे पर आते, तब पुलिस और सरकारी अधिकारियों का अच्छा-खासा लवाजमा, पाँच-सात गाड़ियों में उनके साथ चलता था। गृह नगर में आते ही उन्हें डाक बंगले पर ले जाया जाता जहाँ उन्हें 'गार्ड ऑफ ऑनर' दिया जाता। ये दोनों ही बातें मुझे कभी अच्छी नहीं लगीं। आज भी नहीं लगतीं। सुरक्षा तथा प्रशासकीय सहायता के नाम पर साथ में बना हुआ पुलिस और प्रशासकीय अधिकारियों का अमला मुझे, जन-प्रतिनिधि और उसके मतदाताओं के बीच ऐसा अप्रिय व्यवधान लगता है जो कहीं न कहीं मतदाता और जन-प्रतिनिधि के बीच दूरी बढ़ाता है और अन्ततः सम्वादहीनता की स्थिति बना देता है। कल तक जो जन-प्रतिनिधि, 'अपने लोगों' से घिरा रहकर, उनके दुःख-सुख की बातें सुनता/करता था, पता ही नहीं चलता कि कब वह उन सबसे दूर हो कर सरकारी अमले का कैदी बन गया है और उस तक वे ही बातें पहुँच रही हैं जो सरकारी अमला पहुँचा रहा है। मेरा मानना रहा है कि अपने ही मतदाताओं के बीच किसी जन-प्रतिनिधि को भला सुरक्षा की आवश्यकता क्यों कर होनी चाहिए? इसी तरह, 'गार्ड ऑफ ऑनर' को मैं अंग्रेजी साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद की घिनौनी, परम्परा मानता हूँ। दरिद्रता और विपन्नता की हमारी पारिवारिक पृष्ठभूमि में तो ये दोनों बातें मुझे कभी भी हजम नहीं हुईं।

मुझे जब-जब भी मौका मिलता, अपनी ये दोनों बातें दादा के सामने रखता और आग्रह करता कि वे इन दोनों बातों से बचें। दादा हर बार मुझसे सहमत हुए लेकिन हर बार सूचित करते कि इस लवाजमे की माँग उन्होंने कभी नहीं की। ऐसे ही एक दौरे के समय मैं कुछ अधिक ही अड़ गया। मेरी बात का 'मान' रखते हुए उन्होंने कलेक्टर और पुलिस अधीक्षक को बुलाया और कहा कि अब से वे न तो कहीं 'गार्ड ऑफ ऑनर' लेंगे और न ही उनके साथ सरकारी लवाजमा जाएगा। दोनों अधिकारियों ने विनम्रतापूर्वक कहा कि 'गार्ड ऑफ ऑनर' वाली बात तो 'मंत्रीजी की व्यक्तिगत इच्छा' पर निर्भर रहती है इसलिए इस दादा की इस इच्छा का पालन तो तत्काल प्रभाव से किया जा रहा है किन्तु सरकारी अमले के मामले में उन्होंने अत्यन्त विनम्रतापूर्वक यह कह कर क्षमा माँग ली कि इस मामले में वे 'शासनादेश' से बँधे हुए हैं। थोड़ी-बहुत खींचतान के बात तय हुआ कि, कुछ अधिकारी तो दादा के साथ रहेंगे ही रहेंगे किन्तु संख्या में इतने ही होंगे कि एक सरकारी गाड़ी में समा जाएँ। याने, दादा के दौरे में, सरकारी अमले के नाम पर अब कुल-जमा एक गाड़ी रहेगी। दादा ने मेरी ओर कुछ इस तरह से देखा मानो, मचले हुए किसी बच्चे को उसका मनचाहा खिलौना थमा कर पूछ रहे हों - 'बस! अब तो खुश?' मैंने विजयी भाव और मुख-मुद्रा में, इतरा कर सहमति में इस तरह मुण्डी हिलाई मानो उनसे सहमत होकर मैं उन्हें उपकृत कर रहा होऊँ।

लेकिन इसके बाद जो हुआ, उसने मुझे मानो औंधे मुँह धरती पर पटक दिया।

नई व्यवस्था के ठीक बाद वाले पहले दिन दादा जिस-जिस भी गाँव में गए, प्रत्येक गाँव में उन्हें उलाहने सुनने पड़े। बुजुर्गों ने अधिकारपूर्वक उन्हें डाँटा-डपटा, नसीहत दी तो हमउम्र और नौजवान कार्यकर्ताओं ने नाराजी तथा असन्तोष जताया। शब्दावली भले ही अलग-अलग रही किन्तु मन्तव्य एक ही था - 'यह आना भी कोई आना हुआ? कोई मंत्री ऐसे आता है भला? आप तो वैसे ही आ गए जैसे कि चुनावों के दिनों में, वोट माँगने आते थे। अब तो आप उम्मीदवार नहीं हो। अब तो हमने आपको मंत्री बनवा दिया है। आपको मंत्री की तरह आना चाहिए। लोगों को लगना चाहिए कि उनके गाँव में मंत्री आया है। मंत्री के साथ दस-बीस अफसर, पुलिस के जवान और सरकारी जीपों का लाव-लश्कर हो, तभी लगता है कि गाँव में कोई मंत्री आया है।' अपने-अपने गाँव से 'मंत्रीजी' को विदा करते हुए सबने मानो हिदायत दी - 'आज आ गए सो आ गए। लेकिन आगे से, ऐसे 'सूखे-सूखे' मत आना। बाकी गाँवों की बात नहीं करते, बस! हमारे गाँव में ऐसे मत आना। आपको भले ही अपनी इज्जत की फिकर नहीं हो किन्तु 'हमारा आदमी' मंत्री बना है। इसलिए 'हमारी इज्जत की फिकर' आपको करनी चाहिए।'

ऐसे प्रत्येक उलाहने, प्रत्येक नसीहत के समय दादा ने मेरी ओर देखा। उनकी नजरों में सवाल और उपहास नहीं, मेरे प्रति दया-ममता और 'अपने लोगों' के प्रति करुणा थी। लोगों का यह आग्रह उन्हें भावाकुल भी करता रहा। वे सब, उन्हें मंत्री बनवानेवाले उनके तमाम मतदाता, दादा के सम्मान में अपना सम्मान देखना चाह रहे थे।

आज जब वीआईपी सुरक्षा को लेकर मचे बवाल को देखता/पढ़ता/सुनता हूँ तो मन अकुलाहट और व्याकुलता से भर आता है। हम कहाँ से चले थे और कहाँ आ गए हैं? जो लोग 'अपने आदमी' के आसपास के सरकारी लवाजमे और लाव-लश्कर में अपना महत्व अनुभव करते थे, वे ही लोग आज उसी 'अपने आदमी' को, 'अपने जैसा' देखना चाह रहे हैं।

लोगों की चाहत में इस बदलाव के कारण कहाँ हैं - लोगों में ही या लोगों के 'अपने आदमी' में आ गई मगरूरी में?

बेटे के नाम माँ का पत्र

डॉ.निमित ओझा

(मूल गुजराती कहानी का कुसुम जैन शाजापुर द्वारा किया गया हिंदी भावानुवाद)

निराशा हो तो बसंत की प्रतीक्षा करना

गांधी-बोध नेहरु में गहरे तक समाया था, अनेक विषयों पर विपरीत राय रखने के बावजूद गांधी कहते थे, मेरे बाद जवाहर मेरी भाषा बोलेंगे। मैं नींद की गोद में जाऊं उसके पहले जिस प्यारे जंगल कर्मक्षेत्र की मीलों लम्बी यात्रा करना है वह, बहुत ही गहरा और लम्बा है। राबर्ट फ्रास्ट की कविता की ये पंक्तियां जो नेहरु की टेबल पर रखे नोटपेड पर लिखी थीं, वे कितना अधिक करना चाहते थे उसकी बानगी हैं। अपनी बेटी इंदिरा को जेल से लिखे गए पत्रों में दुनियाभर के अनेक कवियों से परिचित कराते हैं। प्रसिद्ध कवि अज्ञेय अपने कविता संकलन 'प्रजेंट डे एंड अदर पोयमस' की भूमिका नेहरु से लिखवाते हैं, राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर अपनी पुस्तक 'संस्कृति के चार अध्याय' की भूमिका लिखवाते हैं। भूमिका में वे लिखते हैं 'संस्कृति किसी समाज या राष्ट्र का प्रतिबिम्ब होती है यह मनुष्य के व्यवहार, सोच, नैतिक मूल्यों और जीवन शैली को आकार देती है, यह हमें पहचान, एकता और विरासत प्रदान करती है।

प्रिय बेटा!

जब तक यह पत्र तुम्हारे पास पहुंचेगा, तू इस पत्र की भावना व संदेश को समझने की स्थिति में आ गया होगा। मुझे विश्वास है कि तू इतना बुद्धिमान और परिपक्व तो है ही कि मेरी बात समझ सकता है। प्रत्येक लाइन ध्यान से पढना और समझने का प्रयत्न करना।

पतझड़ में सूखे और बिना पत्तो वाले पेड़ को देख कर कोई पेड़ निराश नही होता। स्वयं का खराब समय समझने के बाद वह तनाव में आए बिना वह अडिग खड़ा रह कर बसंत के आने की प्रतीक्षा करता है। क्योंकि उसे ऋतु व उसके परिवर्तन पर पूरा भरोसा है कि समय बदलेगा, बसंत आएगा और मृतप्राय पेड़ पर नई कोपले फूटेगीं और वह फिर हरा भरा हो जाएगा। बसंत लाने के लिए कोई वृक्ष किसी के साथ जंग नही लडता। वह आत्महत्या नही, समर्पण करता है।

मेरे प्यारे बेटे! जब तुझे ऐसा लगे कि तेरी आत्मा का कोई टुकड़ा दर रोज मृत्यु को प्राप्त कर रहा है तो बसंत की प्रतीक्षा करना। निश्चित ही कोई चमत्कार होगा और कुछ दिव्य? और भव्य अंकुरित होगा। तुझे डर है कि जीवन में आगे तू क्या करेगा? तेरा जीवन व्यर्थ है, तू किसी काम का नही तो बेटा! जीवन एक जंग है। मुझे और

तेरे पप्पा को अभी तक पता नही कि हमनें क्या किया, क्या कर रहे है और आगे क्या करेगें। जीवन ऐसा ही है बेटा- अनिश्चित, अंधकारमय और अनिर्धारित। यहाँ कुछ भी पूर्व निर्धारित नहीं है। मुझे इतना ही कहना है कि कुदरत से मिली जिन्दगी पूरी जीना है, इसे नष्ट नहीं करना है। जीवन की गाड़ी का भी यही नियम? है।खराब होने पर उसे फेकते नही बल्कि रिपेयर करते है, और वह फिर सरपट दौड़ने लगती है। तुझे अभी लम्बा जीवन जीना है। किसी भी स्टेशन पर ट्रेन लम्बे समय तक नहीं रुकती। कोई स्टेशन कायमी नही, कोई स्वाद स्थाई नहीं, इसलिए सबका आनंद लो। घबरा कर उतरने की जल्दी मत करना।

तूने कहा कि - जिंदगी में अब कोई मजा नही तो तू फुटपाथ पर खेलने वाले बच्चों को देखना, जिनके पास खाने के लिए पर्याप्त भोजन नहीं, पीने को शुद्ध पानी नहीं, पैरों में चप्पल नहीं, पर्याप्त वस्त्र नहीं, घर नहीं, फिर भी मस्ती से भरे खेलते रहते हैं। भविष्य की चिंता किए बगैर जो मिला उसमे खुश रह कर आगे बढ़ते हैं। जो अपने को नहीं आता, वह उनको आता है। तू उनके साथ अपनी तुलना करना और ईश्वर से मिले असंख्य आशीर्वादो की गिनती करना और ईश्वर को धन्यवाद देना। यह जीवन ईश्वर का अमूल्य वरदान है। तकलीफ, दुख, और निराशा देखोगे तो जीवन जीने लायक नहीं रहेगा। देखने का नजरिया बदल लो। जीवन सुन्दर है, जीने लायक है और चमत्कारों से भरा है।

मैंने और तेरे पिता ने कभी यह नहीं सोचा कि कल क्या होगा? फिर भी आशाओं से भरे भविष्य का इंतजार करते हुए आनंद के साथ? जिये। तू भी बहुत ही धीरज और विश्वास के साथ ईश्वर पर विश्वास रख। जीवन में कुछ नव्य, दिव्य और भव्य अवश्य घटित होगा। बस! अपना श्रेष्ठ कर्म करते रहो। आशा है अब जब तू मिलेगा तो चेहरे पर एक विजयी मुस्कान होगी। शेष शुभ।

तुम्हारी माँ

सामयिक

स्मिता कुमारी

लेखिका सत्यमेव मानसिक विकास केंद्र की निदेशक एवं मनोवैज्ञानिक हैं।

लड़कियों के लिए लाल जोड़ा ही स्वर्ग की सीढ़ी

दोषी केवल वर पक्ष कभी नहीं होता, वधु पक्ष भी होता है। बेटियाँ जब पहली बार अपने घर से ससुराल जाती हैं तो वहाँ उस परिवार की सदस्य की तरह ना तो भेजी जाती हैं ना अपनायी जाती हैं, जहाँ परिवार की तरह अपनाई जाती है वहाँ लड़कियां घरेलू हिंसा की शिकार हो ही नहीं सकती। दूसरी गलती यह है कि मायके वाले बेटियों को पराये घर की अमानत समझते हैं। जन्म देने वाले ही इस सोच से ऊपर नहीं उठ पा रहे हैं तो किसी पराये घर वालों से क्या उम्मीद की जाए। कभी बेटी घर लौट आये, मायके में रहने लगे तो सबसे पहले अपने मायके के परिवार और रिश्तेदार को ही चुभती है कि कब तक रहेगी। यानि शादी के बाद हिंसा को सहकर या लड़की होने के कारण हिंसा को जीवन के सामान्य हिस्सा समझकर उसे ससुराल में ही रहना होगा वरना मायके वापसी का रास्ता उससे भी ज्यादा नरक है।

'सास-ससुर, पति की सेवा सच्चा धर्म तुम्हारा है, हे भारत की श्रेष्ठ कन्या मुक्ति पति के द्वारा है।'

यह पंक्ति मैंने कई बेटी- बहु को शादी के कोहबर में घरवालों द्वारा पढ़वाते देखा है। इस तरह की कोहबर और पंक्तियाँ कई घरों में ससुराल और मायके में लिखी मिल जाती है, कई शादी के गीत आपने सुना होगा जहाँ सारा इज्जत, संस्कार, मान-मर्यादा का ज्ञान केवल और केवल बेटियों को सुनाई जाती है। हमारे समाज के लिए लाल जोड़ा, चुटकी भर सिंदूर कितना महत्वपूर्ण है यह इस बात से समझ सकते हैं कि देश के विकास का डंका बजाने वाला मीडिया इस बात से विकास को हाईलाइट करके अपनी टीआरपी बटोर रहा है कि दहेज उत्पीड़न या सास और पति द्वारा घरेलू हिंसा के बाद आत्महत्या करने वाली लड़कियों को संविधान भले ही अभी न्याय नहीं दे पाया, मगर लाल जोड़े में विदा करने से उनकी आत्मा को मुक्ति मिल गई है। यानी चाहे औरत कितना भी अपने पति द्वारा प्रताड़ना सहे, सहती-सहती मर ही क्यों न जाए या ससुराल में मार डाली जाए, उसे मुक्ति उसी पति की सुहागन बना कर अंतिम संस्कार करने से मिलेगी।

दोषी केवल वर पक्ष कभी नहीं होता, वधु पक्ष भी होता है। बेटियाँ जब पहली बार अपने घर से ससुराल जाती हैं तो वहाँ उस परिवार की सदस्य की तरह ना तो भेजी जाती हैं ना अपनायी जाती हैं, जहाँ परिवार की तरह अपनाई जाती है वहाँ लड़कियां घरेलु हिंसा की शिकार हो ही नहीं सकती। दूसरी गलती यह है कि मायके वाले बेटियों को पराये घर की अमानत समझते हैं। जन्म देने वाले ही इस सोच से ऊपर नहीं उठ पा रहे हैं तो किसी पराये घर वालों से क्या उम्मीद की जाए। कभी बेटी घर लौट आये, मायके में रहने लगे तो सबसे पहले अपने मायके के परिवार और रिश्तेदार को ही चुभती है कि कब तक रहेगी। यानि शादी के बाद हिंसा को सहकर या लड़की होने के कारण हिंसा को जीवन के सामान्य हिस्सा समझकर उसे ससुराल में ही रहना होगा वरना मायके वापसी का रास्ता उससे भी ज्यादा नरक है।

ज्यादातर केस में ससुराल में होने वाली हिंसा और वहाँ के सदस्यों के व्यवहार के बारे में बेटियाँ अपने मायके में बताने की कोशिश करती हैं, कई बार मायके के बेरुखी से बिन बताये आत्महत्या कर लेती हैं और कई बार बताने की कोशिश करती हैं, कुछ बातें बताती भी हैं। मगर आज भी ज्यादातर मायके वालों का वहीं रवईया है 'एडजस्ट करने की कोशिश करो, धीरे-धीरे मान जायेंगे, अगर किसी ने हिम्मत करके इस बारे में सोशल मीडिया पर लिख दिया तो समाज वाले दोषी अपनी बेटियों

को मानते हैं, लिखकर कौन-सी क्रांति होगी? आपको क्या लगता है जो लड़कियां सोशल मीडिया पर अपने ऊपर हो रहे भेदभाव, घरेलू हिंसा या दहेज के कारण ससुराल में ना अपनाई जाने के बारे में लिखती हैं वह क्रांति नहीं करती ? क्या इतना आसान होता है यह लिखना-बोलना यह जानते हुए कि पितृसत्तात्मक समाज कभी उसके साथ निष्पक्ष रूप से खड़ा नहीं होगा? जुल्म सिर्फ शारीरिक नहीं होता मानसिक भी होता है और चोट हद से ज्यादा घहरा। तभी कई केस में लड़की अपने ससुराल वालों के साथ रहने से मना करती हैं।

मगर जाए तो कहाँ जाए परिवार कोर्ट, मायका परिवार, समाज सब यही सिखाता है कि तलाकशुदा लड़की का जीवन नरक है, लड़के की दूसरी शादी हो जाएगी, हो सकता तुमको आगे शादी में इससे ज्यादा बुरा परिवार मिलेगा। मतलब फिर वही पति चाहिए ही मुक्ति के लिए, चुटकी भर सिंदूर या लाल जोड़े के बिना जीवन की मुक्ति ही नहीं और यह भी तय कर लिया जाता है कि एक बार तलाक के बाद लड़के के हिस्से में इससे बेहतर सहनशील लड़की ढूंढी जाएगी लेकिन तलाकशुदा लड़की के हिस्से अगली बार इससे भी बुरा पति और ससुराल मिलेगा।

इन सभी बात से यह तो तय है कि समाज को कुंवारी, तलाकशुदा लड़कियां स्वीकार नहीं हैं, क्योंकि अकेली लड़की खुली तिजोरी है जिस पर कभी देश के संविधान पीठ पर बैठे नेता कमेंट करते हैं, जज कमेंट करते हैं, मीडिया टीआरपी बटोरती है, बाकी आम जनता तो गिद्ध की तरह बैठी ही है अपनी कुंठा लेकर जज करने के लिए। अब लड़की ससुराल में मर जाए या मार दी जाए तो भी महानता इस बात में नहीं है कि उसको न्याय जल्दी मिले, उसकी जैसी अन्य बेटियाँ ससुराल की प्रताड़ना ना सहे, मायके लौट आये, खुद की पहचान बनाये, आत्मनिर्भर बने, बल्कि महानता इस बात में है कि आखिरकर आत्मा की शांति लाल जोड़े, हिंसक पति के नाम की सिंदूर, और मंगलसूत्र पहना कर अंतिम संस्कार करने से ही मिलेगी।

देश के हित में है शरद पवार का सुझाव

प्रधानमंत्री मोदी ने संयुक्त अरब अमीरात से आरंभ कर स्वीडन, नीदरलैंड, नॉर्वे और इटली की द्विपक्षीय यात्रा की तथा नार्वे की राजधानी ओस्लो में स्कैंडिनेवियाई भारत शिखर सम्मेलन में शामिल हुए। प्रधानमंत्री के समक्ष अपने राष्ट्रीय हित को साधने का उद्देश्य था और इन यात्राओं पर विशेषज्ञों का मत यही है कि उसमें उन्हें अधिकतम सफलता मिली। किंतु राजनीतिक और गैर राजनीतिक एक्टिविज्म और सोशल मीडिया पर उनके विदेश में रहते हुए ही हमले शुरू हो गए। सारे हमलों व आलोचनाओं के हल्ला बोल में ऐसा एक तथ्य नहीं आया जिसमें बताया गया हो कि अमुक बिंदु पर प्रधानमंत्री ने अपने राष्ट्रीय हित को साधने का अनुकूल काम नहीं किया। जाहिर है कि विरोध केवल राजनीतिक मतभेदों और असहमतियों के इर्द-गिर्द था। यह चिंताजनक है क्योंकि भारत की भौगोलिक सीमाओं के अंदर की राजनीतिक असहमतियां और मतभेद सीमाओं से बाहर चला जाए तो राष्ट्रीय हित प्रभावित होता है। इसका अर्थ है कि हम देश हित को प्राथमिकता देने की जगह अपने राजनीतिक, व्यक्तिगत हित को प्राथमिकता दे रहे हैं या फिर हमारा वैचारिक दुराग्रह हावी है।

अवधेश कुमार
लेखक दिल्ली निवासी वरिष्ठ पत्रकार हैं।

शरद पवार ने देश की विदेश नीति पर आंतरिक राजनीतिक व्यवहार के संदर्भ में जो कुछ कहा है उस पर गंभीरता से विचार होना चाहिए। उन्होंने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भारत के बाहर देश की प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए काम कर रहे हैं। हमारे राजनीतिक विचार अलग-अलग हो सकते हैं लेकिन जब देश के सम्मान की बात आती है तो राजनीतिक मतभेदों को बीच में नहीं लाना चाहिए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पांच दिवसीय विदेश यात्रा पर भारत के अंदर राजनीतिक व गैर राजनीतिक मोर्चे पर हो रही टिप्पणियों के संदर्भ में उनका यह मंतव्य सर्वाधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। प्रधानमंत्री मोदी ने संयुक्त अरब अमीरात से आरंभ कर स्वीडन, नीदरलैंड,नॉर्वे और इटली की द्विपक्षीय यात्रा की तथा नार्वे की राजधानी ओस्लो में स्कैंडिनेवियाई भारत शिखर सम्मेलन में शामिल हुए। प्रधानमंत्री के समक्ष अपने राष्ट्रीय हित को साधने का उद्देश्य था और इन यात्राओं पर विशेषज्ञों का मत यही है कि उसमें उन्हें अधिकतम सफलता मिली। किंतु राजनीतिक और गैर राजनीतिक एक्टिविज्म और सोशल मीडिया पर उनके विदेश में रहते हुए ही हमले शुरू हो गए। सारे हमलों व आलोचनाओं के हल्ला बोल में ऐसा एक तथ्य नहीं आया जिसमें बताया गया हो कि अमुक बिंदु पर प्रधानमंत्री ने अपने राष्ट्रीय हित के अनुकूल काम नहीं किया। जाहिर है कि विरोध केवल राजनीतिक मतभेदों और असहमतियों के इर्द-गिर्द था। यह चिंताजनक है क्योंकि भारत की भौगोलिक सीमाओं के अंदर की राजनीतिक असहमतियां और मतभेद सीमाओं से बाहर चला जाए तो राष्ट्रीय हित प्रभावित होता है। इसका अर्थ है कि हम देश हित को प्राथमिकता देने की जगह अपने राजनीतिक, व्यक्तिगत हित को प्राथमिकता दे रहे हैं या फिर हमारा वैचारिक दुराग्रह हावी है।

ऐसा नहीं है कि पवार की मोदी से पूरी तरह सहमति है। महाराष्ट्र में आज शरद पवार की राकांपा शक्तिहीन है तो इसी कारण क्योंकि स्वर्गीय अजीत पवार ने विद्रोह कर भाजपा से हाथ मिला लिया। बावजूद हमारी पारंपरिक राजनीति ,जिसका प्रतिनिधित्व करने वाले गिने-चुने नेता रह गए हैं, में यही व्यवहार लंबे समय तक रहा है। देश में हमारी असहमति होती है, आरोप - प्रत्यारोप करते हैं लेकिन जब विदेशों की, अंतरराष्ट्रीय मंच की बात आती है तो देश साथ खड़ा होता है। अंतरराष्ट्रीय मंच पर या विदेश में प्रधानमंत्री किसी राजनीतिक दल का नहीं भारत का प्रतिनिधित्व करते हैं। वहां केवल राष्ट्रहित सर्वोपरि होना चाहिए। पत्रकारिता में भी अनेक बार प्रधानमंत्री या दूसरे मंत्रियों के विदेश में दिए बयानों से असहमति होती थी लेकिन वरिष्ठ लोग बताते थे कि विदेश नीति पर हमारी आलोचना का स्वर ऐसा नहीं हो सकता। अपवाद हर समय रहे हैं पर पर वह कभी मुख्य धारा नहीं बना। इसलिए ज्यादातर विदेशी यात्राओं या विदेशी मेहमानों के भारत आगमन पर हुए समझौते आदि पर राजनीतिक दलों व मीडिया की ध्वनि एक समान होती थी। जैसे-जैसे राजनीतिक मतभेद बढ़े, भारत और वैश्विक स्तर पर अलग-अलग राजनीतिक धाराओं, निहित स्वार्थी संगठनों, समूहों के बीच संपर्क संबंध बढ़ा इस स्वाभाविक व्यवहार में अंतर आता गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सत्ता शीर्ष पर आने के बाद यह अतिवाद तक चला गया है। इसी का प्रकटिकरण इस समय दिखा है।

एक भारतवासी के नाते इस समय हमारा उद्देश्य क्या होना चाहिए? पश्चिम एशिया संकट यानी ईरान अमेरिका इजरायल टकराव और तनाव ने ईंधन आपूर्ति में उथल-पुथल पैदा कर दिया है। हार्मूज जलडमरूमध्य की खतरनाक नाकेबंदी से निपटना विश्व के लिए मुश्किल हो रहा है। इसमें पेट्रोल डीजल आदि के लिए आयात पर निर्भर भारत या अन्य देशों के लिए दूरगामी दृष्टि से आपूर्ति की सुनिश्चित व्यवस्था करना, देशों के संबंधों में हो रहे बदलावों के साथ सामंजस्य स्थापित करना या अस्थिरता के काल में उसका आधार बनाते रहना तथा भविष्य में बनने वाले अंतरराष्ट्रीय समीकरणों की दृष्टि से ऐसी स्थिति में होना ताकि देश के रूप में हम कहीं अलग-थलग न पड़ें। मोटा - मोटी प्रधानमंत्री की यात्रा में यही लक्ष्य समाहित होंगे। इन सबमें यहां विस्तार से जाने की आवश्यकता नहीं। आप चाहे भाजपा के सरकार के विरोधी हों या समर्थक दृष्टि एक ही होनी चाहिए कि प्रधानमंत्री की यात्राओं के दौरान उन देशों के नेताओं के साथ द्विपक्षीय और प्रतिनिधिमंडलों की बातचीत, संयुक्त घोषणाओं तथा संपन्न समझौतों में क्या-क्या हुआ? जब आप गहराई से उन सबको देखेंगे तो आपका विचार अपने आप बदल जाएगा। दुर्भाग्य से हम उन पर सरसरी दृष्टि भी डालना नहीं चाहते।

किसी पत्रकार ने नॉर्वे में दोनों प्रधानमंत्रियों के स्वागत वक्तव्य में निर्धारित प्रोटोकॉल के विपरीत जबरन कैमरे घूमाकर भारत के प्रधानमंत्री से मानवाधिकार एवं प्रेस की स्वतंत्रता पर प्रश्न पूछे और वह हमारे लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण हो गया। नॉर्वे के साथ हमारे समझौते, हमारे यहां पेंशन फंड से 28 अरब डॉलर के निवेश की योजना, ब्लू इकोनामी साझेदारी, हरित साझेदारी आदि पर हमने चर्चा नहीं की। यही नहीं नॉर्दिक भारत शिखर सम्मेलन में औपचारिक रूप से ट्रस्टेड ग्रीन टेक्नोलॉजी एंड इनोवेशन स्ट्रैटेजिक पार्टनरशिप यानी विश्वसनीय हरित तकनीक एवं अन्वेषण रणनीतिक साझेदारी का दर्जा मिलना और कातिक परिषद में भी पर्यवेक्षक की हैसियत हासिल करना इनके लिए हास्य पर चला गया। इसी तरह इटली की यात्रा में प्रधानमंत्री ने पार्ले कंपनी के सामान्य मेलोडी ट्रॉफी वहां की प्रधानमंत्री जार्जिया मेलोनी को भेंट करते हुए एक रोचक वीडियो पोस्ट किया। इटली के साथ हमारी ठोस विशेष रणनीतिक साझेदारी कायम हुई, भारत और इटली में निर्माण करो तथा विश्व को आपूर्ति करो का ढांचा वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में भारत के स्थान की दृष्टि से महत्वपूर्ण था, अनेक मुद्दों पर हमारे साथ सहमति बनी जिनमें आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष भी है। इस यात्रा में स्वीडन ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अपना सर्वोच्च नागरिक सम्मान दिया और काम करने वाली पत्रकार और कार्टून छापने वाले अखबार के देश नार्वे ने भी। संयुक्त राष्ट्र संघ की खाद्य और कृषि संगठन ने प्रधानमंत्री को विशेष रूप से सम्मानित किया। इन सब पर चर्चा की जगह हमारे यहां टौफी वीडियो को लेकर ऐसी टिप्पणियां की जा रही है जिनमें कई को देखने सुनने या पढ़ने में शर्म आए। भारत जैसे देश में विमर्श का यह स्तर किसी को भी अंदर से परेशान कर देगा।

क्या हम ऐसा करते समय विचार भी नहीं करते कि एक देश के रूप में विदेश में हमारी कैसी छवि बनेगी? यहीं पर शरद पवार का यह कथन प्रासंगिक हो जाता है कि जब भी राष्ट्रीय हित के लिए सामूहिक रूप से काम करने का मौका मिले तो सभी को एक साझा उद्देश्य के साथ जुड़ना चाहिए और देश की प्रतिष्ठा मजबूत करने में मदद करनी चाहिए। कोई भी प्रधानमंत्री या विदेश मंत्री देश के बाहर होते हैं तो अपने दृष्टिकोण से वह देश के भविष्य और सम्मान को ही केंद्र में रखते हैं। कई बार इनमें गलतियां भी हुई है। आज के दौर के अनुसार उनकी आलोचना भी अस्वाभाविक नहीं है किंतु आलोचना तथ्यों के आधार पर होगी। अखिर जॉर्जिया मेलोनी को मेलोडी ट्रॉफी भेंट करने से हमारी राष्ट्रीय प्रतिष्ठा को कैसे नुकसान पहुंचा? इटली प्राचीन सभ्यता संस्कृति वाला यूरोप का महत्वपूर्ण और मजबूत देश है। वर्तमान तनावपूर्ण अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य में दो प्रधानमंत्रियों के बीच इस तरह के सहज संबंध, मुस्कान और ठहाके कूटनीति की दुनिया में बहुत बड़ी उपलब्धि है। एक बार दो नेताओं के बीच सहज सामान्य संवाद निर्मित हो गए तो जटिल से जटिल मुद्दों पर भी सहमति बनती है तथा रास्ता निकल जाता है। दूसरे, इससे हमारे देश के एक सामान्य ब्रांड का भी जबरदस्त विपणन हुआ। इस विषय पर स्थापित अंतरराष्ट्रीय मीडिया की टिप्पणियां देखेंगे तो सकारात्मक भाव पैदा होगा।

कूटनीति में एक सामान्य वस्तु का उपयोग कर माहौल बदल देना, दुनिया को संदेश देना और उन्हें अंतरराष्ट्रीय संबंधों में परस्पर व्यवहार का रास्ता दिखा देना सामान्य बात नहीं है। अभी अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का चीन दौरा हुआ और राष्ट्रपति शी जिनपिंग के साथ उनकी बातचीत के सारे तस्वीर और वीडियो देख लीजिए। इसके बाद रुस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की चीन यात्रा हुई। दोनों नेताओं के सारे तस्वीर और वीडियो देख लीजिए। पुतिन और शी जिनपिंग के बीच सामान्य संबंध हैं। बावजूद उनके व्यवहार में सहज मुस्कान नहीं दिखेगा। तनावपूर्ण और अनिश्चितताओं की दुनिया में दो महत्वपूर्ण देश के नेताओं के बीच सरल सहज मुस्कान और संबंध कूटनीति के लिए नया मानक है। कायदे से देश में इसकी प्रशंसा होनी चाहिए। भारत ने अपने लक्ष्य के अनुरूप यात्रा से सारी उपलब्धियां हासिल की जिसकी ओर तत्काल दृष्टि थी। दूसरे देश भी अपने हित के अनुसार काम कर रहे थे और उन्हें भी प्राप्त हुआ। पर मूल बात यह है कि हम एक राष्ट्र के रुप में कैसे प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं? शरद पवार जैसे वरिष्ठ नेता अब ज्यादा उपलब्ध नहीं है कि सामने आकर रास्ता दिखाएं। ज्यादातर जा चुके हैं। हमें ही अपने हर व्यवहार पर राष्ट्रीय हित को प्राथमिकता देकर स्वयं को बदलना होगा।

मानव सभ्यता के लिए समाधान है त्रिकाल संध्या

सोहागपुर। जगन्नाथ संस्कृति के विशारद विद्वान पंडित डॉ काशीनाथ मिश्र ने कहा था कि कलयुग के विनाशकारी विपत्तियों से मानव सभ्यता के लिए बचाव एवं समाधान भविष्य मालिका पुराण खंड एक में कहा गया है कि 2032 में सतयुग का आगमन होगा। सतयुग की शुरुआत होगी।

जिसमें उड़िया लिखित भविष्य मालिका पुराण में अच्युतानंद जी ने कहा है 'जे श्री कृष्ण पयरे लय लगाई ले घरे न पसव चोर' अर्थात् जो मनुष्य भगवान कल्कि की शरण में जाएंगे उन लोगों के घर

बीमारी, आपदा का प्रभाव नहीं रहेगा ।

भगवान कल्कि के आगे सभी देवी- देवताओं की शक्ति खत्म हो जाएगी। कल्कि भगवान गुप्त में रहेंगे। श्री काशीनाथ मिश्र ने सप्त दिवसीय कथा के प्रत्येक दिवस विश्व के मानव सभ्यता कल्याण के अपने उद्गारों में चेतावनी देते थे कि मानवीय विकृति को त्यागें एवं सत्य के मार्ग पर चलने का संदेश श्रद्धालुओं को देते थे। आपने कथा में पाश्चात्य सभ्यता पर भी कई कटाक्ष किए थे। वहीं आपने परिवारों में विघटन पर भी सारगर्भित उद्बोधन देकर परस्पर सामंजस्य स्थापित करने की बातें कहीं थीं।वहीं आपने विश्व के मानव प्राणी को आगाह करते थे।कि कलयुग की विभीषिका से बचाव के लिए त्रिकाल संध्या, श्रीमद्भागवत कथा का एक अध्याय के साथ ही 'माधव' नाम ही सहारा ही मानव सभ्यता को बचाने का ब्रह्मास्त्र है।श्री मिश्र ने मानव मात्र को कहा था कि त्रिकाल संध्या से मनुष्य के कोटि-कोटि जीवन के पाप नष्ट करने में सक्षम है। केवल इसी मंत्र से समस्त जीवों का कल्याण निहित है।

रेंजर अंजू वर्मा जिन्होंने घर में घुसे आदमखोर बाघ को बांधवगढ़ के जंगल में खदेड़ दिया

प्रशस्ति पत्र और 25,000 रुपये का नकद पुरस्कार से सम्मानित

उमरिया (नप्र)। मध्य प्रदेश के प्रसिद्ध बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व के पटौर रेंज में पदस्थ महिला रेंजर अंजू वर्मा को उनके अदम्य साहस, नेतृत्व क्षमता और सूझबूझ के लिए विशेष रूप से सम्मानित किया गया है। मानव-वन्यजीव संघर्ष की एक बेहद संवेदनशील और हिंसक परिस्थिति को संभालते हुए उन्होंने न सिर्फ घायल नागरिक की जान बचाई, बल्कि आक्रोशित ग्रामीणों को शांत कर कानून-व्यवस्था भी बनाए रखी। बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व के फील्ड डायरेक्टर ने उन्हें प्रशस्ति पत्र और 25,000 रुपये का नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया है।

आधी रात का वो खौफनाक मंजर

यह घटना 24 मई की रात करीब 2:30 से 3:00 बजे के बीच की है, जब पनपथा बफर जोन के अंतर्गत आने वाले खेरवा टोला गांव में एक बाघ अचानक एक घर के भीतर घुस गया। बाघ के हमले में एक महिला की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि एक

अन्य व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया। घटना की सूचना मिलते ही रेंजर अंजू वर्मा बिना वक्त गंवाए अपने स्टाफ के साथ मौके पर पहुंच गईं।

तनावपूर्ण माहौल और ग्रामीणों के भारी विरोध के बावजूद रेंजर अंजू वर्मा ने लगातार स्थानीय लोगों से बातचीत जारी रखी। उन्होंने न केवल भीड़ के गुस्से को शांत किया, बल्कि प्रशासनिक टीम और ग्रामीणों के बीच बेहतरीन समन्वय स्थापित करते हुए बाघ से जुड़े इस रेस्क्यू ऑपरेशन को भी कुशलता से संभाला।

गुस्साए ग्रामीणों के बीच बनीं ढाल

हादसे के बाद सुबह होते-होते मौके पर सैकड़ों ग्रामीणों की भारी भीड़ जमा हो गई थी। अपनी साथी की मौत से गुस्साए लोग वन विभाग के खिलाफ नारेबाजी कर रहे थे और स्थिति बेहद तनावपूर्ण हो चुकी थी। एक तरफ घर के अंदर बाघ फंसा हुआ था, तो दूसरी तरफ बाहर हिंसक होती भीड़। ऐसे विपरीत हालातों में भी अंजू वर्मा पीछे नहीं हटीं। उन्होंने लगातार ग्रामीणों से संवाद किया, उनका गुस्सा शांत कराया और प्रशासनिक तालमेल बिठाकर घायल व्यक्ति को तुरंत अस्पताल भिजवाया।

जीवन के रहस्य

क्या बालूरेत को हाथों की मुट्ठी में थामा जा सकता है?

नितिन वैद्य

अधिकांश लोग इस सरल से प्रश्न का उत्तर 'असंभव' ही देंगे। क्योंकि बालूरेत का स्वभाव ही फिसल जाना है। किन्तु जब हम जीवन के गूढ़ रहस्यों को समझते हैं, तब अनुभव होता है कि वास्तव में बालूरेत को भी मुट्ठी में थामा जा सकता है।

कैसे...?जब मनुष्य इतनी कठोर मेहनत करता है कि उसकी हथेलियाँ स्वयं के पसीने से भीग जाती हैं, तब वही पसीना बालूरेत को मुट्ठी में थाम लेता है। यह केवल बालूरेत को पकड़ने का उदाहरण नहीं, बल्कि जीवन का महान सत्य है। संसार में कोई भी सफलता बिना श्रम के स्थिर नहीं रहती। परिश्रम का पसीना ही वह शक्ति है जो असंभव को संभव बना देता है। जीवन हमें सिखाता है कि 'असंभव केवल मन की दुर्बलता है, जबकि दृढ़ संकल्प, ईमानदारी और अथक परिश्रम पर्वतों को भी झुका देते हैं।' मनुष्य यदि स्वयं से झूठ न बोले, अपने लक्ष्य के प्रति पूर्ण समर्पित रहे और निरंतर कर्म करता रहे, तो प्रकृति भी उसके मार्ग में सहयोगी बन जाती है।जीवन का सबसे बड़ा सत्य यही है कि सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता। जिस प्रकार नदी निरंतर बहते हुए कठोर चट्टानों को भी काटकर अपना मार्ग बना लेती है, उसी प्रकार निरंतर परिश्रम करने वाला व्यक्ति परिस्थितियों की कठोरता को पराजित कर देता है। जब मनुष्य अपने लक्ष्य पर सम्पूर्ण एकाग्रता रखता है, तब उसकी इच्छाशक्ति साधारण नहीं रहती; वह तपस्या का रूप धारण कर लेती है। और तपस्या में इतनी शक्ति होती है कि वह भाग्य की रेखाएँ भी बदल देती है। संसार में जितने भी महान कार्य हुए हैं, वे किसी चमत्कार से नहीं, बल्कि संघर्ष, धैर्य, त्याग और निरंतर कर्म से पूर्ण हुए हैं। जो व्यक्ति पसीने की बूंदों को अपने जीवन का आभूषण बना लेता है, सफलता स्वयं उसके चरण चूमती है। यदि उदाहरणों की ओर देखें तो बिहार के दशरथ मांझी जी का जीवन अद्भुत प्रेरणा देता है। उन्होंने अकेले अपने श्रम और संकल्प से पर्वत की छाती चीरकर रास्ता बना दिया। लोग उनका उपहास करते रहे, उन्हें पागल कहते रहे, किन्तु उन्होंने अपने लक्ष्य से दृष्टि नहीं हटाई। उसी प्रकार डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने अत्यंत साधारण परिस्थितियों से उठकर भारत को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। संसाधनों का अभाव उनके मार्ग की बाधा नहीं बना, क्योंकि उनके भीतर मेहनत की अग्नि प्रज्वलित थी। स्वामी विवेकानन्द ने भी विपरीत परिस्थितियों में अपने आत्मविश्वास, ज्ञान और साधना से सम्पूर्ण विश्व में भारत की सनातन संस्कृति का ध्वज फहराया।

सदानीरा समागम 2026

ग्लेशियर पिघलते रहे तो दुनिया में गंभीर जल संकट होगा : डॉ. प्रकाश चौहान

भोपाल। वीर भारत न्यास द्वारा भारत भवन, भोपाल में आयोजित सदानीरा समागम के दूसरे दिन पंचमहाभूतों में से अग्नि तत्व, आकाश तत्व विषय पर विमर्श किया गया। इसरो हैदराबाद के वैज्ञानिक डॉ. प्रकाश चौहान ने चेतावनी दी कि यदि अगले 50 वर्षों तक ग्लेशियर इसी गति से पिघलते रहे तो दुनिया गंभीर जल संकट का सामना करेगी। उन्होंने सरस्वती नदी और उससे जुड़ी प्राचीन सभ्यता का उल्लेख करते हुए कहा कि विज्ञान और तकनीक को केवल कागजों तक सीमित नहीं रखना चाहिए, बल्कि उसे धरातल पर लागू करना आवश्यक है। उन्होंने ऊर्जा संरक्षण के लिए फ्लोटिंग सोलर जैसे विकल्पों को भी महत्वपूर्ण बताया।

अग्नि तत्व ऊर्जा, बुद्धिमत्ता और आत्मशुद्धि का प्रतीक- टाटा ट्रस्ट के एडवाइजर एचएन श्रीनिवास ने अग्नि तत्व को ऊर्जा, बुद्धिमत्ता और आत्मशुद्धि का प्रतीक बताया। उन्होंने कहा कि अग्नि केवल आग नहीं, बल्कि जीवन की चेतना और ऊर्जा का आधार है। उन्होंने उद्योगों और संस्थानों से ग्रीन एनर्जी को अपनाने, इलेक्ट्रिक मोबिलिटी को बढ़ावा देने तथा रूफटॉप सोलर पर अधिक कार्य करने का आह्वान किया।

भारतीय संस्कारों में अग्नि तत्व का विशेष महत्व- काशी विद्वत परिषद के प्रो. रामनारायण द्विवेदी ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारतीय संस्कारों में अग्नि तत्व का विशेष महत्व है। अग्नि केवल शरीर ही नहीं, बल्कि वातावरण और अन्य तत्वों को भी शुद्ध करने की क्षमता रखती है। उन्होंने कहा कि अग्नि ऊर्जा, तेजस्विता और संस्कारों की संदेशवाहक है।

लगातार प्राकृतिक संसाधनों का दोहन मानवता पर संकट- ओएनजीसी के सीएसआर हेड पीयूष प्रेरतरिया ने बढ़ते जल संकट और पर्यावरणीय चुनौतियों पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि आज की नई पीढ़ी ने तालाबों और पारंपरिक जल

स्त्रोतों को केवल फिल्मों में देखा है, जबकि कई शहरों में जल समाप्त होने जैसी स्थिति उत्पन्न हो रही है। उन्होंने प्राकृतिक संसाधनों के सीमित उपयोग, रिसाइक्लिंग और कचरे के पुनः उपयोग की आवश्यकता पर बल दिया।

भारतीय सनातन परंपरा पंचतत्वों पर आधारित- वैदिक विज्ञान केंद्र, बीएचयू के विनयकुमार पांडेय ने भारतीय ज्ञान परंपरा और वैदिक विज्ञान पर अपने विचार रखे। उन्होंने अग्नि तत्व को सृष्टि की उत्पत्ति से जोड़ते हुए विद्यार्थियों से वेद विज्ञान के अध्ययन का आग्रह किया। साथ ही आधुनिक विज्ञान और संरक्षण, ऊर्जा संतुलन और भारतीय परंपरा के समन्वय के माध्यम से प्रकृति सतत विकास की दिशा में सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता पर बल दिया।

उद्योगों को पानी उपयोग के साथ पानी लौटाने की पॉलिसी बनानी चाहिए- टाटा संस के ग्रुप चीफ सस्टेनेबिलिटी ऑफिसर चाको थॉमस ने अपने संबोधन में सस्टेनेबिलिटी को आर्थिक विकास और सामाजिक सुधार के संतुलन के रूप में परिभाषित किया। उन्होंने जल संरक्षण को लेकर टाटा समूह के तीन दृष्टिकोण बताए और कहा कि उद्योगों को केवल व्यवसाय तक सीमित नहीं रहना चाहिए। नमामि गंगे जैसे अभियानों को अन्य राज्यों में भी लागू करने की जरूरत बताई।

सस्टेनेबिलिटी अब विकल्प नहीं, बल्कि समय की अनिवार्य आवश्यकता- हिंडाल्को के सीएसआर प्रमुख अविजीत राजू ने कहा कि सस्टेनेबिलिटी अब विकल्प नहीं, बल्कि समय की अनिवार्य आवश्यकता है। पंचतत्व आधारित जीवनशैली का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि टिकाऊ विकास पर बात करना आसान, लेकिन उसे लागू करना चुनौतीपूर्ण और महंगा है।

जल संरक्षण आज की जरूरत- वेदांता ग्रुप के सीएसआर प्रमुख अनुपम निधि ने कहा कि भविष्य को बेहतर बनाना केवल समाज नहीं, बल्कि उद्योगों की भी जिम्मेदारी है। पृथ्वी को प्राथमिक तत्व और अग्नि को ऊर्जा का प्रतीक बताते हुए उन्होंने ग्रीन एनर्जी आधारित जिंक उत्पादन का उल्लेख किया।

प्रकृति बचाने स्वयंसेवा एक मजबूत मंच- कैल्डेरिस के ग्रुप सस्टेनेबिलिटी हेड उत्सवी दीपक ने अपने वक्तव्य में व्यवसाय और सस्टेनेबिलिटी को साथ लेकर चलने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि जिला स्तर पर संस्थाओं, कॉरपोरेट और सामाजिक संगठनों के बीच बेहतर तालमेल की जरूरत है। साथ ही स्वयंसेवा को एक मजबूत मंच बताते हुए उसे अधिक संरचित और प्रभावी बनाने की बात कही।

ईदगाह में हुई ईद-उल-अजहा की नमाज़ में मुल्क की तरक्की और हिफाज़त के लिए दुआ मांगी

सोहागपुर। नगर में ईद उल अजहा का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। ईद उल अजहा की विशेष नमाज ईदगाह में अदा की गई। ईद की नमाज वक्फ कायमखानी औलिया जामा मस्जिद के पेश इमाम हाफिजों कारी मरगूब रज़ा कादरी साहब ने अदा कराई गई। इमाम साहब ने नमाज के पूर्व कुर्बानी का महत्व बताते कहा कि हसद, जलन, झूठ बोलना जैसी बुरी आदतों का त्याग भी एक तरह की कुर्बानी है। इसके बाद ईद की नमाज एवं दुआ की गई जिसमें हिंदुस्तान में अमन चैन, शांति, तरक्की और हिफाजत की दुआ की गई। नमाज़ के उपरांत सभी ने एक-दूसरे को गले लगाकर ईद की मुबारकबाद दी। तथा कब्रिस्तान पहुंचकर अपने पूर्वजों को याद कर मगफिरत की दुआ की। इस अवसर पर बशीर खान मैनेजर, अधिवक्ता शेर खान-हनीफ खान, सचिव शेख राशिद, वसीम खान, अजहर पटेल, जावेद खान,

पूर्व नपाध्यक्ष संतोष मालवीय, कांग्रेस नेता प्रशांत जायसवाल, जमील खान पार्षद, आरिफ खान, भास्कर मांझी सहित गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।कमेटी अध्यक्ष अनीस खान एवं जावेद खान द्वारा बताया कि प्रतिवर्ष अनुसार ईद उल अजहा की नमाज के लिए वक्फ़ मस्जिद कायमखानी कमेटी ने ईदगाह में नमाजियों के लिए तमाम इंतजाम किए। मुस्लिम त्यौहार कमेटी अध्यक्ष वसीम खान एवं अंजुमन कमेटी उपाध्यक्ष आदाब खान ने प्रशासनिक व्यवस्थाओं एवं चाक-चौबंद सुरक्षा इंतजामों को लेकर प्रशासन का आभार व्यक्त किया है। ईद की नमाज़ को शांतिपूर्ण संपन्न कराने के लिए प्रशासन भी पूरी तरह मुस्तैद नजर आया। एसडीएम प्रियंका भल्लावी, एसडीओपी संजू चौहान, थाना प्रभारी राहुल रैयकवार, तहसीलदार राकेश झरबड़े, नायब तहसीलदर रंजीत चौहान, आरआई नागेश निवरिया सहित कई अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

संक्षिप्त समाचार

गंगा दशहरा पर माचना नदी घाट पर चला स्वच्छता एवं संरक्षण अभियान

बैतूल (निप्र)। जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत गंगा दशहरा के पावन अवसर पर नगर पालिका परिषद बैतूल द्वारा माचना नदी स्थित दामा दैयत घाट पर विशेष स्वच्छता एवं संरक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के तहत घाट परिसर में व्यापक साफ-सफाई अभियान चलाया गया। साथ ही पौधरोपण, जलकुंभी की सफाई एवं जेसीबी मशीन के माध्यम से घाट क्षेत्र की विशेष सफाई कराई गई। कार्यक्रम का उद्देश्य जल स्रोतों के संरक्षण, स्वच्छता एवं पर्यावरण संवर्धन के प्रति जनजागरूकता बढ़ाना रहा। इस अवसर पर मुख्य नगर पालिका अधिकारी श्री नवनीत पांडे, जन अभियान परिषद के जिला समन्वयक श्रीमती प्रिया चौधरी, वार्ड पार्षद श्रीमती शोभा निरापुरे, ग्रीन टाइगर टीम, सभापति, जनप्रतिनिधिगण, वार्डवासी एवं नगर पालिका के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे। सभी उपस्थितजनों ने श्रमदान कर स्वच्छता एवं पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया तथा जल स्रोतों के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए जनभागीदारी बढ़ाने का आह्वान किया। नगर पालिका परिषद बैतूल द्वारा जल संरक्षण, स्वच्छता एवं हरित वातावरण को बढ़ावा देने हेतु निरंतर विभिन्न जनजागरूकता एवं स्वच्छता गतिविधियां संचालित की जा रही हैं, जिससे नागरिकों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़े तथा स्वच्छ एवं स्वस्थ वातावरण का निर्माण हो सके।

पंप ऑपरेटरों को दिया गया पानी की टंकियों की सफाई का प्रशिक्षण

सीहोर (निप्र)। जल गंगा अभियान के अंतर्गत नागरिकों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के उद्देश्य से लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग द्वारा सीहोर जनपद पंचायत सहित सभी जनपदों में पंप ऑपरेटर्स को 'वॉश ऑन व्हील' के माध्यम से पानी की टंकियों की वैज्ञानिक एवं सुरक्षित तरीके से सफाई करने का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में विशेषज्ञों द्वारा टंकियों की नियमित सफाई, पानी की गुणवत्ता बनाए रखने, क्लोरीनेशन प्रक्रिया तथा स्वच्छता संबंधी आवश्यक सावधानियों की जानकारी दी गई। प्रशिक्षण के दौरान बताया गया कि समय-समय पर पानी की टंकियों की सफाई सुनिश्चित करना जरूरी है।

जिले के प्रभारी मंत्री श्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल ने सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मुलताई का किया निरीक्षण

बैतूल (निप्र)। लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा राज्यमंत्री तथा जिले के प्रभारी मंत्री श्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल ने सोमवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मुलताई का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने जनरल वार्ड, महिला वार्ड, ड्रेसिंग वार्ड सहित अन्य वार्डों का निरीक्षण कर भर्ती मरीजों से आत्मीय संवाद किया और व्यवस्थाओं के संबंध में जानकारी ली। इसके अलावा उन्होंने रसोई शाला, प्रयोगशाला का भी जायजा लिया और संचालन के संबंध में मुलताई बीएमओ से जानकारी प्राप्त की। उन्होंने पोषण पुनर्वास केन्द्र का भी निरीक्षण कर अधिकारियों से जानकारी ली। उन्होंने निर्देशित किया कि पोषण पुनर्वास केन्द्र का प्रभावी संचालन किया जाए। फील्ड पर कुपोषण के प्रकरणों को तत्परता से उन्हें एनआरसी में शिफ्ट कर तत्काल उपचार उपलब्ध कराए। कुपोषण को जड़ से समाप्त करने की दिशा में प्रभावी प्रयास किए जाए। इस दौरान उन्होंने बालक इंद्रेश कोड़ी से आत्मीय संवाद कर फोटो भी खिंचवाई। उन्होंने एनआरसी में बच्चों के डाइट और फील्ड पर कैसे आइडेंटीफाई करते के संबंध में जानकारी ली और प्राथमिकता से कुपोषित बच्चों को पोषण पुनर्वास केंद्रों में शिफ्ट कराने के निर्देश दिए।

उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो...

स्मृति शेष : बशीर बद्र

स्वप्निल श्रीवास्तव

लोग टूट जाते हैं एक घर बनाने में
तुम तरस नहीं खाते बस्तियां जलाने में
घरों पर नाम हैं नामों के साथ ओहदे हैं
बहुत तलाश किया कोई आदमी न मिला

ये शेर के शायर बशीर बद्र के शेर है जो आज के दिन इस दुनिया से रुख़सत हो गये. बशीर बद्र साहब को छात्र जीवन से सुनता आ रहा हूं. वे ग़ज़ले इस तरह करते थे कि लोग मंत्र मुग्ध हो जाते थे. उनकी ग़ज़ले इतनी आसान होती. थी कि जुबान पर चढ़ जाती हैं. वे बहुत लोकप्रिय शायर थे. कठिन लब्ज इस्तेमाल नही करते थे. उनकी शायरी रोमांटिक होने के साथ जीवन की हकीकत बयान करती थी. उनके ग़ज़ल पढ़ने का अंदाज निराला था. अपनी इस अदा से वे मुशायरा लूट लेते थे.

जब मैं गोण्डा में नियुक्त था. वहीं उनसे मुलाक़ात हुई थी. वे बलरामपुर के मुशायरे में शिरकत करने आये थे. बलरामपुर के डी एम ने मुझे यह जिम्मेदारी दी कि मैं उन्हें लखनऊ

जानेवाली रेलगाड़ी में बैठा दू. उन दिनों बलरामपुर में नैरो गेज की ट्रेन चलती थी इसलिए गोण्डा गाड़ी पकड़नी पड़ती थी.

जब उन्हें पता चला कि मैं फैज़ाबाद में रहता हूं तो उन्होंने बताया कि वे फैज़ाबाद में पैदा हुये है.

यह मेरे लिये खुशी की बात थी लेकिन उनसे जब यह सवाल पूछा कि वे फैज़ाबाद क्यों नही आते हैं. वे उदास हो गये बोले. मियां जिंदगी में बहुत सी जगहे छूट जाती है. हम उस जगह नही पहुंच. पाते जहाँ से जिंदगी का सफर शुरू हुआ था.उनका जवाब शायराना था लेकिन मुझे उदास कर गया फैज़ाबाद में सौदा जैसे शायर रहे हैं. उन्होंने फैज़ाबाद के नबाबों की महफ़िल को आबाद किया था. चकबस्त को कौन भूल सकता है.

उनके जाने के बाद ग़ज़ल की एक परम्परा को विराम लग गया. आजकल जिस तरह की शायरी हो रही है उसमें जिंदगी की लय और धुन गायब है. मुशायरे सस्ते किस्म के गज़लों से भरी हुई है उसमें जिंदगी सांस नही लेती है . बद्र जैसे शायर जिस तरह की परम्परा को छोड़ गये है उनका विकास नही हो रहा है. जब भी उर्दू में अच्छी शायरी का जिक्र होगा बद्र साहब अव्वल नंबर पर आएंगे...

बशीर बद्र को उनकी इस पंक्ति के साथ दिल से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं.

उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो,
न जाने किस गली में ज़िंदगी की शाम हो जाए।

पेयजल संबंधी समस्याओं का तत्परता से कराएं निराकरण: कलेक्टर

वीसी के माध्यम से कलेक्टर द्वारा की गई पेयजल, राजस्व प्रकरण और सीएम हेल्पलाईन की समीक्षा

रायसेन (निप्र)। कलेक्टर श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा द्वारा मंगलवार को वीडियो कॉफ्रेंस के माध्यम से राजस्व प्रकरणों, धारणाधिकार प्रकरणों, सीएम हेल्पलाईन और ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल उपलब्धता की विस्तृत समीक्षा करते हुए सभी एसडीएम तथा अधिकारियों को दिश-निर्देश दिए गए। कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने नामांतरण, बंटवारा, सीमांकन सहित अन्य राजस्व प्रकरणों के निराकरण की एसडीएम और तहसीलवार समीक्षा करते हुए अधिकारियों को समयावधि में निराकरण की कार्यवाही करने के निर्देश दिए। उन्होंने धारणाधिकार के प्रकरणों पर की जा रही कार्यवाही की भी समीक्षा करते हुए सभी एसडीएम को प्राथमिकता से कार्यवाही पूर्ण कराने के निर्देश दिए।बैठक में लोक सेवा गारंटी के प्रकरणों की समीक्षा करते हुए कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने अधिकारियों से कहा कि प्रकरण अधिक समय तक लंबित ना रहें। प्रकरण प्राप्त होते ही नियमानुसार कार्यवाही करते हुए प्रकरणों का समयावधि में निराकरण किया जाए। इसी प्रकार सीएम हेल्पलाईन शिकायतों की भी अनुभागवार और तहसीलवार समीक्षा करते हुए संतुष्टिपूर्ण निराकरण कराने के निर्देश दिए गए। साथ ही नगरीय निकायों में पेयजल की सुचारू आपूर्ति कराने और कहीं से भी पेयजल की समस्या की जानकारी मिलने पर शीघ्र निराकरण कराने के भी निर्देश दिए गए।कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल आपूर्ति की समीक्षा करते हुए पीएचई विभाग के कार्यपालन यंत्री और विकासखण्ड स्तरीय अधिकारियों से कहा कि आमजन को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराना हमारी प्राथमिकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल की समस्या होने पर प्राथमिकता से वैकल्पिक व्यवस्था की जाए। साथ ही पेयजल संबंधी समस्याओं का भी शीघ्रता से निराकरण कराएं। बसाहटों में पेयजल की समस्या होने पर आवश्यकतानुसार निजी बोर का अधिग्रहण किया जाए। उन्होंने खाद्य अधिकारियों को भी पीडीएस का वितरण शीघ्र सुनिश्चित कराने के लिए कहा। कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में अपर कलेक्टर श्री मनोज उपाध्याय तथा संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे। अनुभागों से एसडीएम, तहसीलदार और संबंधित विभागों के अधिकारी वीडियो कॉफ्रेंस के माध्यम से बैठक में उपस्थित रहे।

कलश यात्रा व श्रमदान कार्यक्रम आयोजित

विदिशा (निप्र)। मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद के जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत गंगा दशहरा के पावन अवसर पर ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति मोहम्मदगढ़ द्वारा ग्राम में कलश यात्रा एवं श्रमदान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत गांव के पेयजल स्रोत कुएं के पूजन एवं साफ-सफाई से हुई। इसके बाद महिलाओं एवं ग्रामीणों ने कलश यात्रा निकाली, जिसमें जल संरक्षण एवं जल स्रोतों के संवर्धन का संदेश दिया गया। कलश यात्रा के साथ स्थानीय तालाब में श्रमदान कर सफाई अभियान भी चलाया गया। कार्यक्रम में ग्रामीण नागरिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर जल संरक्षण के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाई। इस अवसर पर स्थानीय जनप्रतिनिधि, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिका, परिषद के सदस्यगण तथा ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति के सदस्य उपस्थित रहे। आयोजन का उद्देश्य जल स्रोतों के संरक्षण के प्रति ग्रामीणों में जागरूकता बढ़ाना रहा।

जल संरक्षण केवल वर्तमान की आवश्यकता नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के सुरक्षित भविष्य का आधार है : राजस्व मंत्री

राजस्व मंत्री ने ग्राम कांकड़खेड़ा में तालाब सुदृढ़ीकरण कार्य का किया शुभारंभ

जल गंगा संवर्धन अभियान सफलता में जनभागीदारी सबसे महत्वपूर्ण है : राजस्व मंत्री

सीहोर (निप्र)। जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत इछावर तहसील के ग्राम कांकड़खेड़ा में तालाब के सुदृढ़ीकरण कार्य का शुभारंभ कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में राजस्व मंत्री श्री करणसिंह वर्मा ने इस कार्य का शुभारंभ किया। इस अवसर पर राजस्व मंत्री श्री वर्मा ने कहा कि जल संरक्षण केवल वर्तमान की आवश्यकता नहीं, बल्कि

आने वाली पीढ़ियों के सुरक्षित भविष्य का आधार है। उन्होंने कहा कि गांवों में तालाब, कुएं और बावड़ियां जल का प्रमुख स्रोत होते हैं, जिनसे लोगों की दैनिक जरूरतें पूरी होती हैं तथा भूजल स्तर भी संतुलित बना रहता है। वर्तमान के कम होते जल स्तर के कारण इन जल स्रोतों का संरक्षण एवं पुनर्जीवन अत्यंत आवश्यक हो गया है। राजस्व मंत्री श्री वर्मा ने कहा कि जल की प्रत्येक बूंद अमूल्य है और इसके संरक्षण के लिए समाज के हर वर्ग को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी। उन्होंने कहा कि केवल सरकारी प्रयासों से जल संरक्षण का लक्ष्य पूरा नहीं किया जा सकता, इसके लिए जनभागीदारी सबसे महत्वपूर्ण है। यदि गांव-गांव में तालाबों की सफाई, गहरीकरण, वर्षा जल संचयन तथा जल संरचनाओं के संरक्षण के कार्य लगातार किए जाएं, तो भविष्य में पेयजल और सिंचाई की समस्या को रोका जा सकता है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में संचालित जल गंगा संवर्धन अभियान प्रदेशभर में जन आंदोलन का रूप ले चुका है। इस अभियान के माध्यम से नदियों, तालाबों, कुओं एवं अन्य जल स्रोतों के संरक्षण और संवर्धन के लिए व्यापक स्तर पर कार्य किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि जल संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने और प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रखने के लिए सामूहिक प्रयास जरूरी हैं, ताकि आने वाली पीढ़ियों को जल संकट जैसी गंभीर परिस्थितियों का सामना न करना पड़े। इस अवसर पर इछावर नगर परिषद अध्यक्ष श्री देवेंद्र वर्मा, श्री पंकज गुप्ता, श्री कैलाश सुराना, एसडीएम श्रीमती स्वाति मिश्रा, जल संसाधन विभाग के कार्यपालन यंत्री श्री मयंक सिंह सहित अन्य जनप्रतिनिधि, अधिकारी एवं ग्रामवासी उपस्थित थे।

सूख गए थे गांव के हैंडपंप, पानी के लिए भटके ग्रामीण, अब हर घर तक पहुंच रहा नलजल

कलेक्टर डॉ. सोनवणे के निर्देश के बाद चिरापाटला, गवासेन और झिरियाडोह में बहाल हुई पेयजल व्यवस्था

बैतूल (निप्र)। भीषण गर्मी के बीच बैतूल जिले के चिचोली तहसील के दूरस्थ ग्राम चिरापाटला, गवासेन और वन ग्राम झिरियाडोह में पेयजल संकट गहराने लगा था। हालात ऐसे थे कि ग्रामीणों को रोजमर्रा की जरूरतों के लिए भी पानी जुटाने में भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था। कहीं महिलाएं सुबह से बर्तन लेकर पानी की तलाश में निकल जाती थीं, तो कहीं ग्रामीणों को निजी साधनों से दूर जाकर पानी लाना पड़ रहा था। गांवों में पेयजल योजनाएं बंद पड़ी थीं, जबकि कुछ स्थानों पर बिजली समस्या के कारण पानी की सप्लाई प्रभावित हो रही थी। ग्रामीण लगातार प्रशासन से समस्या के समाधान की मांग कर रहे थे। इसके बाद कलेक्टर डॉ.सौरभ संजय सोनवणे ने स्वयं प्रभावित गांवों का दौरा कर हालात का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान ग्रामीणों ने उन्हें पेयजल संकट की जानकारी दी, जिस पर कलेक्टर ने पीएचई के अधिकारियों और ग्राम पंचायतों को तत्काल व्यवस्था सुधारने के निर्देश दिए थे। पीएचई के अधिकारियों ने गंभीरता से चिरापाटला, गवासेन और झिरियाडोह में ग्रामीणों को पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित की।

दिव्यांग परिवार की पानी के लिए रोज की जंग हुई खत्म, अब घर तक पहुंच रहा नल का पानी : भीषण गर्मी में जब पानी की एक-एक बूंद की कीमत बढ़ जाती है, तब चिचोली ब्लॉक के ग्राम

गवासेन में रहने वाले दिव्यांग ऋषि राज शिवनकर और उनका परिवार हर दिन पानी के लिए संघर्ष कर रहा था। परिवार में पत्नी और बच्चे भी दिव्यांग होने के कारण उनकी मुश्किलें और बढ़ गई थीं। घर में नल कनेक्शन नहीं था और गांव में बिजली की समस्या के चलते जल आपूर्ति भी बाधित रहती थी। ऋषि राज ने बताया कि मजबूरी में उन्हें रोजाना डेढ़ से दो किलोमीटर दूर स्कूटी से पानी लाना पड़ता था। तपती धूप में पानी भरने जाना उनके लिए किसी परीक्षा से कम नहीं था। कई बार पेट्रोल खर्च होने के बावजूद पर्याप्त पानी नहीं मिल पाता था। परिवार की जरूरतें पूरी करना दिन-ब-दिन कठिन होता जा रहा था। इसी दौरान कलेक्टर डॉ. सौरभ सोनवणे ग्राम गवासेन के भ्रमण पर पहुंचे। ग्रामीणों ने उनसे मिलकर पेयजल और बिजली की समस्या बताई। समस्या सुनते ही कलेक्टर ने ग्राम पंचायत और पीएचई विभाग के अधिकारियों को तत्काल निराकरण के निर्देश दिए। ग्राम पंचायत की त्वरित कार्रवाई के बाद उनके घर तक पाइपलाइन के माध्यम से पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित की गई।

कलेक्टर के एक निर्देश से चिरापाटला में बहने लगी नलजल धारा

चिरापाटला गांव में पिछले चार महीनों से पेयजल संकट ने ग्रामीणों की जिंदगी मुश्किल कर दी थी। सड़क निर्माण कर रही कंपनी द्वारा पाइपलाइन टूट जाने के बाद गांव के घरों तक पानी पहुंचना बंद हो गया था। महिलाएं और बुजुर्ग हैंडपंपों से पानी ढोने को मजबूर थे, जबकि कुछ परिवार दूर-दराज से टैंकरों में पानी भरकर ला रहे थे। पानी के साथ-साथ डीजल का खर्च भी ग्रामीणों पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ बन गया था। गांव की आशा इवने ने बताया कि सुबह होते ही सबसे बड़ी चिंता पानी की होती थी। कई बार घंटों लाइन में लगकर हैंडपंप से पानी भरना पड़ता था। नरसिंग राव ने कहा कि घर-परिवार का पूरा समय पानी की व्यवस्था में ही निकल जाता था। वहीं पुष्पेंद्र करोचे ने बताया कि टैंकर से पानी लाने में रोजाना डीजल खर्च हो रहा था, जिससे आर्थिक परेशानी भी बढ़ रही थी। ग्रामीणों की यह परेशानी उस समय दूर हुई, जब कलेक्टर डॉ. सौरभ सोनवणे गांव के निरीक्षण पर पहुंचे। ग्रामीणों ने उन्हें आवेदन देकर पेयजल संकट से अवगत कराया। समस्या की गंभीरता को देखते हुए कलेक्टर ने मौके पर ही पीएचई विभाग को तत्काल कार्रवाई के निर्देश दिए। पीएचई विभाग की तत्परता का असर यह हुआ कि महज चार दिनों के भीतर नई पाइपलाइन डालकर गांव में फिर से पेयजल आपूर्ति शुरू कर दी गई। अब गांव में नलों से पानी पहुंचने लगा है।

कलेक्टर डॉ सोनवणे ने विभिन्न विभागों की योजनाओं की समीक्षा

बैतूल (निप्र)। कलेक्टर डॉ. सौरभ संजय सोनवणे ने आज विभिन्न विभागों की योजनाओं एवं कार्यों की समीक्षा कर अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कृषि एवं उद्यानिकी विभाग की समीक्षा के दौरान प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उन्नयन योजना अंतर्गत निर्धारित लक्ष्य के विरुद्ध शत-प्रतिशत उपलब्धि सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उद्योग विभाग की समीक्षा करते हुए कलेक्टर डॉ सोनवणे ने समस्त स्वरोजगार मूलक योजनाओं में निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप सभी प्रकरणों को स्वीकृत एवं वितरित कराने के निर्देश दिए। खनिज विभाग की समीक्षा के दौरान अवैध उत्खनन एवं परिवहन पर संयुक्त रूप से प्रभावी कार्रवाई करने के निर्देश भी दिए गए। कलेक्टर डॉ. सोनवणे ने पीएम श्रम योगी मानधन योजना अंतर्गत सभी पात्र हितग्राहियों को लाभान्वित करने के निर्देश दिए। साथ ही पीएम राहत एवं पीएम राहवीर योजना का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करने तथा योजनाओं का व्यापक प्रचार-प्रसार करने के लिए कहा। बैठक में जल गंगा संवर्धन अभियान एवं जल संचय जनभागीदारी अभियान की जनपद एवं निकायवार समीक्षा भी की गई। कलेक्टर ने जल संरक्षण से संबंधित कार्यों को निर्धारित पोर्टल पर अनिवार्य रूप से दर्ज कराने के निर्देश दिए। राजस्व विभाग की समीक्षा के दौरान कलेक्टर ने लंबित राजस्व प्रकरणों की विस्तार से समीक्षा की तथा सभी प्रकरणों का समय-सीमा में निराकरण सुनिश्चित करने की सख्त हिदायत दी।

टविशा शर्मा की सास गिरिबाला सिंह सीबीआई की गिरफ्त में

छह घंटे से अधिक समय तक हुई पूछताछ

भोपाल (नप्र)। ट्विशा शर्मा केस में सीबीआई ने बड़ी कार्रवाई की है। छह घंटे से अधिक समय तक पूछताछ के बाद सीबीआई की टीम ने पूर्व जज गिरिबाला सिंह को सीबीआई की टीम ने गिरफ्तार कर लिया है। गिरफ्तारी के बाद उन्हें अस्पताल ले जाया गया है। वहां उनका मेडिकल करवाया जाएगा। इसके सीबीआई कोर्ट में उनकी पेशी होगी।

पूछताछ के बाद हुई गिरफ्तारी- दरअसल, एमपी हाईकोर्ट ने देर रात उनकी अग्रिम जमानत रद्द कर दी थी। इसके बाद सुबह साढ़े 10 बजे के करीब सीबीआई की टीम उनके घर में प्रवेश की थी। उसके बाद से लगातार उनसे पूछताछ चल रही थी। पूछताछ के दौरान गिरिबाला सिंह ने अपने खराब स्वास्थ्य का भी हवाला दिया था। इस दौरान गिरिबाला सिंह के वकीलों ने डॉक्टरों के पर्चे भी प्रस्तुत किए।

बड़ी संख्या में पुलिस बल की थी तैनाती- गिरिबाला सिंह पूछताछ के दौरान घर के बाहर बड़ी संख्या में पुलिस जवानों की तैनाती थी। उनसे तमाम सवाल सीबीआई ने पूछे हैं जो ट्विशा के केस से संबंधित हैं। सीबीआई के अधिकारियों के साथ-साथ घर में एसआईटी की टीम भी मौजूद है। इसके साथ ही सीबीआई की तकनीकी टीम भी घर में मौजूद है।

हाई इंटेंसिटी कैमरे से रिकॉर्डिंग की

आज जांच के दौरान सीबीआई ने गिरिबाला सिंह के घर में हाई इंटेंसिटी 3डी कैमरा लगाकर पूरे परिसर की 360 डिग्री रिकॉर्डिंग की। आसपास की लोकेशन भी स्कैन की गई, ताकि यह पता लगाया जा सके कि घटनास्थल किसी पड़ोसी मकान की छत या बालकनी से दिखाई देता है या नहीं।

समर्थ सिंह को भी लेकर पहुंची थी सीबीआई

दरअसल, गिरिबाला सिंह पूछताछ से पहले सीबीआई की टीम समर्थ सिंह को भी लेकर घर पहुंची थी। बताया जाता है कि गिरिबाला और समर्थ सिंह को आमने-सामने बैठाकर भी पूछताछ की गई थी। कोर्ट में पेशी के बाद गिरिबाला सिंह को सीबीआई रिमांड पर ले सकती है।

उठ रहे हैं कई सवाल

वहीं, ट्विशा शर्मा की मौत को लेकर कई सवाल हैं। इसमें सबसे अहम सवाल उसकी मौत की टाइमिंग को लेकर है। पुलिस की डायरी में मौत की टाइमिंग कुछ और है। वहीं, सीसीटीवी फुटेज में कुछ और टाइम दर्ज है। ऐसे में तमाम तकनीकी साक्ष्यों की जांच को इकट्ठा कर रही है। एसआईटी ने भी अभी तक की जांच रिपोर्ट सीबीआई को सौंप दी है। इसके बाद सीबीआई अपने तरीके से जांच कर रही है।

हाईकोर्ट ने रद्द की है अग्रिम जमानत

इससे पहले बुधवार को मध्य प्रदेश हाईकोर्ट ने गिरिबाला की अग्रिम जमानत रद्द कर दी थी। हाईकोर्ट ने देर रात 17 पन्नों का आदेश जारी किया। इसमें कहा- मामले की गंभीरता, सबूत और जांच की स्थिति को देखते हुए आरोपी पक्ष को राहत देना उचित नहीं था।

छिंदवाड़ा में 4 किशोर डूबे, 2 के शव बरामद

बर्थडे मनाने गए 2 दोस्त तालाब में समाए, वॉटरफॉल में रील बनाते 2 किशोर भी डूबे

छिंदवाड़ा (नप्र)। छिंदवाड़ा जिले में बुधवार को दो अलग-अलग थाना क्षेत्रों में हुए जल हादसों में चार किशोर पानी में डूब गए। दोनों घटनाओं में अब तक एक-एक किशोर का शव बरामद कर लिया गया है। लापता दो अन्य किशोरों की तलाश के लिए पुलिस और प्रशासन की टीम लगातार सर्च ऑपरेशन चला रही है।

पहली घटना चौरई थाना क्षेत्र के बेलखेड़ा स्थित घोघरा वॉटरफॉल की है, जहां घूमने गए दो किशोर गहरे पानी में डूब गए। पुलिस के अनुसार, डूबने वालों की पहचान छिंदवाड़ा निवासी 14 वर्षीय गौरव डेहरिया और 17 वर्षीय विनायक गुप्ता के रूप में हुई है। ये दोनों किशोर अपनी बहनों के साथ वॉटरफॉल घूमने पहुंचे थे। मिली जानकारी के मुताबिक, दोनों पानी के पास रील बना रहे थे, तभी अचानक गहराई में चले गए। घटना के बाद मौके पर मौजूद लोगों ने तत्काल पुलिस को सूचना दी। इसके बाद चौरई पुलिस, प्रशासन और स्थानीय गोताखोरों की टीम ने रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया, जिसमें से एक का शव निकाल लिया गया है और दूसरे की तलाश जारी है।

खदान के तालाब में नहाते समय डूबे दो किशोर- दूसरी घटना जुन्नारदेव थाना क्षेत्र की डूंगरिया पुलिस चौकी अंतर्गत ग्राम कोठीदेव 11/12 नंबर ओपनकास्ट खदान के पास स्थित तालाब में हुई। यहां 7-8 युवकों का एक समूह जन्मदिन पार्टी मनाने पहुंचा था, जिनमें से कुछ तालाब में नहाने उतरे। नहाने के दौरान करीब 16 और 17 वर्ष के दो किशोर गहरे पानी में चले गए और डूब गए।

घटना की सूचना मिलते ही जुन्नारदेव थाना प्रभारी जे. मसराम, उप थाना प्रभारी मुकेश डोंगरे और चौकी प्रभारी अंजना मरावी पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे। पानी की अधिक गहराई और रात के अंधेरे के कारण बुधवार शाम को रेस्क्यू ऑपरेशन रोकना पड़ा था। गुरुवार सुबह दोबारा सर्च अभियान शुरू कर एक किशोर का शव बरामद कर लिया गया है, जबकि दूसरे की तलाश की जा रही है। हादसे के बाद दोनों घटनाओं के पीड़ित परिवारों में गहरा शोक है।

सिवनी-छिंदवाड़ा-सावनेर फोरलेन बनेगा मध्य भारत का नया कॉरिडोर

एमपी और महाराष्ट्र बीच बढ़ेगी हाई स्पीड कनेक्टिविटी

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के बीच संपर्क पहले की तुलना में आधुनिक और सुरक्षित होगी। इस दिशा में सिवनी-छिंदवाड़ा-सावनेर फोरलेन परियोजना महत्वपूर्ण साबित होगी। एनएचआई की तरफ से एनएच-547 और एनएच-347 के अंतर्गत प्रास्तावित परियोजना के लिए डीपीआर का कार्य प्रगति पर है।

158 किमी लंबा है यह कॉरिडोर- करीब 158 किलोमीटर लंबे इस प्रस्तावित कॉरिडोर का उद्देश्य महाराष्ट्र के सावनेर-नागपुर औद्योगिक क्षेत्र को मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा एवं सिवनी के माध्यम से मध्य और उत्तर-पूर्वी मध्य प्रदेश से बेहतर ढंग से जोड़ना है। वर्तमान में यह मार्ग महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के बीच यातायात, औद्योगिक परिवहन, कृषि व्यापार एवं पर्यटन गतिविधियों के लिए प्रमुख संपर्क माध्यम के रूप में उपयोग किया जाता है। अब इसे फोर लेन में परिवर्तित किया जा रहा है।

दोनों राज्यों के औद्योगिक ग्रोथ को मिलेगी नई दिशा- वहीं, सिवनी-छिंदवाड़ा-सावनेर कॉरिडोर केवल एक सड़क परियोजना नहीं, बल्कि महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के बीच आर्थिक, औद्योगिक एवं व्यापारिक संपर्क को मजबूत करने वाला महत्वपूर्ण मार्ग माना जा रहा है। यह कॉरिडोर नागपुर एवं सावनेर जैसे महाराष्ट्र के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रों को छिंदवाड़ा, सिवनी, नरसिंहपुर एवं मध्य भारत के अन्य हिस्सों से जोड़ता है। फोरलेन निर्माण के बाद महाराष्ट्र से मध्य प्रदेश की ओर माल परिवहन अधिक तेज और सुगम हो सकेगा।

पर्यटन एवं इको-टूरिज्म को मिलेगा लाभ

यह कॉरिडोर मध्य प्रदेश के कई महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों तक पहुंच का प्रमुख मार्ग है। पेंच नेशनल पार्क, तामिया, पचमढ़ी, देवगढ़ किला, जाम सांवली हनुमान मंदिर एवं छिंदवाड़ा-सिवनी के प्राकृतिक वन क्षेत्र पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं। मार्ग के निर्माण से पर्यटक इन स्थलों तक जल्दी पहुंच सकेंगे।

छिंदवाड़ा-नागपुर कनेक्टिविटी को मिलेगा बढ़ावा

प्रस्तावित फोरलेन परियोजना छिंदवाड़ा और नागपुर के बीच संपर्क को नई गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। वर्तमान में दोनों शहरों के बीच यात्रा के दौरान भारी वाहनों का दबाव,सीमित सड़क क्षमता एवं कई स्थानों पर धीमी यातायात गति यात्रियों और व्यापारिक परिवहन के लिए चुनौती बनी रहती है। फोरलेन निर्माण के बाद नागपुर से छिंदवाड़ा की यात्रा अधिक तेज और सुगम हो सकेगी।

सुप्रीम कोर्ट ने फिर लगाई मप्र सरकार को फटकार

कहा- बिना नंबर वाहनों से धड़ल्ले से हो रहा रेत परिवहन; 6 महीने में सीसीटीवी लगाने के निर्देश

भोपाल/मुरैना (नप्र)। राष्ट्रीय चंबल घड़ियाल अभयारण्य में अवैध रेत खनन और बिना रजिस्ट्रेशन वाले वाहनों के संचालन पर सुप्रीम कोर्ट ने मध्यप्रदेश सरकार समेत राजस्थान और उत्तरप्रदेश सरकार को कड़ी फटकार लगाई है। कोर्ट ने कहा कि अवैध खनन रोकने के लिए राज्यों की कार्रवाई अभी भी नाकाफी है और बिना नंबर प्लेट वाले वाहन खुलेआम रेत परिवहन कर रहे हैं। कोर्ट ने 6 महीने के भीतर निगरानी तंत्र विकसित करने, सीसीटीवी कैमरे लगाने और अवैध खनन में इस्तेमाल होने वाले वाहनों की जब्ती के निर्देश दिए हैं।

जस्टिस विक्रम नाथ और जस्टिस संदीप मेहता की बेंच ने 20 मई की सुनवाई के बाद 26 मई को विस्तृत आदेश जारी किया। कोर्ट ने कहा कि अवैध खनन केवल कानून उल्लंघन का मामला नहीं, बल्कि पर्यावरणीय विनाश, वन्यजीवों के आवास खत्म होने और संगठित अपराध का विषय बन चुका है।

सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई के दौरान टिप्पणी की कि कई महत्वपूर्ण फैसले और कार्रवाई तब शुरू हुईं, जब वरिष्ठ अधिकारियों की व्यक्तिगत पेशी तय की गई। कोर्ट ने कहा कि अवैध खनन जैसे गंभीर मामलों में प्रशासनिक तंत्र की यह सुस्ती चिंताजनक है।

कोर्ट ने organized illegal mining network" शब्द इस्तेमाल किया, यानी इसे सिर्फ छोटे स्तर का अवैध खनन नहीं माना गया। जो पर्यावरण, वन्यजीव और कानून व्यवस्था तीनों के लिए खतरा बन चुका है। कोर्ट ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण केवल कोर्ट के दबाव में होने वाली औपचारिक कार्रवाई नहीं हो सकती, यह राज्यों की संवैधानिक जिम्मेदारी है।

सुप्रीम कोर्ट ने मामले में मध्यप्रदेश सरकार से 29 मई तक जवाब मांगा है, जबकि विस्तृत अनुपालन और प्रगति रिपोर्ट पर अगली सुनवाई 22 जुलाई 2026 को होगी।

मीडिया रिपोर्ट पर लिया संज्ञान, एमपी सरकार से मांगा जवाब- सुनवाई के दौरान एमिकस क्यूरी निखिल गोयल ने कोर्ट के सामने एक मीडिया रिपोर्ट रखी। इसमें बताया गया था कि कोर्ट के पुराने आदेशों के बावजूद मुरैना जिले सहित चंबल किनारे के इलाकों में अवैध खनन और रेत परिवहन जारी है। रिपोर्ट में बिना नंबर और बिना रजिस्ट्रेशन वाले वाहनों के इस्तेमाल का भी जिक्र था।

कोर्ट बोला- सिर्फ जुर्माना लेकर वाहन छोड़ना पर्याप्त नहीं- सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि मध्यप्रदेश में इस साल के शुरुआती 5 महीनों में 250 से ज्यादा वाहन बिना वैध रजिस्ट्रेशन के पकड़े गए, लेकिन केवल 5 हजार रुपए तक का जुर्माना लेकर उन्हें छोड़ दिया गया। कोर्ट ने कहा कि इससे अवैध खनन नेटवर्क पर कोई असर नहीं पड़ता और अपराधी इसे ऑपरेशन कॉस्ट की तरह लेते हैं।

कोर्ट ने साफ कहा कि ऐसे वाहनों को तुरंत जब्त किया जाए और वाहन मालिक, फाइनेंसर, ऑपरेटर और पूरे नेटवर्क के खिलाफ आपराधिक कार्रवाई हो। कोर्ट ने राज्यों को डिजिटल रिकॉर्ड तैयार करने और बार-बार पकड़े जाने वाले वाहनों की निगरानी के भी निर्देश दिए हैं।

वन विभाग में खाली पदों पर भी नाराजगी- सुप्रीम कोर्ट ने वन विभाग में बड़ी संख्या में खाली पड़े पदों पर भी चिंता जताई। कोर्ट ने कहा कि फॉरेस्ट गार्ड और मैदानी अमले की कमी के कारण निगरानी और कार्रवाई कमजोर पड़ रही है। कोर्ट ने तीनों राज्यों को एक साल के भीतर भर्ती प्रक्रिया पूरी करने और फील्ड अमले को मजबूत करने के निर्देश दिए हैं।

स्थानीय युवाओं को रोजगार देने पर जोर- कोर्ट ने राज्यों से कहा कि अवैध खनन में स्थानीय युवाओं की भागीदारी कम करने के लिए उन्हें वैकल्पिक रोजगार और कौशल विकास योजनाओं से जोड़ा जाए। कोर्ट ने इको-टूरिज्म, संरक्षण और पर्यावरणीय गतिविधियों में स्थानीय समुदाय की भागीदारी बढ़ाने पर भी जोर दिया।

हर दो महीने में देनी होगी रिपोर्ट

सुप्रीम कोर्ट ने मध्यप्रदेश, राजस्थान और उत्तरप्रदेश के मुख्य सचिवों को निर्देश दिए हैं कि वे हर दो महीने में समीक्षा बैठक करें और कोर्ट में प्रगति रिपोर्ट पेश करें। साथ ही जल शक्ति मंत्रालय और केंद्रीय जल आयोग को भी पक्षकार बनाते हुए चंबल नदी के पर्यावरणीय प्रवाह बनाए रखने पर जवाब मांगा गया है।

एनएच -44 पुल पर मंडराया खतरा

कोर्ट ने मुरैना-धौलपुर बॉर्डर स्थित नेशनल हाईवे-44 के पुल के आसपास हो रहे अवैध उत्खनन पर भी गंभीर चिंता जताई। कोर्ट ने कहा कि पुल के पास और कुछ जगहों पर उसके पिलरों के नीचे तक खुदाई की जा रही है, जिससे पुल की संरचनात्मक सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है। एनएचएआई को निर्देश दिए गए हैं कि पुल के आसपास 1 किलोमीटर अपस्ट्रीम और 500 मीटर डाउनस्ट्रीम तक हाई-रेजोल्यूशन सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएं। इन कैमरों की लाइव फीड पुलिस और वन विभाग को भी उपलब्ध कराई जाएगी।

चंबल नदी में कचरा फेंकने पर भी सख्ती

कोर्ट ने पाया कि एनएच-44 पुल से बड़ी मात्रा में कचरा चंबल नदी में फेंका जा रहा है, जिससे घड़ियाल, मगरमच्छ और अन्य जलीय जीव प्रभावित हो रहे हैं। कोर्ट ने पुल पर सुरक्षात्मक जाली लगाने, सभी गैप बंद करने और नदी में कचरा फेंकने वालों पर सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए हैं।

भोपाल ब्लू लाइन मेट्रो- भदभदा से भेल के बीच रफ्तार पर ब्रेक

दिसंबर 2028 की डेडलाइन से पहले खड़ी हुई ये बड़ी मुश्किलें

भोपाल (नप्र)। शहर को आधुनिक यातायात व्यवस्था से जोड़ने के लिए तैयार की जा रही मेट्रो की 'ब्लू लाइन' (भदभदा से रत्नागिरी-भेल) का काम तेजी से आगे तो बढ़ रहा है, लेकिन जमीनी स्तर पर कई ऐसी अड़चनें सामने आने लगी हैं जो इसकी रफ्तार को धीमा कर सकती हैं। अधिकारियों ने पहले इस लाइन को ऑरेंज लाइन (एम्स से करोंद) से पहले पूरा करने के संकेत दिए थे, मगर अब इसके दिसंबर 2028 के टारगेट टाइमलाइन पर संशय के बादल मंडराने लगे हैं।

जमीन के नीचे छिपी चुनौतियां- मेट्रो रूट पर अंडरग्राउंड पाइपलाइनों और अन्य यूटिलिटी नेटवर्क को शिफ्ट करने में काफी वक्त लग रहा है। इसके चलते कई इलाकों में ब्रॉडबैंड और इंटरनेट सेवाएं भी प्रभावित हुई हैं। भदभदा और जवाहर चौक जैसे व्यस्त इलाकों में संकरी सड़कों के कारण ट्रैफिक को डायवर्ट करना पड़ा है, जिससे रोजाना लंबा जाम लग रहा है। स्थानीय निवासियों का कहना है कि आने वाले मानसून सीजन में ये मुश्किलें और ज्यादा बढ़ सकती हैं। निर्माण स्थलों के पास उड़ती धूल और ध्वनि प्रदूषण ने सुरक्षा और स्वास्थ्य संबंधी चिंताएं भी बढ़ा दी हैं। मेट्रो परियोजना का मकसद सिर्फ तेज सफर कराना नहीं है, बल्कि शहरी गतिशीलता को बदलना और ट्रैफिक के दबाव को स्थायी रूप से कम करना है। जहां भी एलिवेटेड कॉरिडोर बन रहे हैं, वहां सड़कों को दो से तीन मीटर तक चौड़ा किया जा रहा है ताकि भविष्य में ट्रैफिक सुगम हो सके।

क्या ऑरेंज लाइन से सबक लेगा प्रबंधन?- सड़क किनारे काम कर रहे न्यू मार्केट के व्यापारियों को डर है कि अगर काम में लंबा खिंचाव हुआ तो व्यापार पर बुरा असर पड़ेगा। तुलनात्मक रूप से देखें तो ऑरेंज लाइन के प्रायोरिटी कॉरिडोर को ही बनने में 5 साल से अधिक का समय लग गया और पूरी लाइन अब भी अधूरी है। ऐसे में ब्लू लाइन के टुकड़ों-टुकड़ों में हो रहे निर्माण से डेडलाइन टूटने का जोखिम बढ़ गया है।

बकरीद पर ताज-उल-मसाजिद समेत शहरभर की मस्जिदों में नमाज, लोगों ने गले मिलकर दी मुबारकबाद

बकरीद पर कुर्बानी का वीडियो शेयर न करने की अपील

फोटो- प्रवीण वाजपेयी

भोपाल (नप्र)। राजधानी भोपाल में आज ईद-उल-अजहा (बकरीद) अकीदत, अमन और भाईचारे के माहौल में मनाई गई। सुबह से ही शहर की ईदगाहों और मस्जिदों में बड़ी संख्या में मुस्लिम समुदाय के लोग नमाज अदा करने पहुंचे थे। नमाज के बाद लोगों ने एक-दूसरे को गले लगाकर ईद की मुबारकबाद दी और देश में अमन-चैन की दुआ मांगी।

ताज-उल-मसाजिद में ईद-उल-अजहा के मौके पर अकीदतमंदों ने नमाज अदा कर देश में अमन, भाईचारे और इंसाफ कायम रहने की दुआ मांगी। नमाज के बाद इमाम द्वारा की गई खास दुआ में समाज और देश से जुड़े कई अहम मुद्दों को उठाया गया।

इमाम बोले- एकता से ही देश की तरक्की संभव- दुआ में अल्लाह से समाज में फैली बुराइयों को दूर करने और मुल्क में इंसाफ का मजबूत निजाम कायम करने की गुजारिश की गई। देश में अमन-ओ-अमान, आपसी भाईचारा और हर तरह के फितनों से हिफाजत की दुआ मांगी गई।इमाम ने कहा कि देश की तरक्की तभी संभव है, जब समाज में एकता, प्रेम और न्याय का वातावरण बना रहे। प्रदेश की खुशहाली, विकास और स्थिरता के लिए भी विशेष प्रार्थना

निर्धारित स्थानों पर ही कुर्बानी, सोशल मीडिया पर वीडियो शेयर न करने की अपील

बकरीद के मौके पर मध्यप्रदेश वक्फ बोर्ड ने कुर्बानी को लेकर विस्तृत दिशा-निर्देश जारी किए हैं। जारी निर्देशों के मुताबिक, कुर्बानी केवल निर्धारित और चिन्हित स्थानों पर ही की जाए। ऐसे स्थानों को चारों तरफ से दीवार या टीन शेड से ढंकने और आवश्यक व्यवस्थाएं करने के निर्देश दिए गए हैं, ताकि स्वच्छता और व्यवस्था बनी रहे। साथ ही कुर्बानी के फोटो या वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल करने से बचने की अपील भी की गई है।

मैक्सिको के 'पिको डी ओरिजाबा' पर तिरंगा फहराने निकलेंगी ज्योति

उत्तरी अमेरिका के सबसे ऊंचे ज्वालामुखी पर चढ़ाई का लक्ष्य, ऊंचाई- 5636 मीटर

भोपाल(नप्र)। भारतीय पर्वतारोहण जगत के लिए गर्व का एक और मौका आने वाला है। देश की जानी-मानी पर्वतारोही ज्योति रात्रे अब अपने अगले बड़े अंतरराष्ट्रीय अभियान पर निकलने जा रही हैं। उनका लक्ष्य मैक्सिको स्थित पिको डी ओरिजाबा शिखर है, जो 5,636 मीटर (18,491 फीट) की ऊंचाई के साथ उत्तरी अमेरिका का सबसे ऊंचा ज्वालामुखी माना जाता है। ज्योति भोपाल की रहने वाली है।

बर्फ से ढके इस विशाल ज्वालामुखी पर चढ़ाई को दुनिया के सबसे कठिन अभियानों में गिना जाता है। अत्यधिक ऊंचाई, जमा देने वाली ठंड, तेज हवाएं और खड़ी बर्फीली ढलानें इस मिशन को बेहद चुनौतीपूर्ण बनाती हैं। ऐसे में यह अभियान ज्योति रात्रे की शारीरिक क्षमता के साथ-साथ मानसिक दृढ़ता की भी कड़ी परीक्षा लेगा। सबसे खास बात यह है कि अब तक भारत की किसी महिला पर्वतारोही ने इस शिखर

पर तिरंगा नहीं फहराया है। यदि ज्योति रात्रे इस मिशन में सफल होती हैं, तो यह भारतीय महिला पर्वतारोहण इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ने वाला क्षण होगा।ज्योति कहती हैं, महिलाएं समझे कि सीमाएं वही होती हैं, जिन्हें वह खुद तय करें। ज्योति रात्रे इस अभियान को केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं मानतीं, बल्कि इसे महिला सशक्तिकरण के संदेश से जोड़ती हैं। उनका कहना है कि यह मिशन खास तौर पर ग्रामीण भारत की महिलाओं को साहस, आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता के लिए प्रेरित करने का प्रयास है। प्रस्थान से पहले ज्योति रात्रे ने कहा, पर्वतारोहण हमें सिखाता है कि मजबूत इरादों के सामने कोई भी शिखर असंभव नहीं होता। मैं चाहती हूं कि देश की हर महिला यह समझे कि सीमाएं वही होती हैं, जिन्हें हम खुद तय करते हैं।

55 वर्षीय ज्योति रात्रे इससे पहले दुनिया की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट सहित कई अंतरराष्ट्रीय शिखरों पर सफलता हासिल कर चुकी हैं। उनका यह नया अभियान न केवल देश के लिए गौरव का विषय बन सकता है, बल्कि महिलाओं के लिए प्रेरणा का सशक्त प्रतीक भी साबित होगा।

किसी भारतीय महिला ने नहीं फहराया तिरंगा

बर्फ से ढके इस विशाल स्ट्रेटोवोल्केनो पर चढ़ाई को दुनिया के चुनौतीपूर्ण अभियानों में गिना जाता है। अत्यधिक ऊंचाई, जमा देने वाली ठंड, तेज हवाएं और खड़ी बर्फीली ढलानें इस अभियान को और कठिन बनाती हैं। ऐसे में यह यात्रा ज्योति रात्रे की शारीरिक क्षमता के साथ-साथ मानसिक दृढ़ता की भी कड़ी परीक्षा लेगी। सबसे खास बात यह है कि अब तक भारत की किसी महिला पर्वतारोही ने इस शिखर पर तिरंगा नहीं फहराया है। यदि ज्योति इस मिशन में सफल होती हैं, तो यह भारतीय महिला पर्वतारोहण इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ने वाला क्षण होगा।